

INDIA SCIENCE WIRE IN INDIAN MeDIA

JANUARY 2023 / Vol.7 / No.1



Highlights of India Science Wire (ISW) Stories



India Science Wire - highlighting Indian science in Indian media

The coverage of science and technology particularly relating to research done in Indian research institutions, is generally very poor in Indian media. There are several reasons for this situation, one of them being the lack of credible and relevant science content. In order to bridge this gap, Vigyan Prasar launched a unique initiative - India Science Wire (ISW) – in January 2017.

The news service is dedicated to developments in Indian research laboratories, universities and academic institutions. Almost all news stories released by this service are based on research papers by Indian scientists published in leading Indian and foreign journals. All news stories and features are written and edited by a team of professional science journalists with decades of experience in science journalism.

News stories based on happenings in Indian research labs are released to media houses on a daily basis. These stories are also uploaded on ISW website and are simultaneously promoted through social media – Twitter and Facebook. At present, the service is available in English and Hindi.

Reach out ISW Editor with story ideas, comments and suggestions at indiasciencewire@gmail.com

ISW website: <http://vigyanprasar.gov.in/isw/isw.htm>



ISW stories released and published in January 2023

S. No.	Story title	Date of release	Name of the writer
1.	108वीं भारतीय वज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन करेंगे प्रधानमंत्री	02-01-2023	ISCA
2.	'We have to make India the most advanced laboratory of modern science'	03-01-2023	Sumita Mukherjee
3.	जी20 की वैश्विक संकल्पना के अनुरूप होगा 8वाँ आईआईएसएफ	05-01-2023	Umashankar Mishra
4.	'IISF to foster theme of G20 – One Earth, One Family, One Future'	05-01-2023	Sumita Mukherjee
5.	'मेगा एक्सपो' में दिखेगी भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों की झाँकी	07-01-2023	Umashankar Mishra
6.	IISF 2022: Mentoring and Counselling sessions to help youngsters choose career in science	07-01-2023	Sumita Mukherjee
7.	भारत के अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव में 59 देशों से मती प्र वष्टियां	10-01-2023	Umashankar Mishra
8.	'Mega Science and Technology exhibition' to showcase India's scientific strengths	10-01-2023	Biju Dharamapalan
9.	Science through games and toys	11-01-2023	Manoj Vergese
10.	वशेषज्ञ देंगे वज्ञानप्रौद्यो गकी में करियर और - परामर्श-उद्य मता संबंधी सलाह	12-01-2023	Niranjan Kumar
11.	IISF 2022: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem	12-01-2023	Sumita Mukherjee
12.	Students' innovation festival to buoy up novel ideas in science and technology	16-01-2023	Manoj Vergese
13.	वज्ञान महोत्सव में गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड पर होगी नज़र	16-01-2023	Umashankar Mishra
14.	Budding researchers take centre stage at young scientist conference	17-01-2023	Kirty Sharma
15.	आईआईएसएफ-2022 के मुख्य आकर्षणों में अत्याधुनिक प्रौद्यो गकी-प्रदर्शनी	17-01-2023	Umashankar Mishra

S. No.	Story title	Date of release	Name of the writer
16.	देश और लोगों को सशक्त बनाता है वैज्ञानिक चेतना से लैस सनेमा	21-01-2023	Umashankar Mishra
17.	भोपाल में आठवें भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव का भव्य शुभारंभ	21-01-2023	Umashankar Mishra
18.	Science-rich cinema empowers the nation and people	22-01-2023	Umashankar Mishra
19.	भोपाल में स्कूली छात्रों ने रचा इतिहास, एग्रीबॉट बनाकर तोड़ा वश्व रिकॉर्ड	23-01-2023	Hitesh Kushwaha
20.	भारत के आठवें अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म पुरस्कार घोषित	23-01-2023	Umashankar Mishra
21.	“वर्ष 2025 तक 150 बि लयन डॉलर तक पहुँच सकती है भारत की बायोइकनॉमी” - सुधांशु व्रती	23-01-2023	Umashankar Mishra
22.	Government's particular focus on strengthening S&T ecosystems: Agriculture Minister	23-01-2023	Umashankar Mishra
23.	“अभी हम परिपक्व हुए हैं, बाकी है हमारी उड़ान”	24-01-2023	Supriya Pandey
24.	भारत का गगनयान मशन 2024 में इसरो प्रमुख :	24-01-2023	Hitesh kushwaha, Rahul Chaukase
25.	कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन की नई पद्धति	27-01-2023	Umashankar Mishra
26.	देसी नस्ल की गायों के ड्राफ्ट जीनोम का खुलासा	30-01-2023	Umashankar Mishra
27.	दो वर्षों में भारत ने वक सत कए चार स्वदेशी को वड-19 टीके	31-01-2023	Umashankar Mishra
28.	Biopolymer-based scaffold to treat limbal deficiency	31-01-2023	Vibha Saklani

108वीं भारतीय वज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन करेंगे प्रधानमंत्री

January 3, 2023 by Dialogue India

108वीं भारतीय वज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन करेंगे प्रधानमंत्री

नई दिल्ली, 02 जनवरी : (इंडिया साइंस वायर) 108वें भारतीय वज्ञान कांग्रेस का आयोजन 3 जनवरी से राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्व विद्यालय (आरटीएमएनयू), महाराष्ट्र में किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीन जनवरी, 2023 को इस पांच दिवसीय आयोजन का उद्घाटन वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से करेंगे और कार्यक्रम को संबोधित करेंगे। वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के [वक्तव्य](#) में यह जानकारी दी गई है।

इस वर्ष भारतीय वज्ञान कांग्रेस की मुख्य वषयवस्तु "महिला सशक्तिकरण के साथ सतत विकास के लिए वज्ञान और प्रौद्योगिकी" है। कार्यक्रम की मेजबानी आरटीएमएनयू अपने अमरावती रोड परिसर में कर रहा है। वज्ञान कांग्रेस के तकनीकी सत्र को 14 वर्गों में बांटा गया है। इन समानान्तर चलने वाले 14 वर्गों के अलावा, महिला वज्ञान कांग्रेस, किसान वज्ञान कांग्रेस, बाल वज्ञान कांग्रेस, जनजातीय समागम, वज्ञान व समाज तथा वज्ञान संचारकों की कांग्रेस के एकएक सत्र का भी आयोजन किया जायेगा।-

भारतीय वज्ञान कांग्रेस के पूर्ण सत्रों में नोबल पुरस्कार विजेताओं, भारत व विदेशी अनुसंधानकर्ताओं, विशेषज्ञों और विभिन्न क्षेत्रों के टेक्नोक्रेटों पर सामग्री शामिल की गई है, जिसमें अंतरिक्ष, रक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी और चिकित्सा अनुसंधानों को रखा गया है।

इस कार्यक्रम के तकनीकी सत्रों में कृषि, वन वज्ञान-, पशु, पशु चिकित्सा और मत्स्य वज्ञान, मानव व व्यवहार वज्ञान, रासायनिक वज्ञान, पृथ्वी प्रणाली वज्ञान, अभियांत्रिकी वज्ञान, पर्यावरण वज्ञान, सूचना व संचार वज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, पदार्थ वज्ञान, गणतीय वज्ञान,

च कत्सा वज्ञान, नवीन प्राणी वज्ञान, भौतिक वज्ञान तथा पादप वज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व व प्रयुक्त अनुसंधानों के बारे में दर्शाया जाएगा।

वज्ञान कांग्रेस का प्रमुख आकर्षण मेगा एक्सपो “प्राइड ऑफ इंडिया” (भारत का गौरव है। इस (प्रदर्शनी में भारतीय वज्ञान व प्रौद्योगिकी के समाज के लए योगदान एवं इसकी प्रमुख उपलब्धियों को दिखाया जायेगा, जिनकी बदौलत पूरे वैज्ञानिक संसार के लये सैकड़ों नये वचारों, नवोन्मेषों और उत्पादों को आकार मला। प्रदर्शनी में सरकार, कॉरपोरेट, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमाँ, अकादिक एवं अनुसंधान व वकास संस्थानों, पूरे देश के नवोन्मेषी और उद्य मयों की उपलब्धियों तथा उनकी क्षमताओं को पेश कया जायेगा।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर सोमवार को भारतीय वज्ञान कांग्रेस का पारंपरिक ‘वज्ञान ज्योति’ कार्यक्रम आयोजित कया गया। इसमें 400 से अ धक स्कूली और कॉलेज छात्र ज़ीरो माइलस्टोन पर एकत्र हुए। वहाँ से वे रैली के रूप में वश्व वद्यालय परिसर पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपने जीवन में वैज्ञानिक सोच को अपनाने की शपथ ली। भारतीय वज्ञान कांग्रेस संघ की अध्यक्ष डॉ (इस्का) वजय लक्ष्मी सक्सेना ने छात्रों से आग्रह कया क वे वज्ञान को केवल पाठ्य सामग्री के रूप में न पढ़ें, बल्कि जीवन में वे जो भी करें, वज्ञान को उसमें शा मल करें।

‘वज्ञान ज्योति’ की अवधारणा ओलम्पिक ज्योति के अनुरूप है। यह एक आंदोलन का स्वरूप है, जो समाज और वशेष रूप से युवाओं में वैज्ञानिक मान सकता तैयार करने के लये सम र्पत है। यह ज्योति वश्व वद्यालय परिसर में स्था पत की गई है और 108वीं भारतीय वज्ञान कांग्रेस के समापन तक यह प्रज्ज्व लत रहेगी।

उद्घाटन सत्र में महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत संह कोशयारी, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, केंद्रीय वज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी वज्ञान राज्यमंत्री डॉ जितेन्द्र संह (स्वतंत्र प्रभार), महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शंदे तथा उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस शा मल होंगे। आरटीएमएनयू के - कुलपति डॉ सुभाष आर, चौधरी और भारतीय वज्ञान कांग्रेस संघ (इस्का), कोलकाता की अध्यक्ष डॉ वजय लक्ष्मी सक्सेना की वशेष उपस्थिति रहेगी। (इंडिया साइंस वायर)

News जनवरी 03, 2023 नई दिल्ली। 108वीं भारतीय वज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन करेंगे प्रधानमंत्री।

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली। (इंडिया साइंस वायर: (108वें भारतीय वज्ञान कांग्रेस का आयोजन 3 जनवरी से राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्व विद्यालय (आरटीएमएनयू), महाराष्ट्र में किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तीन जनवरी, 2023 को इस पांच दिवसीय आयोजन का उद्घाटन वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से करेंगे और कार्यक्रम को संबोधित करेंगे। वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वक्तव्य में यह जानकारी दी गई है।

इस वर्ष भारतीय वज्ञान कांग्रेस की मुख्य वषयवस्तु महिला सशक्तिकरण के "साथ सतत विकास के लिए वज्ञान और प्रौद्योगिकी है। कार्यक्रम की मेजबानी आरटीएमएनयू अपने " अमरावती रोड परिसर में कर रहा है। वज्ञान कांग्रेस के तकनीकी सत्र को 14 वर्गों में बांटा गया है। इन समानान्तर चलने वाले 14 वर्गों के अलावा, महिला वज्ञान कांग्रेस, किसान वज्ञान कांग्रेस, बाल वज्ञान कांग्रेस, जनजातीय समागम, वज्ञान व समाज तथा वज्ञान संचारकों की कांग्रेस के एकएक सत्र का भी आयोजन किया जायेगा।-

भारतीय वज्ञान कांग्रेस के पूर्ण सत्रों में नोबल पुरस्कार विजेताओं, भारत व विदेशी अनुसंधानकर्ताओं, विशेषज्ञों और विभिन्न क्षेत्रों के टेक्नोक्रेटों पर सामग्री शामिल की गई है, जिसमें अंतरिक्ष, रक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी और चिकित्सा अनुसंधानों को रखा गया है।



इस कार्यक्रम के तकनीकी सत्रों में कृषि, वन विज्ञान, पशु, पशु चिकित्सा और मत्स्य विज्ञान, मानव व व्यवहार विज्ञान, रासायनिक विज्ञान, पृथ्वी प्रणाली विज्ञान, अभियांत्रिकी विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, सूचना व संचार विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी, पदार्थ विज्ञान, गणतीय विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, नवीन प्राणी विज्ञान, भौतिक विज्ञान तथा पादप विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व व प्रयुक्त अनुसंधानों के बारे में दर्शाया जाएगा।

विज्ञान कांग्रेस का प्रमुख आकर्षण मेगा एक्सपो "प्राइड ऑफ इंडिया" (भारत का गौरव है)। इस (प्रदर्शनी में भारतीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी के समाज के लिए योगदान एवं इसकी प्रमुख उपलब्धियों को दिखाया जायेगा, जिनकी बदौलत पूरे वैज्ञानिक संसार के लिये सैकड़ों नये विचारों, नवोन्मेषों और उत्पादों को आकार मिला। प्रदर्शनी में सरकार, कॉर्पोरेट, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, अकादमिक एवं अनुसंधान व विकास संस्थानों, पूरे देश के नवोन्मेषी और उद्यमियों की उपलब्धियों तथा उनकी क्षमताओं को पेश किया जायेगा।

कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर सोमवार को भारतीय विज्ञान कांग्रेस का पारंपरिक 'विज्ञान ज्योति' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 400 से अधिक स्कूली और कॉलेज छात्र जीरो माइलस्टोन पर एकत्र हुए। वहाँ से वे रैली के रूप में विश्व विद्यालय परिसर पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपने जीवन में वैज्ञानिक सोच को अपनाने की शपथ ली। भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ की अध्यक्ष डॉ (इस्का)

वजय लक्ष्मी सक्सेना ने छात्रों से आग्रह किया कि वे विज्ञान को केवल पाठ्य सामग्री के रूप में न पढ़ें, बल्कि जीवन में वे जो भी करें, विज्ञान को उसमें शामिल करें।

‘विज्ञान ज्योति’ की अवधारणा ओलम्पिक ज्योति के अनुरूप है। यह एक आंदोलन का स्वरूप है, जो समाज और विशेष रूप से युवाओं में वैज्ञानिक मानसिकता तैयार करने के लिये समर्पित है। यह ज्योति विश्व विद्यालय परिसर में स्थापित की गई है और 108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के समापन तक यह प्रज्वलित रहेगी।

उद्घाटन सत्र में महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोशियारी, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान राज्यमंत्री डॉ. जितेन्द्र सिंह (स्वतंत्र प्रभार), महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे तथा उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस शामिल होंगे। आरटीएमएनयू के कुलपति डॉ. सुभाष आर. चौधरी और भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघ (इस्का), कोलकाता की अध्यक्ष डॉ. वजय लक्ष्मी सक्सेना की विशेष उपस्थिति रहेगी।

(इंडिया साइंस वायर)





New Delhi: ‘We have to make India the most advanced laboratory of modern science’

News जनवरी 03, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

New Delhi: (India Science Wire): The 108th Indian Science Congress was inaugurated today by Prime Minister Shri Narendra Modi via video conferencing. This year the congress is being organised at the Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, which is also celebrating its centenary. The focal theme of this year’s event is “Science and Technology for Sustainable Development with Women Empowerment”.

During the coming 5 days (3-7 January), discussions on sustainable development issues, women empowerment, and the role of science & technology in achieving that will be discussed by the participants. They will deliberate on ways to increase the participation of women in higher echelons of teaching, research, and industry, along with finding ways to provide women with equal access to STEM (Science, Technology, Engineering, and Mathematics) education, research opportunities, and economic participation. A special programme to showcase the contribution of women in science and technology will also be held, with lectures by renowned women scientists.



In his inaugural address, the Prime Minister highlighted the role of India's scientific strength in India's story of development over the next 25 years, the 'Amrit Kaal'. "When the spirit of national service gets infused in science along with passion, results are unprecedented. I am sure, India's scientific community will ensure a place for our country of which it was always deserving", he said. Pointing out that observation is the root of science, and it is by such observations that scientists follow patterns and arrive at required results, the Prime Minister underlined the importance of gathering data and analysing results.

Informing that India has been entrusted with the responsibility to preside over G-20, the Prime Minister pointed out that women-led development is one of the high-priority subjects taken up by the chair. Concluding his address, the Prime Minister said, "In Amrit Kaal, we have to make India the most advanced laboratory of modern science".

Governor of Maharashtra, Bhagat Singh Koshiyari; Union Minister of Road Transport & Highways, Nitin Gadkari; Union Minister of State (Ind. Charge)

Science & Tech; (Ind. Charge) Earth Sciences (Ind. Charge); Minister of State PMO, DoPT, Atomic Energy, and Space Dr Jitendra Singh; and Chief Minister of Maharashtra Eknath Shinde and Deputy Chief Minister of Maharashtra Devendra Fadnavis were also present at the inaugural event.

Various programmes will be organised alongside the Indian Science Congress. Children's Science Congress is being organised to help stimulate scientific interest and temperament among children. Farmer's Science Congress will provide a platform to improve the bio-economy and attract the youth to agriculture. Tribal Science Congress will also be held, which will be a platform for the scientific display of indigenous ancient knowledge systems and practices, along with focusing on empowering tribal women.

The Science Communicators' Meet and Women Science Congress will be held on January 5th, along with several concurrent plenary sessions on Agriculture and Forestry Sciences, Anthropological and Behavioural Sciences, Information and Communication Sciences & Technology, New Biology, and many more. Nobel laureates, leading Indian and foreign researchers, experts and technocrats will participate in the plenary sessions. A mega expo titled 'Pride of India' will also be organised during the congress, featuring significant developments and achievements primarily from the Indian science and technology sectors.



Make India the Most Advanced Laboratory of Modern Science

The Indian Science Congress is being organised at the Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, which is also celebrating its centenary.

By ISW Desk On Jan 7, 2023

Prime Minister Shri Narendra Modi, via video conferencing, inaugurated the 108th Indian Science Congress. This year the congress is being organised at the Rashtrasant Tukadoji Maharaj Nagpur University, which is also celebrating its centenary. The focal theme of this year's event is "Science and Technology for Sustainable Development with Women Empowerment".



During the five days(3-7 January), the participants will discuss sustainable development issues, women empowerment, and the role of science & technology in achieving that. They will deliberate on increasing women's participation in higher echelons of teaching, research, and industry, along with finding ways to provide women with equal access to STEM (Science, Technology, Engineering, and Mathematics) education, research opportunities, and economic participation. A special programme to showcase the contribution of women in science and technology will also be held, with lectures by renowned women scientists.

In his inaugural address, the Prime Minister highlighted the role of India's scientific strength in India's story of development over the next 25 years, the 'AmritKaal'.

"When the spirit of national service gets infused in science and passion, results are unprecedented. I am sure India's scientific community will ensure a place for our country of which it was always deserving", he said.

Pointing out that observation is the root of science, and it is by such observations that scientists follow patterns and arrive at required results, the Prime Minister underlined the importance of gathering data and analysing results.

Informing that India has been entrusted with the responsibility to preside over G-20, the Prime Minister pointed out that women-led development is one of the high-priority subjects taken up by the chair.

Concluding his address, the Prime Minister said, "In Amrit Kaal, we have to make India the most advanced laboratory of modern science".

Governor of Maharashtra, Bhagat Singh Koshyari; Union Minister of Road Transport & Highways, Nitin Gadkari; Union Minister of State (Ind. Charge) Science & Tech; (Ind. Charge) Earth Sciences(Ind. Charge); Minister of State



PMO, DoPT, Atomic Energy, and SpaceDr Jitendra Singh; and Chief Minister of Maharashtra Eknath Shinde and Deputy Chief Minister of Maharashtra Devendra Fadnavis were also present at the inaugural event.

Various programmes will be organised alongside the Indian Science Congress. Children's Science Congress is being organised to help stimulate scientific interest and temperament among children. Farmer's Science Congress will provide a platform to improve the bio-economy and attract the youth to agriculture. Tribal Science Congress will also be held, which will be a platform for the scientific display of indigenous ancient knowledge systems and practices, along with focusing on empowering tribal women.

The Science Communicators' Meet and Women Science Congress will be held on January 5th, along with several concurrent plenary sessions on Agriculture and Forestry Sciences, Anthropological and Behavioural Sciences, Information and Communication Sciences & Technology, New Biology, and many more.

Nobel laureates, leading Indian and foreign researchers, experts and technocrats will participate in the plenary sessions. A mega expo titled 'Pride of India' will also be organised during the congress, featuring significant developments and achievements primarily from the Indian science and technology sectors.



जी20 की वैश्विक संकल्पना के अनुरूप होगा 8वाँ आईआईएसएफ

January 6, 2023 by Dialogue India

वज्ञान के महाकुंभ के नाम से वख्यात इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 का आयोजन इस बार मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित मौलाना आज़ाद नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी (एमएएनआईटी) परिसर में 21 से 24 जनवरी, 2023 को किया जा रहा है। आईआईएसएफ का यह 8वाँ संस्करण है, जिसमें देश-वदेश के वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी वद, नीति-निर्माता, शल्पकार, स्टार्टअप्स, कसान, शोधार्थी, छात्र और नवोन्मेषक शामिल हो रहे हैं।

केंद्रीय राज्य मंत्री वज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कामक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है कि “आईआईएसएफ भारतीय और वदेशी छात्रों, नवप्रवर्तकों, शल्पकारों, कसानों, वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकी वदों के साथ भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की उपलब्धियों का जश्न मनाने का एक उत्सव है।” डॉ जितेंद्र सिंह ने अधिक से अधिक डीप टेक स्टार्टअप और नये क्षेत्रों में भारतीय स्टार्टअप्स से आगे आने का आह्वान भी किया है। उन्होंने कहा है कि आईआईएसएफ-2022 इस लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत द्वारा जी-20 शखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित किया जा रहा है। आईआईएसएफ के 8वें संस्करण की मुख्य थीम “वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर” रखी गई है। इस महोत्सव में 15 अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर केंद्रित देश के पहले ओटीटी चैनल इंडिया साइंस (<https://www.indiascience.in>) द्वारा इन कार्यक्रमों पर केंद्रित 15 फिल्मों का निर्माण किया गया है, जिन्हें समारोह के दौरान प्रदर्शित किया जाएगा। वज्ञान महोत्सव में देश-वदेश के 8,000 से अधिक प्रतिनिधियों के शामिल होने की उम्मीद है। इसके अलावा, अनुमानित एक लाख से अधिक आगंतुकों के इस महोत्सव का साक्षी बनने की संभावना है। केंद्रीय मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है कि आईआईएसएफ का आयोजन देश और वदेश में लोगों



और वैज्ञानिक समुदाय को एक साथ आने, एक साथ काम करने और भारत एवं मानवता की भलाई के लिए विज्ञान की भूमिका का उत्सव मनाने का अवसर प्रदान करता है। डॉ. सिंह ने कृषि प्रौद्योगिकी एवं डीप-टेक स्टार्टअप्स सहित नये विचारों और नवाचारों से लैस स्टार्टअप्स का भी इस आयोजन का हिस्सा बनने के लिए आह्वान किया है। डॉ. सिंह ने आईआईएसएफ में एक मेंटर डेस्क स्थापित करने की बात कही है जिससे छात्रों के साथ-साथ अभिभावकों को संभावित अभिभव पहल के बारे में मार्गदर्शन मिल सके। आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के नेतृत्व में स्वदेशी भावना के साथ कार्य कर रही संस्था विज्ञान भारती (वभा) के सहयोग से किया जा रहा है। अंतरिक्ष विभाग (डीओएस) और परमाणु ऊर्जा विभाग

(डीएई) की सहभागिता इस वर्ष आईआईएसएफ का एक अतिरिक्त आकर्षण होगी। मध्य प्रदेश सरकार में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ओम प्रकाश सकलेचा ने कहा है कि आईआईएसएफ के लिए एक विशेष साइंस कॉलोनी तैयार की जाएगी। नई उपलब्धियाँ छूने के लिए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन पहले की तरह आईआईएसएफ का हिस्सा बना रहेगा। यहाँ युवा छात्र, नवोदित वैज्ञानिक, गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए इकट्ठा होंगे। ये सभी प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली के लिए तैयार होंगे और ऐसे व्यावहारिक मॉडल प्रदर्शित करेंगे, जो 'आत्मनिर्भर भारत' का संदेश देते हैं। स्कूली विद्यार्थियों के लिए 'छात्र विज्ञान ग्राम' आठवें आईआईएसएफ का एक प्रमुख आकर्षण होगा। इसमें पूरे देश से 2500 से अधिक स्कूली छात्र शामिल हो रहे हैं। 'छात्र विज्ञान ग्राम' कार्यक्रम आठवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक के छात्रों और संसद सदस्यों द्वारा नामित ऐसे गाँवों के समन्वयक शिक्षकों के लिए है, जिन्हें "प्रधानमंत्री सांसद आदर्श ग्राम योजना" के तहत गोद लिया गया है। आईआईएसएफ-2022 का एक महत्वपूर्ण घटक 'फेस-टू-फेस विद फ्रंटियर्स ऑफ साइंस' कार्यक्रम है, जिसे छात्रों को केंद्र में रखकर डिजाइन किया गया है। यह कार्यक्रम छात्रों के लिए एक बेहतरीन अवसर होगा, जहाँ वे भारत की चर्चित हस्तियों / वैज्ञानिकों / उद्योगपतियों से सीधा संवाद कर सकेंगे। यह एक इंटरैक्टिव कार्यक्रम होगा, जिसमें 8वीं कक्षा से परास्नातक तक के 1200-1400 छात्रों के शामिल होने की उम्मीद है। इस दौरान 'युवा वैज्ञानिकों का सम्मेलन' आयोजित किया जा रहा है, जिसमें लगभग 1500 युवा वैज्ञानिक और शोधकर्ता अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ परस्पर विचार-विमर्श करेंगे। वहीं, 'मेगा-साइंस एक्स्पोजे' में भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी कौशल की झलक देखने को मिलेगी। स्टार्टअप कॉन्क्लेव भी आईआईएसएफ का हिस्सा है, जिसमें जैव प्रौद्योगिकी इनोवेशन

इको सस्टम पर कार्य करने वाले 600 से अधिक स्टार्टअप्स के शामिल होने की उम्मीद है। भारत का अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव (आईएसएफएफआई) इस महोत्सव का एक अन्य आकर्षण है। वज्ञान साहित्य पर केंद्रित “वज्ञानिका” का आयोजन भी इस अवसर पर किया जा रहा है। दो दिवसीय छात्र नवाचार उत्सव (स्टूडेंट इनोवेशन फेस्टिवल-एसआईएफ-022) भी महोत्सव का हिस्सा है। प्रथम बार वर्ष 2015 में आयोजित किये गए वार्षिक भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव का यह आठवाँ संस्करण है। पहला और दूसरा आईआईएसएफ नई दिल्ली में, तीसरा चेन्नई में, चौथा लखनऊ में, पाँचवाँ कोलकाता में, छठा वर्चुअल मोड के माध्यम से और आखरी आईआईएसएफ गोवा में आयोजित किया गया था। वर्ष 2020 में, कोविड-19 ने इस वार्षिक आयोजन के लिए गंभीर चुनौती खड़ी कर दी थी। लेकिन, कार्यक्रम को वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर आयोजित कर इसके प्रवाह को बाधित नहीं होने दिया गया। (इंडिया साइंस वायर)





जी20 की वैश्विक संकल्पना के अनुरूप होगा 8वाँ आईआईएसएफ



इंडिया साइंस वायर | Jan 06, 2023 6:03PM

नई उपलब्धियाँ छूने के लिए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन पहले की तरह आईआईएसएफ का हिस्सा बना रहेगा। यहाँ युवा छात्र, नवोदित वैज्ञानिक, गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए इकट्ठा होंगे।

वज्ञान के महाकुंभ के नाम से वख्यात इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -(आईआईएसएफ) 2022 का आयोजन इस बार मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित मौलाना आज़ाद नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी परिसर में (एमएनआईटी) 21 से 24 जनवरी, 2023 को किया जा रहा है। आईआईएसएफ का यह 8वाँ संस्करण है, जिसमें देश वदेश के वैज्ञानिक-



प्रौद्योगिकी, नीतिनिर्माता-, शिल्पकार, स्टार्टअप्स, कसान, शोधार्थी, छात्र और नवोन्मेषक शामिल हो रहे हैं।

केंद्रीय राज्य मंत्री विज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कर्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है कि "आईआईएसएफ भारतीय और विदेशी छात्रों, नवप्रवर्तकों, शिल्पकारों, किसानों, वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकी विद्वानों के साथ भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की उपलब्धियों का जश्न मनाने का एक उत्सव है।"

डॉ जितेंद्र सिंह ने अधिक से अधिक डीप टेक स्टार्टअप और नए क्षेत्रों में भारतीय स्टार्टअप्स से आगे आने का आह्वान भी किया है। उन्होंने कहा है कि आईआईएसएफ-2022 इस लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत द्वारा जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित किया जा रहा है।

आईआईएसएफ के 8वें संस्करण की मुख्य थीम "विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर" रखी गई है। इस महोत्सव में 15 अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित - किए जा रहे हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर केंद्रित देश के पहले ओटीटी चैनल इंडिया साइंस (https://www.indiascience.in) द्वारा इन कार्यक्रमों पर केंद्रित 15 फिल्मों का निर्माण किया गया है, जिन्हें समारोह के दौरान प्रदर्शित किया जाएगा। विज्ञान महोत्सव में देश विदेश के 8,000 से अधिक प्रतिनिधियों के शामिल होने की उम्मीद है। इसके अलावा, अनुमानित एक लाख से अधिक आगंतुकों के इस महोत्सव का साक्षी बनने की संभावना है।

केंद्रीय मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है कि आईआईएसएफ का आयोजन देश और विदेश में लोगों और वैज्ञानिक समुदाय को एक साथ आने, एक साथ काम करने और भारत एवं मानवता की भलाई के लिए विज्ञान की भूमिका का उत्सव मनाने का अवसर प्रदान करता है। डॉ सिंह ने कृषि प्रौद्योगिकी एवं डीपटेक स्टार्टअप्स सहित नए विचारों और नवाचारों से लैस स्टार्टअप्स - का भी इस आयोजन का हिस्सा बनने के लिए आह्वान किया है। डॉ सिंह ने आईआईएसएफ में एक मेंटर डेस्क स्थापित करने की बात कही है जिससे छात्रों के साथसाथ अभिभावकों को - संभावित अभिनव पहल के बारे में मार्गदर्शन मिल सके।

आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के नेतृत्व में विदेशी (सीएसआईआर)



के सहयोग से किया जा रहा है। (वभा) भावना के साथ कार्य कर रही संस्था वज्ञान भारती की सहभागिता इस वर्ष (डीआई) और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीओएस) अंतरिक्ष विभाग आईआईएसएफ का एक अतिरिक्त आकर्षण होगी। मध्य प्रदेश सरकार में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ओम प्रकाश सकलेचा ने कहा है कि आईआईएसएफ के लिए एक विशेष साइंस कॉलोनी तैयार की जाएगी।

नई उपलब्धियाँ छूने के लिए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन पहले की तरह आईआईएसएफ का हिस्सा बना रहेगा। यहाँ युवा छात्र, नवोदित वैज्ञानिक, गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए इकट्ठा होंगे। ये सभी प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली के लिए तैयार होंगे और ऐसे व्यावहारिक मॉडल प्रदर्शित करेंगे, जो 'आत्मनिर्भर भारत' का संदेश देते हैं। स्कूली विद्यार्थियों के लिए 'छात्र विज्ञान ग्राम' आठवें आईआईएसएफ का एक प्रमुख आकर्षण होगा। इसमें पूरे देश से 2500 से अधिक स्कूली छात्र शामिल हो रहे हैं। 'छात्र विज्ञान ग्राम' कार्यक्रम आठवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक के छात्रों और संसद सदस्यों द्वारा नामित ऐसे गाँवों के समन्वयक शिक्षकों के लिए है, जिन्हें प्रधानमंत्री सांसद आदर्श ग्राम "के तहत गोद लिया गया है। आईआईएसएफ "योजना2022 का एक महत्वपूर्ण घटक 'फेस-टू-फेस विद फ्रंटियर्स ऑफ साइंस' कार्यक्रम है, जिसे छात्रों को केंद्र में रखकर डिजाइन किया गया है। यह कार्यक्रम छात्रों के लिए एक बेहतरीन अवसर होगा, जहाँ वे भारत की चर्चित हस्तियों / उद्योगपतियों से सीधा संवाद कर सकेंगे। यह एक इंटरैक्टिव कार्यक्रम होगा / वैज्ञानिकों, जिसमें 8वीं कक्षा से परास्नातक तक के 1200-1400 छात्रों के शामिल होने की उम्मीद है।

इस दौरान 'युवा वैज्ञानिकों का सम्मेलन' आयोजित किया जा रहा है, जिसमें लगभग 1500 युवा वैज्ञानिक और शोधकर्ता अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ परस्पर विचार वमर्श करेंगे। वहीं-, 'मेगा-साइंस एक्स्पोजे' में भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी कौशल की झलक देखने को मिलेगी। स्टार्टअप कॉन्क्लेव भी आईआईएसएफ का हिस्सा है, जिसमें जैव प्रौद्योगिकी इनोवेशन इकोसिस्टम पर कार्य करने वाले 600 से अधिक स्टार्टअप्स के शामिल होने की उम्मीद है। भारत का अंतरराष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव इस महोत्सव का एक (आईएसएफएफआई)अन्य आकर्षण है। विज्ञान साहित्य पर केंद्रित का आयोजन भी इस अवसर पर किया जा "विज्ञानिका" स्टूडेंट इनोवेशन फेस्टिवल) रहा है। दो दिवसीय छात्र नवाचार उत्सव-एसआईएफ-022) भी महोत्सव का हिस्सा है।

प्रथम बार वर्ष 2015 में आयोजित किये गए वार्षिक भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव का यह आठवाँ संस्करण है। पहला और दूसरा आईआईएसएफ नई दिल्ली में, तीसरा चेन्नई में, चौथा



लखनऊ में, पाँचवां कोलकाता में, छठा वर्चुअल मोड के माध्यम से और आ खरी आईआईएसएफ गोवा में आयोजित किया गया था। वर्ष 2020 में, को वड-19 ने इस वार्षिक आयोजन के लिए गंभीर चुनौती खड़ी कर दी थी। लेकिन, कार्यक्रम को वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर आयोजित कर इसके प्रवाह को बाधत नहीं होने दिया गया।

(इंडिया साइंस वायर)



नई दिल्ली। जी20 की वैश्विक संकल्पना के अनुरूप होगा 8वाँ आईआईएसएफ।

News जनवरी 05, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली। (इंडिया साइंस वायर) वज्ञान के महाकुंभ के नाम से वख्यात इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -(आईआईएसएफ)2022 का आयोजन इस बार मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित मौलाना आज़ाद नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी परिसर में (एमएएनआईटी) 21 से 24 जनवरी, 2023 को कया जा रहा है। आईआईएसएफ का यह 8वाँ संस्करण है, जिसमें देश-वदेश के वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी वद, नीतिनिर्माता-, शल्पकार, स्टार्टअप्स, कसान, शोधार्थी, छात्र और नवोन्मेषक शामिल हो रहे हैं।

केंद्रीय राज्य मंत्री वज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क "आईआईएसएफ भारतीय और वदेशी छात्रों, नवप्रवर्तकों, शल्पकारों, कसानों, वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकी वदों के साथ भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की उपलब्धियों का जशन मनाने का एक उत्सव है।"



डॉ जितेंद्र सिंह ने अ धक से अ धक डीप टेक स्टार्टअप और नये क्षेत्रों में भारतीय स्टार्टअप्स से आगे आने का आह्वान भी किया है। उन्होंने कहा है क आईआईएसएफ-2022 इस लए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत द्वारा जी-20 शखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित किया जा रहा है।

आईआईएसएफ के 8वें संस्करण की मुख्य थीम “वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर” रखी गई है। इस महोत्सव में 15 अलगअलग कार्यक्रम आयोजित - कए जा रहे हैं। वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर केंद्रित देश के पहले ओटीटी चैनल इंडिया साइंस (https://www.indiascience.in) द्वारा इन कार्यक्रमों पर केंद्रित 15 फिल्मों का निर्माण किया गया है, जिन्हें समारोह के दौरान प्रदर्शित किया जाएगा। वज्ञान महोत्सव में देश वदेश के- 8,000 से अधिक प्रतिनिधियों के शामिल होने की उम्मीद है। इसके अलावा, अनुमानित एक लाख से अधिक आगंतुकों के इस महोत्सव का साक्षी बनने की संभावना है।

केंद्रीय मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क आईआईएसएफ का आयोजन देश और वदेश में लोगों और वैज्ञानिक समुदाय को एक साथ आने, एक साथ काम करने और भारत एवं मानवता की भलाई के लए वज्ञान की भूमिका का उत्सव मनाने का अवसर प्रदान करता है। डॉ सिंह ने कृष प्रौद्योगिकी एवं डीपटेक स्टार्टअप्स सहित नये वचारों और नवाचारों से लैस स्टार्टअप्स - का भी इस आयोजन का हिस्सा बनने के लए आह्वान किया है। डॉ सिंह ने आईआईएसएफ में

साथ अ-एक मॅटर डेस्क स्थापित करने की बात कही है जिससे छात्रों के साथ भभावकों को संभावित अ भनव पहल के बारे में मार्गदर्शन मिल सके।

आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा (सीएसआईआर) देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के नेतृत्व में स्वदेशी भावना के साथ कार्य कर रही संस्था विज्ञान भारती के सहयोग से किया जा रहा है। (विभा) की सहभागिता इस वर्ष (डीई) और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीओएस) अंतरिक्ष विभाग आईआईएसएफ का एक अतिरिक्त आकर्षण होगी। मध्य प्रदेश सरकार में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ओम प्रकाश सकलेचा ने कहा है कि आईआईएसएफ के लिए एक विशेष साइंस कॉलोनी तैयार की जाएगी।

नई उपलब्धियाँ छूने के लिए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन पहले की तरह आईआईएसएफ का हिस्सा बना रहेगा। यहाँ युवा छात्र, नवोदित वैज्ञानिक, गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए इकट्ठा होंगे। ये सभी प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली के लिए तैयार होंगे और ऐसे व्यावहारिक मॉडल प्रदर्शित करेंगे, जो 'आत्मनिर्भर भारत' का संदेश देते हैं। स्कूली विद्यार्थियों के लिए 'छात्र विज्ञान ग्राम' आठवें आईआईएसएफ का एक प्रमुख आकर्षण होगा। इसमें पूरे देश से 2500 से अधिक स्कूली छात्र शामिल हो रहे हैं। 'छात्र विज्ञान ग्राम' कार्यक्रम आठवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक के छात्रों और संसद सदस्यों द्वारा नामित ऐसे गाँवों के समन्वयक शिक्षकों के लिए है, जिन्हें प्रधानमंत्री सांसद आदर्श ग्राम " -के तहत गोद लिया गया है। आईआईएसएफ "योजना2022 का एक महत्वपूर्ण घटक 'फेस-टू-फेस विद फ्रंटियर्स ऑफ साइंस' कार्यक्रम है, जिसे छात्रों को केंद्र में रखकर डिजाइन किया गया है। यह कार्यक्रम छात्रों के लिए एक बेहतरीन अवसर होगा, जहाँ वे भारत की चर्चित हस्तियों / उद्योगपतियों से सीधा संवाद कर सकेंगे। यह एक इंटरैक्टिव कार्यक्रम होगा / वैज्ञानिकों, जिसमें 8वीं कक्षा से परास्नातक तक के 1200-1400 छात्रों के शामिल होने की उम्मीद है।

इस दौरान 'युवा वैज्ञानिकों का सम्मेलन' आयोजित किया जा रहा है, जिसमें लगभग 1500 युवा वैज्ञानिक और शोधकर्ता अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ परस्पर विचार वमर्श करेंगे। वहीं, 'मेगा-साइंस एक्सपो' में भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी कौशल की झलक देखने को मिलेगी। स्टार्टअप कॉन्क्लेव भी आईआईएसएफ का हिस्सा है, जिसमें जैव प्रौद्योगिकी इनोवेशन इकोसिस्टम पर कार्य करने वाले 600 से अधिक स्टार्टअप्स के शामिल होने की उम्मीद है। भारत का अंतरराष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव इस महोत्सव का एक अन्य (आईएसएफएफआई)



आकर्षण है। वज्ञान साहित्य पर केंद्रित का आयोजन भी इस अवसर पर कया "वज्ञानिका" स्टूडेंट इनोवेशन फेस्टिवल) जा रहा है। दो दिवसीय छात्र नवाचार उत्सव-एसआईएफ-022) भी महोत्सव का हिस्सा है।

प्रथम बार वर्ष 2015 में आयोजित कये गए वा र्षक भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव का यह आठवाँ संस्करण है। पहला और दूसरा आईआईएसएफ नई दिल्ली में, तीसरा चेन्नई में, चौथा लखनऊ में, पाँचवां कोलकाता में, छठा वर्चुअल मोड के माध्यम से और आ खरी आईआईएसएफ गोवा में आयोजित कया गया था। वर्ष 2020 में, को वड-19 ने इस वा र्षक आयोजन के लए गंभीर चुनौती खड़ी कर दी थी। ले कन, कार्यक्रम को वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर आयोजित कर इसके प्रवाह को बा धत नहीं होने दिया गया।

(इं डया साइंस वायर)



जी20 की वैश्विक संकल्पना के अनुरूप होगा 8वाँ आईआईएसएफ

05/01/2023 V3news India



नई दिल्ली, 05 जनवरी, (इंडिया साइंस वायर: (वज्ञान के महाकुंभ के नाम से वख्यात इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -(आईआईएसएफ)2022 का आयोजन इस बार मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित मौलाना आज़ाद नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमएनआईटी) परिसर में 21 से 24 जनवरी, 2023 को किया जा रहा है। आईआईएसएफ का यह 8वाँ संस्करण है, जिसमें देश वदेश के वैज्ञानिक-, प्रौद्योगिकी वद, नीतिनिर्माता-, शल्पकार, स्टार्टअप्स, कसान, शोधार्थी, छात्र और नवोन्मेषक शामिल हो रहे हैं।

केंद्रीय राज्य मंत्री वज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, का र्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क “आईआईएसएफ भारतीय और वदेशी छात्रों, नवप्रवर्तकों, शल्पकारों, कसानों, वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगिकी वदों के साथ भारत की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की उपलब्धियों का जशन मनाने का एक उत्सव है।

डॉ जितेंद्र सिंह ने अ धक से अ धक डीप टेक स्टार्टअप और नये क्षेत्रों में भारतीय स्टार्टअप्स से आगे आने का आह्वान भी कया है। उन्होंने कहा है क आईआईएसएफ-2022 इस लए भी महत्वपूर्ण है, क्यों क यह भारत द्वारा जी-20 शखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित कया जा रहा है। आईआईएसएफ के 8वें संस्करण की मुख्य थीम “वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर” रखी गई है। इस महोत्सव में 15 अलगअलग कार्यक्रम- आयोजित कए जा रहे हैं।

वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर केंद्रित देश के पहले ओटीटी चैनल इंडिया साइंस (<https://www.indiascience.in>) द्वारा इन कार्यक्रमों पर केंद्रित 15 फिल्मों का निर्माण कया गया है, जिन्हें समारोह के दौरान प्रदर्शित कया जाएगा। वज्ञान महोत्सव में देश वदेश के- 8,000 से अ धक प्रतिनिधियों के शामिल होने की उम्मीद है। इसके अलावा, अनुमानित एक लाख से अ धक आगंतुकों के इस महोत्सव का साक्षी बनने की संभावना है।

केंद्रीय मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क आईआईएसएफ का आयोजन देश और वदेश में लोगों और वैज्ञानिक समुदाय को एक साथ आने, एक साथ काम करने और भारत एवं मानवता की भलाई के लए वज्ञान की भूमिका का उत्सव मनाने का अवसर प्रदान करता है। डॉ सिंह ने कृष प्रौद्योगिकी एवं डीपटेक स्टार्टअप्स सहित नये वचारों और नवाचारों से लैस स्टार्टअप्स - का भी इस आयोजन का हिस्सा बनने के लए आह्वान कया है। डॉ सिंह ने आईआईएसएफ में एक मेंटर डेस्क स्थापित करने की बात कही है जिससे छात्रों के साथसाथ अभभावकों को - संभावित अभनव पहल के बारे में मार्गदर्शन मिल सके।

आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस), वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी वभाग (डीएसटी), जैव प्रौद्योगिकी वभाग (डीबीटी), वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के नेतृत्व में स्वदेशी (सीएसआईआर) के सहयोग से कया जा (वभा) भावना के साथ कार्य कर रही संस्था वज्ञान भारतीरहा है।



अंतरिक्ष वभाग की सहभागिता इस वर्ष (डीईई) और परमाणु ऊर्जा वभाग (डीओएस) आईआईएसएफ का एक अतिरिक्त आकर्षण होगी।

मध्य प्रदेश सरकार में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री ओम प्रकाश सकलेचा ने कहा है कि आईआईएसएफ के लिए एक विशेष साइंस कॉलोनी तैयार की जाएगी। नई उपलब्धियाँ छूने के लिए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने से संबंधित कार्यक्रम का आयोजन पहले की तरह आईआईएसएफ का हिस्सा बना रहेगा। यहाँ युवा छात्र, नवोदित वैज्ञानिक, गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के लिए इकट्ठा होंगे। ये सभी प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली के लिए तैयार होंगे और ऐसे व्यावहारिक मॉडल प्रदर्शित करेंगे, जो 'आत्मनिर्भर भारत' का संदेश देते हैं।

स्कूली वद्यार्थियों के लिए 'छात्र वज्ञान ग्राम' आठवें आईआईएसएफ का एक प्रमुख आकर्षण होगा। इसमें पूरे देश से 2500 से अधिक स्कूली छात्र शामिल हो रहे हैं। 'छात्र वज्ञान ग्राम' कार्यक्रम आठवीं से ग्यारहवीं कक्षा तक के छात्रों और संसद सदस्यों द्वारा नामित ऐसे गाँवों के समन्वयक शिक्षकों के लिए है, जिन्हें प्रधानमंत्री सांसद आदर्श ग्राम योजना के तहत गोद लिया गया है। आईआईएसएफ-2022 का एक महत्वपूर्ण घटक 'फेसफेस वद फ्रंटियर्स ऑफ -टू-साइंस कार्यक्रम है, जिसे छात्रों को केंद्र में रखकर डिजाइन किया गया है।

यह कार्यक्रम छात्रों के लिए एक बेहतरीन अवसर होगा, जहाँ वे भारत की चर्चित हस्तियों / उद्योगपतियों से सीधा संवाद कर / वैज्ञानिकों से मिलेंगे। यह एक इंटरैक्टिव कार्यक्रम होगा, जिसमें 8वीं कक्षा से परास्नातक तक के 1200-1400 छात्रों के शामिल होने की उम्मीद है। इस दौरान 'युवा वैज्ञानिकों का सम्मेलन' आयोजित किया जा रहा है, जिसमें लगभग 1500 युवा वैज्ञानिक और शोधकर्ता अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञों के साथ परस्पर वचार वमर्श करेंगे। वहीं, 'मेगासाइंस - एक्सपो' में भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी कौशल की झलक देखने को मिलेगी।

स्टार्टअप कॉन्क्लेव भी आईआईएसएफ का हिस्सा है, जिसमें जैव प्रौद्योगिकी इनोवेशन इकोसिस्टम पर कार्य करने वाले 600 से अधिक स्टार्टअप्स के शामिल होने की उम्मीद है। भारत का अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव इस महोत्सव का एक अन्य (आईएसएफएफआई) आकर्षण है। वज्ञान साहित्य पर केंद्रित वज्ञानिका का आयोजन भी इस अवसर पर किया जा स्टूडेंट इनोवेशन फेस्टिवल) रहा है। दो दिवसीय छात्र नवाचार उत्सव-एसआईएफ-022) भी महोत्सव का हिस्सा है।

प्रथम बार वर्ष 2015 में आयोजित कये गए वा र्षक भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव का यह आठवाँ संस्करण है। पहला और दूसरा आईआईएसएफ नई दिल्ली में, तीसरा चेन्नई में, चौथा लखनऊ में, पाँचवां कोलकाता में, छठा वर्चुअल मोड के माध्यम से और आ खरी आईआईएसएफ गोवा में आयोजित कया गया था। वर्ष 2020 में, को वड-19 ने इस वा र्षक आयोजन के लए गंभीर चुनौती खड़ी कर दी थी। ले कन, कार्यक्रम को वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर आयोजित कर इसके प्रवाह को बा धत नहीं होने दिया गया।



'IISF to foster theme of G20 – One Earth, One Family, One Future' --India Science Wire

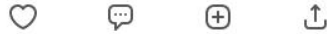


vigyanprasar.gov.in • 37d

Photo: PIB The 8th edition of the India International Science Festival (IISF) is going to be held during 21-24 January 2023, at Maulana Azad National ...

[Read more on vigyanprasar.gov.in](https://vigyanprasar.gov.in)

[#INDIA](#) [#TECHNOLOGY \(INDIA\)](#) [#GOVERNMENT \(INDIA\)](#) [#INDIAN POLITICS](#)
[#TECHNOLOGY](#)



BISinfotech

'IISF to Foster Theme of G20 – One Earth, One Family, One Future'

Nitisha Dubey January 6, 2023



(India Science Wire): The 8th edition of the India International Science Festival (IISF) is going to be held during 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, Madhya Pradesh. Scientists, technologists, policymakers, artisans, startups, farmers, researchers, students, and innovators from India and abroad will participate in the festival popularly called 'Vigyan Mahakumbh'.

Union Minister of State for Science & Technology (Independent Charge) and Minister of State (Independent Charge) for Ministry of Earth Sciences, Minister



of State Prime Minister's Office, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr Jitendra Singh has said, "IISF is a festival to celebrate the achievements of India's scientific and technological advancements with students, innovators, craftsmen, farmers, scientists and technocrats from India and abroad."

Dr Jitendra Singh also called for more Deep Tech startups and startups in newer areas with Indian signature. "IISF-2022 is vital as it coincides with India assuming the presidency of the G-20. The activities during the festival will also foster the global theme of G20 - 'One Earth, One Family, and One Future', Dr Singh added.

The theme of this edition of IISF is 'Marching towards Amrit Kaal with Science, Technology, and Innovation'. The primary purpose of IISF is the celebration of science by all. Through its creative programmes and activities, IISF provides an opportunity for the scientific communities and the general [public](#) to come together and experience the joy of doing science for the wellbeing of India and humanity.

Speaking at the IISF's 'Curtain Raiser' programme held in New Delhi, Dr Jitendra Singh informed that several events would be running parallel with the participation of more than 8,000 delegates from across the country and abroad. Over one lakh local visitors are expected to witness and remember the festival for its unique grandeur and creativity in science.

The Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh are jointly organising



IISF 2022. The Department of Biotechnology, Ministry of Science & Technology is the nodal coordinating department for the Festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) will be the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency organising the festival. Like previous editions, several other S&T Ministries and Departments are also involved in organising the event. Om Prakash Saklecha, Minister of Micro, Small and Medium Enterprises and Science and Technology in the Government of Madhya Pradesh, has said that a science colony would be set up especially for the IISF-2022.

IISF is a unique interaction platform for students, scientists, innovators, citizens, policymakers, and industries, including startups. India has entered the 'Amrit Kaal' during which it is essential to make science more accessible for everyone so that they can participate in the growth of the nation with the true spirit of *Janbhagidari* (people's participation). The theme for this year's IISF will ignite the spirit of using science, technology, and innovations to address social issues.

Fifteen different events will be conducted during the festival: Artisan's Technology Village - Vocal for Local; Face-to-Face with New Frontiers in Science; Guinness Book of World Records; Mega Science and Technology Exhibition; National Social Organizations and Institutions Meet (NSOIM); New Age Technologies Show; Science through Games and Toys; Startup Conclave; State Science & Technology Councils Conclave; Students' Innovation Festival (SIF); Students Science Village 2022; VIGYANIKA - Science Literature Festival; Young Scientists Conference; and 15 Mentoring & Counselling (Scientific



Discussion) sessions, and last but not the least, the International Science Film Festival of India.

Face-to-face with frontiers of science at IISF-2022 will be a unique opportunity for students, where they will be able to directly interact with eminent personalities / scientists / industrialists of India. The event will be an interactive session attended by 1200-1400 students from 8th standard to Post graduate.

A mentor's desk would be set up to guide the students and parents about potential innovative initiatives. In the interest of school children and their parents, the festival will also have a special section showcasing smart and intelligent toys.

India Science (<https://www.indiascience.in>), the nation's own science & technology OTT channel, has exclusively prepared fifteen short films showcasing the focal themes of all the fifteen events.

IISF-2022 is the eighth edition of the event since its inception in the year 2015. The first and second editions of IISF were held in New Delhi, the third in Chennai, the fourth in Lucknow, the fifth in Kolkata, the sixth through virtual mode, and the last IISF in Goa. In 2020, COVID-19 posed a serious challenge to this annual event. However, the flow of the program was not allowed to be interrupted by organizing it on a virtual platform. **(India Science Wire)**



‘IISF to foster theme of G20 – One Earth, One Family, One Future’

January 6, 2023 by Dialogue India

New Delhi 05 Jan, 05 Jan (India Science Wire): The 8 th edition of the India International Science Festival (IISF) is going to be held during 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, Madhya Pradesh. Scientists, technologists, policymakers, artisans, startups, farmers, researchers, students, and innovators from India and abroad will participate in the festival popularly called ‘Vigyan Mahakumbh’. Union Minister of State for Science & Technology (Independent Charge) and Minister of State (Independent Charge) for Ministry of Earth Sciences, Minister of State Prime Minister’s Office, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr Jitendra Singh has said, “IISF is a festival to celebrate the achievements of India’s scientific and technological advancements with students, innovators, craftsmen, farmers, scientists and technocrats from India and abroad.”

Dr Jitendra Singh also called for more Deep Tech startups and startups in newer areas with Indian signature. “IISF-2022 is vital as it coincides with India assuming the presidency of the G-20. The activities during the festival will also foster the global theme of G20 - ‘One Earth, One Family, and One Future’, Dr Singh added. The theme of this edition of IISF is ‘Marching towards Amrit Kaal with Science, Technology, and Innovation’. The primary purpose of IISF is the celebration of science by all. Through its creative programmes and activities, IISF provides an opportunity for the scientific communities and the general public to come together and experience the joy of doing science for the wellbeing of India and humanity. Speaking at the IISF’s ‘Curtain Raiser’ programme held in New Delhi, Dr Jitendra Singh informed that several events



would be running parallel with the participation of more than 8,000 delegates from across the country and abroad. Over one lakh local visitors are expected to witness and remember the festival for its unique grandeur and creativity in science.

The Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh are jointly organising IISF 2022. The Department of Biotechnology, Ministry of Science & Technology is the nodal coordinating department for the Festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) will be the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency organising the festival. Like previous editions, several other S&T Ministries and Departments are also involved in organising the event. Om Prakash Saklecha, Minister of Micro, Small and Medium Enterprises and Science and Technology in the Government of Madhya Pradesh, has said that a science colony would be set up especially for the IISF-2022. IISF is a unique interaction platform for students, scientists, innovators, citizens, policymakers, and industries, including startups. India has entered the 'Amrit Kaal' during which it is essential to make science more accessible for everyone so that they can participate in the growth of the nation with the true spirit of Janbhagidari (people's participation). The theme for this year's IISF will ignite the spirit of using science, technology, and innovations to address social issues. Fifteen different events will be conducted during the festival: Artisan's Technology Village - Vocal for Local; Face-to-Face with New Frontiers in Science; Guinness Book of World Records; Mega Science and Technology Exhibition; National Social Organizations and Institutions Meet (NSOIM); New Age Technologies Show; Science through Games and Toys; Startup Conclave; State Science & Technology Councils Conclave; Students' Innovation Festival (SIF); Students Science Village 2022; VIGYANIKA -



Science Literature Festival; Young Scientists Conference; and 15 Mentoring & Counselling (Scientific Discussion) sessions, and last but not the least, the International Science Film Festival of India. Face-to-face with frontiers of science at IISF-2022 will be a unique opportunity for students, where they will be able to directly interact with eminent personalities / scientists / industrialists of India. The event will be an interactive session attended by 1200-1400 students from 8th standard to Post graduate. A mentor's desk would be set up to guide the students and parents about potential innovative initiatives. In the interest of school children and their parents, the festival will also have a special section showcasing smart and intelligent toys. India Science (<https://www.indiascience.in>), the nation's own science & technology OTT channel, has exclusively prepared fifteen short films showcasing the focal themes of all the fifteen events. IISF-2022 is the eighth edition of the event since its inception in the year 2015. The first and second editions of IISF were held in New Delhi, the third in Chennai, the fourth in Lucknow, the fifth in Kolkata, the sixth through virtual mode, and the last IISF in Goa. In 2020, COVID-19 posed a serious challenge to this annual event. However, the flow of the program was not allowed to be interrupted by organizing it on a virtual platform. (India Science Wire)





New Delhi: 'IISF to foster theme of G20 – One Earth, One Family, One Future'

News जनवरी 05, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

New Delhi: (India Science Wire): The 8th edition of the India International Science Festival (IISF) is going to be held during 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, Madhya Pradesh. Scientists, technologists, policymakers, artisans, startups, farmers, researchers, students, and innovators from India and abroad will participate in the festival popularly called 'Vigyan Mahakumbh'. Union Minister of State for Science & Technology (Independent Charge) and Minister of State (Independent Charge) for Ministry of Earth Sciences, Minister of State Prime Minister's Office, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr Jitendra Singh has said, "IISF is a festival to celebrate the achievements of India's scientific and technological advancements with students, innovators, craftsmen, farmers, scientists and technocrats from India and abroad."

Dr Jitendra Singh also called for more Deep Tech startups and startups in newer areas with Indian signature. "IISF-2022 is vital as it coincides with India assuming the presidency of the G-20. The activities during the festival will also foster the global theme of G20 - 'One Earth, One Family, and One Future', Dr Singh added.

The theme of this edition of IISF is 'Marching towards Amrit Kaal with Science, Technology, and Innovation'. The primary purpose of IISF is the celebration of

science by all. Through its creative programmes and activities, IISF provides an opportunity for the scientific communities and the general public to come together and experience the joy of doing science for the wellbeing of India and humanity.



Speaking at the IISF's 'Curtain Raiser' programme held in New Delhi, Dr Jitendra Singh informed that several events would be running parallel with the participation of more than 8,000 delegates from across the country and abroad. Over one lakh local visitors are expected to witness and remember the festival for its unique grandeur and creativity in science.

The Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh are jointly organising IISF 2022. The Department of Biotechnology, Ministry of Science & Technology is the nodal coordinating department for the Festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) will be the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal

agency organising the festival. Like previous editions, several other S&T Ministries and Departments are also involved in organising the event. Om Prakash Saklecha, Minister of Micro, Small and Medium Enterprises and Science and Technology in the Government of Madhya Pradesh, has said that a science colony would be set up especially for the IISF-2022.

IISF is a unique interaction platform for students, scientists, innovators, citizens, policymakers, and industries, including startups. India has entered the 'Amrit Kaal' during which it is essential to make science more accessible for everyone so that they can participate in the growth of the nation with the true spirit of Janbhagidari (people's participation). The theme for this year's IISF will ignite the spirit of using science, technology, and innovations to address social issues.

Fifteen different events will be conducted during the festival: Artisan's Technology Village - Vocal for Local; Face-to-Face with New Frontiers in Science; Guinness Book of World Records; Mega Science and Technology Exhibition; National Social Organizations and Institutions Meet (NSOIM); New Age Technologies Show; Science through Games and Toys; Startup Conclave; State Science & Technology Councils Conclave; Students' Innovation Festival (SIF); Students Science Village 2022; VIGYANIKA - Science Literature Festival; Young Scientists Conference; and 15 Mentoring & Counselling (Scientific Discussion) sessions, and last but not the least, the International Science Film Festival of India.

Face-to-face with frontiers of science at IISF-2022 will be a unique opportunity for students, where they will be able to directly interact with eminent personalities / scientists / industrialists of India. The event will be an interactive session attended by 1200-1400 students from 8th standard to Post graduate.

A mentor's desk would be set up to guide the students and parents about potential innovative initiatives. In the interest of school children and their



parents, the festival will also have a special section showcasing smart and intelligent toys. India Science (<https://www.indiascience.in>), the nation's own science & technology OTT channel, has exclusively prepared fifteen short films showcasing the focal themes of all the fifteen events.

IISF-2022 is the eighth edition of the event since its inception in the year 2015. The first and second editions of IISF were held in New Delhi, the third in Chennai, the fourth in Lucknow, the fifth in Kolkata, the sixth through virtual mode, and the last IISF in Goa. In 2020, COVID-19 posed a serious challenge to this annual event. However, the flow of the program was not allowed to be interrupted by organizing it on a virtual platform.

(India Science Wire)



BHOPAL NEWS- भारत के वैज्ञानिकों की ताकत मेगा साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक्सपो में दिखेगी

Bhopal Samachar January 07, 2023



नई दिल्ली। वज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय प्रयोगशालाओं और हमारे वैज्ञानिकों की उपलब्धियों की एक लंबी सूची है। लेकिन, अपने देश की इन उपलब्धियों के बारे में बहुसंख्य लोगों को जानकारी नहीं है। भारत की ऐसी अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियों, स्टार्टअप्स और नवाचारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर भोपाल में 21 से 24 जनवरी तक आयोजित होने वाले 'मेगा साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक्सपो' के दौरान मिल सकता है।

देश के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों, शैक्षिक संगठनों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रम, भारतीय उद्योगों की उपलब्धियों और सफलता की कहानियों को मेगा एक्सपो में

प्रदर्शित किया जाएगा। इस मेगा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के आयोजन का उद्देश्य उत्साही छात्रों, उभरते युवा वैज्ञानिकों और आम जनता को शिक्षित करना और उनमें वैज्ञानिक चेतना विकसित करना है। इस प्रदर्शनी में पहले आठ वर्षों के दौरान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई विभिन्न पहलों को भी प्रदर्शित किया जाएगा, जिसमें 'आत्मनिर्भर भारत', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'डिजिटल इंडिया', 'स्किल इंडिया', 'मेक इन इंडिया', आदि प्रमुखता से शामिल हैं।

भोपाल स्थित मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी परिसर में आयोजित होने जा रहा यह चार दिवसीय मेगा साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक्सपो, इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) का एक प्रमुख घटक है। नई दिल्ली में आईआईएसएफ के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री एवं पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कर्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा है - "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के अंतर्गत प्रयोगशाला से धरातल तक वैज्ञानिक सफलताएं पहुंची हैं और 'जीवन में सुगमता' लाने के लिए हर घर में विज्ञान के अनुप्रयोगों का उपयोग किया गया है।

"केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आईआईएसएफ-2022 अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत द्वारा जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित हो रहा है।

स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने और देश को एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। इसी के साथ अगले 25 वर्षों के अमृतकाल के दौरान देश को वैज्ञानिक महाशक्ति बनाने के लिए पुरजोर प्रयास किये जा रहे हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के व्यापक और बहुआयामी प्रयासों की झलक यहाँ देखने को मिलेगी। इस मेगा प्रदर्शनी की थीम - 'विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर' है। आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा मध्य प्रदेश सरकार (सीएसआईआर); मध्य प्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और विज्ञान भारती के सहयोग से किया जा रहा है। अंतरिक्ष विभाग और परमाणु ऊर्जा विभाग (इंडिया साइंस वायर) की सहभागिता इस वर्ष आईआईएसएफ का एक अतिरिक्त आकर्षण होगी। (डीईई)

✓ इसी प्रकार की जानकारियों और समाचार के लिए कृपया [यहां क्लिक](#) करके हमें गूगल न्यूज़ पर फॉलो करें एवं [यहां क्लिक](#) करके हमारा टेलीग्राम चैनल सब्सक्राइब करें। क्योंकि भोपाल समाचार के टेलीग्राम चैनल पर कुछ स्पेशल भी होता है।



नई दिल्ली। 'मेगा एक्स्पो' में दिखेगी भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों की झाँकी।

News जनवरी 08, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली (इंडिया साइंस वायर): अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने के साथ-साथ भारत ने कोवड-19 की वैक्सीन बेहद कम समय में बनाकर पूरी दुनिया के सामने अपनी वैज्ञानिक क्षमता की मसाल पेश की है। वज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय प्रयोगशालाओं और हमारे वैज्ञानिकों की उपलब्धियों की एक लंबी सूची है। लेकिन, अपने देश की इन उपलब्धियों के बारे में बहुसंख्य लोगों को जानकारी नहीं है। भारत की ऐसी अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियों, स्टार्टअप्स और नवाचारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर भोपाल में 21 से 24 जनवरी तक आयोजित होने वाले 'मेगा साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक्स्पो' के दौरान मिल सकता है।

देश के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों, शैक्षिक संगठनों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रम, भारतीय उद्योगों की उपलब्धियों और सफलता की कहानियों को मेगा एक्स्पो में प्रदर्शित किया जाएगा। इस मेगा वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के आयोजन का उद्देश्य उत्साही छात्रों, उभरते युवा वैज्ञानिकों और आम जनता को शिक्षित करना और उनमें वैज्ञानिक चेतना विकसित करना है। इस प्रदर्शनी में पहले आठ वर्षों के दौरान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई विभिन्न पहलों को भी प्रदर्शित किया जाएगा, जिसमें 'आत्मानिर्भर भारत', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'डिजिटल इंडिया', 'स्किल इंडिया', 'मेक इन इंडिया', आदि प्रमुखता से शामिल हैं।



आईआईएसएफ के एक पूर्ववर्ती आयोजन के दौरान मेगा साइंस एक्सपो की एक झलक

भोपाल स्थित मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी परिसर में आयोजित होने जा रहा यह चार दिवसीय मेगा साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक्सपो, इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) का एक प्रमुख घटक है। नई दिल्ली में आईआईएसएफ के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय वज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री एवं पृथ्वी वज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कर्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है - "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के अंतर्गत प्रयोगशाला से धरातल तक वैज्ञानिक सफलताएं पहुंची हैं और 'जीवन में सुगमता' लाने के लिए हर घर में वज्ञान के अनुप्रयोगों का उपयोग किया गया है।" केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आईआईएसएफ-2022 अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत द्वारा जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित हो रहा है।

स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने और देश को एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में वज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को आजादी के अमृत

महोत्सव के रूप में मना रहा है। इसी के साथ अगले 25 वर्षों के अमृतकाल के दौरान देश को वैज्ञानिक महाशक्ति बनाने के लिए पुरजोर प्रयास किये जा रहे हैं। वज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के व्यापक और बहुआयामी प्रयासों की झलक यहाँ देखने को मिलेगी। इस मेगा प्रदर्शनी की थीम - 'वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर' है।

आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा मध्य प्रदेश सरकार; मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और वज्ञान भारती के सहयोग से किया जा रहा है। अंतरिक्ष विभाग (डीओएस) और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) की सहभागिता इस वर्ष आईआईएसएफ का एक अतिरिक्त आकर्षण होगी।

(इं डया साइंस वायर)





नवयुग संदेश

‘मेगा एक्सपो’ में दिखेगी भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों की झाँकी

By Navyug Sandesh - 07/01/2023



नई दिल्ली, 07 जनवरी अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी छाप : (इंडिया साइंस वायर) छोड़ने के साथसाथ -
-भारत ने कोवड19 की वैक्सीन बेहद कम समय में बनाकर पूरी दुनिया के सामने अपनी वैज्ञानिक क्षमता की मसाल पेश की है। वज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय प्रयोगशालाओं और हमारे वैज्ञानिकों की उपलब्धियों की एक लंबी सूची है। लेकिन, अपने देश की इन उपलब्धियों के बारे में बहुसंख्य लोगों को जानकारी नहीं है। भारत की ऐसी अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियों, स्टार्टअप्स और नवाचारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर भोपाल में 21



से 24 जनवरी तक आयोजित होने वाले 'मेगा साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी एक्स्पो' के दौरान मल सकता है।

देश के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों, शैक्षिक संगठनों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रम, भारतीय उद्योगों की उपलब्धियों और सफलता की कहानियों को मेगा एक्स्पो में प्रदर्शित किया जाएगा। इस मेगा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के आयोजन का उद्देश्य उत्साही छात्रों, उभरते युवा वैज्ञानिकों और आम जनता को शिक्षित करना और उनमें वैज्ञानिक चेतना विकसित करना है। इस प्रदर्शनी में पहले आठ वर्षों के दौरान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई विभिन्न पहलों को भी प्रदर्शित किया जाएगा, जिसमें 'आत्मनिर्भर भारत', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'डिजिटल इंडिया', 'स्किल इंडिया', 'मेक इन इंडिया', आदि प्रमुखता से शामिल हैं।

भोपाल स्थित मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी परिसर में आयोजित होने जा रहा यह चार दिवसीय मेगा साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी एक्स्पो, इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का एक प्रमुख घटक है। नई दिल्ली में आईआईएसएफ के कर्टेन रेजर कार्यक्रम (आईआईएसएफ स्वतंत्र) के दौरान केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री एवं पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (प्रभार, प्रधानमंत्री कार्यालय, कार्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा है - "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के अंतर्गत प्रयोगशाला से धरातल तक वैज्ञानिक सफलताएं पहुंची हैं और 'जीवन में सुगमता' लाने के लिए हर घर में विज्ञान के अनुप्रयोगों का उपयोग किया गया है।" केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आईआईएसएफ-2022 अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत द्वारा जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित हो रहा है।

स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने और देश को एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। इसी के साथ अगले 25 वर्षों के अमृतकाल के दौरान देश को वैज्ञानिक महाशक्ति बनाने के लिए पुरजोर प्रयास किये जा रहे हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के व्यापक और बहुआयामी प्रयासों की झलक यहाँ देखने को मिलेगी। इस मेगा प्रदर्शनी की थीम - 'विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर' है।



आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा मध्य प्रदेश सरकार (सीएसआईआर); मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और वज्ञान भारती के सहयोग से किया जा रहा है। अंतरिक्ष विभाग की सहभागिता इस वर्ष आईआईएसएफ का एक (डीईई) और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीओएस) अतिरिक्त आकर्षण होगी।

- इंडिया साइंस वायर



‘मेगा एक्सपो’ में दिखेगी भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों की झाँकी

07/01/2023 V3news India



नई दिल्ली, 07 जनवरी : (इंडिया साइंस वायर) अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने के साथसाथ -भारत ने कोवड19 की वैक्सीन बेहद कम समय में बनाकर पूरी दुनिया के सामने अपनी वैज्ञानिक क्षमता की मसाल पेश की है। वज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय प्रयोगशालाओं और हमारे वैज्ञानिकों की उपलब्धियों की एक लंबी सूची है। लेकिन, अपने देश की इन उपलब्धियों के बारे में बहुसंख्य लोगों को जानकारी नहीं है।

भारत की ऐसी अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियों, स्टार्टअप्स और नवाचारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर भोपाल में 21 से 24 जनवरी तक आयोजित होने वाले ‘मेगा साइंस एंड

टेक्नोलॉजी एक्स्पो' के दौरान मल सकता है। देश के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों, शैक्षक संगठनों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रम, भारतीय उद्योगों की उपलब्धियों और सफलता की कहानियों को मेगा एक्स्पो में प्रदर्शित किया जाएगा। इस मेगा वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के आयोजन का उद्देश्य उत्साही छात्रों, उभरते युवा वैज्ञानिकों और आम जनता को शक्ति करना और उनमें वैज्ञानिक चेतना विकसित करना है।

इस प्रदर्शनी में पहले आठ वर्षों के दौरान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई विभिन्न पहलों को भी प्रदर्शित किया जाएगा, जिसमें 'आत्मनिर्भर भारत', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'डिजिटल इंडिया', 'स्किल इंडिया', 'मेक इन इंडिया', आदि प्रमुखता से शामिल हैं। भोपाल स्थित मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी परिसर में आयोजित होने जा रहा यह चार दिवसीय मेगा साइंस एंड टेक्नोलॉजी एक्स्पो, इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का एक (आईआईएसएफ) प्रमुख घटक है।

नई दिल्ली में आईआईएसएफ के कर्टेन रेजर कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय वज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री एवं पृथ्वी वज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कर्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है - "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के अंतर्गत प्रयोगशाला से धरातल तक वैज्ञानिक सफलताएं पहुंची हैं और 'जीवन में सुगमता' लाने के लिए हर घर में वज्ञान के अनुप्रयोगों का उपयोग किया गया है।"

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आईआईएसएफ-2022 अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत द्वारा जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित हो रहा है। स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने और देश को एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में वज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। इसी के साथ अगले 25 वर्षों के अमृतकाल के दौरान देश को वैज्ञानिक महाशक्ति बनाने के लिए पुरजोर प्रयास किये जा रहे हैं।

वज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के व्यापक और बहुआयामी प्रयासों की झलक यहाँ देखने को मिलेगी। इस मेगा प्रदर्शनी की थीम - 'वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर' है। आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी वज्ञान



मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी वभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी वभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा मध्य प्रदेश (सीएसआईआर) सरकार; मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और वज्ञान भारती के सहयोग से कया जा रहा है। अंतरिक्ष वभाग और परमाणु ऊर्जा (डीओएस) वभाग की सहभागता इस वर्ष (डीएई) आईआईएसएफ का एक अतिरिक्त आकर्षण होगी।



‘मेगा एक्सपो’ में दिखेगी भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों की झाँकी

By **Rupesh Dharmik** -January 7, 2023



नई दिल्ली, 07 जनवरी : (इंडिया साइंस वायर) अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने के साथसाथ -
-भारत ने कोवड19 की वैक्सीन बेहद कम समय में बनाकर पूरी दुनिया के सामने अपनी वैज्ञानिक क्षमता की मसाल पेश की है। वज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारतीय प्रयोगशालाओं और हमारे वैज्ञानिकों की उपलब्धियों की एक लंबी सूची है। लेकिन, अपने देश की इन उपलब्धियों के बारे में बहुसंख्य लोगों को जानकारी नहीं है। भारत की ऐसी अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियों, स्टार्टअप्स और नवाचारों के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर भोपाल में 21

से 24 जनवरी तक आयोजित होने वाले 'मेगा साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी एक्स्पो' के दौरान मल सकता है।

देश के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों, शैक्षिक संगठनों, अनुसंधान प्रयोगशालाओं, सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रम, भारतीय उद्योगों की उपलब्धियों और सफलता की कहानियों को मेगा एक्स्पो में प्रदर्शित किया जाएगा। इस मेगा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी के आयोजन का उद्देश्य उत्साही छात्रों, उभरते युवा वैज्ञानिकों और आम जनता को शिक्षित करना और उनमें वैज्ञानिक चेतना विकसित करना है। इस प्रदर्शनी में पहले आठ वर्षों के दौरान माननीय प्रधानमंत्री द्वारा की गई विभिन्न पहलों को भी प्रदर्शित किया जाएगा, जिसमें 'आत्मनिर्भर भारत', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'डिजिटल इंडिया', 'स्किल इंडिया', 'मेक इन इंडिया', आदि प्रमुखता से शामिल हैं।

भोपाल स्थित मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी परिसर में आयोजित होने जा रहा यह चार दिवसीय मेगा साइंस ऐंड टेक्नोलॉजी एक्स्पो, इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल का एक प्रमुख घटक है। नई दिल्ली में आईआईएसएफ के कर्टेन रेजर कार्यक्रम (आईआईएसएफ) के दौरान केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री एवं पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री स्वतंत्र (प्रभार, प्रधानमंत्री कार्यालय, कर्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्य मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है - "प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के अंतर्गत प्रयोगशाला से धरातल तक वैज्ञानिक सफलताएं पहुंची हैं और 'जीवन में सुगमता' लाने के लिए हर घर में विज्ञान के अनुप्रयोगों का उपयोग किया गया है।" केंद्रीय मंत्री ने कहा कि आईआईएसएफ-2022 अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह भारत द्वारा जी-20 शिखर सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रहण करने के साथ आयोजित हो रहा है।

स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष 2047 तक आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को साकार करने और देश को एक वैश्विक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को आजादी के अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। इसी के साथ अगले 25 वर्षों के अमृतकाल के दौरान देश को वैज्ञानिक महाशक्ति बनाने के लिए पुरजोर प्रयास किये जा रहे हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के



क्षेत्र में भारत के व्यापक और बहुआयामी प्रयासों की झलक यहाँ देखने को मलेगी। इस मेगा प्रदर्शनी की थीम - 'वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर' है।

आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा मध्य प्रदेश सरकार (सीएसआईआर); मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और वज्ञान भारती के सहयोग से किया जा रहा है। अंतरिक्ष विभाग की सहभागिता इस वर्ष आईआईएसएफ का एक (डीएई) और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीओएस) इंडिया साइंस) अतिरिक्त आकर्षण होगी। वायर(



BISinfotech

IISF 2022: Mentoring and Counselling Sessions to Help Youngsters

Nitisha Dubey January 7, 2023



(India Science Wire): India International Science Festival, an annual event that started its journey in 2015, will organise its 8th edition from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal.

The occasion offers an opportunity to meet people practicing science in various forms like scientists, researchers, innovators, start-ups, science communicators and writers, filmmakers, administrators, students and people in general interested in science.

India has entered the Amrit Kaal; when, in the coming 25 years, it will be a nation with nearly 60% of its population young and active. As per available data, the median age of India is now 28.4 years. With a concerted effort, India will be a global centre for research and innovation. It is vital now to motivate young students and their parents to choose a career in science and technology. IISF is one such effort to sensitise the nation's substantial young populations on the potential of science-based research and innovations.

Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr Jitendra Singh has said that "The future belongs to those who have innovative ideas and out-of-box goals, and have the conviction and courage to achieve the same."

This year, following Dr Singh's suggestion to set up a Mentor's Desk at the IISF, a new event - Mentoring & Counselling (Scientific Discussions) has been added to its existing list of 14. This is going to guide the students as well as their parents about potential scientific and technological career options and innovations.

In IISF 2022, the dedicated event on Mentoring and Counselling will allow the school and college students to explore and understand their career of choice through a mentorship journey with the experts of Science, Technology, Engineering and Mathematics (STEM).



Through the guidance of mentors, students will be better prepared and equipped for an enriching career when they join the workforce in academia, research, and industry.

“The main aim of this event is to guide and mentor school/college students and parents (especially from rural areas) about various career opportunities in science and technology areas”, said Dr Sanjay Mishra, Scientist H, Department of Biotechnology and Coordinator, IISF 2022. “This will improve the productivity of the nation and help in Aatmanirbhar Bharat during the Amrit Kaal,” adds Dr Mishra.

Few career domains are still taboo for female students. Counselling sessions at the IISF will guide them and their families to overcome their fears and explore the new career horizons for women in science and technology.

At the venue of the Festival, there will be Walk-in Counselling Clinics where school and college students can interact with experts of different domains in science. The counselling will be provided in both English and Hindi.

Experts from various academic and research organizations are expected to guide the students about the processes and requirements to get admission into reputed organizations. These clinics will also guide them on selecting a suitable career to match their abilities, interest, and personality.

Besides the clinics, there will be ‘Knowledge Gateway’ that will connect the students with professionals and experts in their chosen career through classroom sessions/webinars.



The programme aims to introduce the students to various conventional and non-conventional work fields. Students coming from rural regions and who are completing their 10+2 or graduations would be guided by the experts about various courses, colleges, streams, eligibility [criteria](#) for joining them, job opportunities etc. Sessions will be held on Biological, Chemical, Pharmaceutical, Physical Sciences, Mathematics, Engineering, Innovations, Entrepreneurship, Science Communication, Digital Technology, Environmental Sustainability, Archaeology, Forensic Science, Space, Medical & Paramedical Sciences, Lab Technology, Physiotherapy & Dietetics, AYUSH and many more.

The clinic will be open to all and no registration is required. Anybody visiting the festival can come for the counselling clinics and sessions and interact with experts.





New Delhi: IISF 2022: Mentoring and Counselling sessions to help youngsters choose career in science

News जनवरी 08, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

New Delhi (India Science Wire): India International Science Festival, an annual event that started its journey in 2015, will organise its 8th edition from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal. The occasion offers an opportunity to meet people practicing science in various forms like scientists, researchers, innovators, start-ups, science communicators and writers, filmmakers, administrators, students and people in general interested in science.

India has entered the Amrit Kaal; when, in the coming 25 years, it will be a nation with nearly 60% of its population young and active. As per available data, the median age of India is now 28.4 years. With a concerted effort, India will be a global centre for research and innovation. It is vital now to motivate young students and their parents to choose a career in science and technology. IISF is one such effort to sensitise the nation's substantial young populations on the potential of science-based research and innovations.

Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr Jitendra Singh has said that "The future belongs to those who have innovative ideas and out-of-box goals, and have the conviction and courage to achieve the same."



This year, following Dr Singh's suggestion to set up a Mentor's Desk at the IISF, a new event - Mentoring & Counselling (Scientific Discussions) has been added to its existing list of 14. This is going to guide the students as well as their parents about potential scientific and technological career options and innovations. In IISF 2022, the dedicated event on Mentoring and Counselling will allow the school and college students to explore and understand their career of choice through a mentorship journey with the experts of Science, Technology, Engineering and Mathematics (STEM).

Through the guidance of mentors, students will be better prepared and equipped for an enriching career when they join the workforce in academia, research, and industry. "The main aim of this event is to guide and mentor school/college students and parents (especially from rural areas) about various career opportunities in science and technology areas", said Dr Sanjay Mishra, Scientist H, Department of Biotechnology and Coordinator, IISF 2022. "This will improve the productivity of the nation and help in Aatmanirbhar Bharat during the Amrit Kaal," adds Dr Mishra.

Few career domains are still taboo for female students. Counselling sessions at the IISF will guide them and their families to overcome their fears and explore



the new career horizons for women in science and technology. At the venue of the Festival, there will be Walk-in Counselling Clinics where school and college students can interact with experts of different domains in science. The counselling will be provided in both English and Hindi.

Experts from various academic and research organizations are expected to guide the students about the processes and requirements to get admission into reputed organizations. These clinics will also guide them on selecting a suitable career to match their abilities, interest, and personality. Besides the clinics, there will be 'Knowledge Gateway' that will connect the students with professionals and experts in their chosen career through classroom sessions/webinars.

The programme aims to introduce the students to various conventional and non-conventional work fields. Students coming from rural regions and who are completing their 10+2 or graduations would be guided by the experts about various courses, colleges, streams, eligibility criteria for joining them, job opportunities etc. Sessions will be held on Biological, Chemical, Pharmaceutical, Physical Sciences, Mathematics, Engineering, Innovations, Entrepreneurship, Science Communication, Digital Technology, Environmental Sustainability, Archaeology, Forensic Science, Space, Medical & Paramedical Sciences, Lab Technology, Physiotherapy & Dietetics, AYUSH and many more. The clinic will be open to all and no registration is required. Anybody visiting the festival can come for the counselling clinics and sessions and interact with experts.



IISF 2022: Mentoring and Counselling sessions to help youngsters choose career in science

by [India Science Wire](#) [January 8, 2023](#) in [Science](#)



India International Science Festival, an annual event that started its journey in 2015, will organise its 8th edition from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal. The occasion offers an opportunity to meet people practicing science in various forms like scientists, researchers, innovators, start-ups, science communicators and writers, filmmakers, administrators, students and people in general interested in science.

India has entered the Amrit Kaal; when, in the coming 25 years, it will be a nation with nearly 60% of its population young and active. As per available data, the median age of India is now 28.4 years. With a concerted effort, India will be a global centre for research and innovation. It is vital now to motivate



young students and their parents to choose a career in science and technology. IISF is one such effort to sensitise the nation's substantial young populations on the potential of science-based research and innovations.

Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr Jitendra Singh has said that “The future belongs to those who have innovative ideas and out-of-box goals, and have the conviction and courage to achieve the same.”

This year, following Dr Singh's suggestion to set up a Mentor's Desk at the IISF, a new event - Mentoring & Counselling (Scientific Discussions) has been added to its existing list of 14. This is going to guide the students as well as their parents about potential scientific and technological career options and innovations.

In IISF 2022, the dedicated event on Mentoring and Counselling will allow the school and college students to explore and understand their career of choice through a mentorship journey with the experts of Science, Technology, Engineering and Mathematics (STEM).

Through the guidance of mentors, students will be better prepared and equipped for an enriching career when they join the workforce in academia, research, and industry.

“The main aim of this event is to guide and mentor school/college students and parents (especially from rural areas) about various career opportunities in science and technology areas”, said Dr Sanjay Mishra, Scientist H, Department of Biotechnology and Coordinator, IISF 2022. “This will improve the productivity of the nation and help in Aatmanirbhar Bharat during the Amrit Kaal,” adds Dr Mishra.



Few career domains are still taboo for female students. Counselling sessions at the IISF will guide them and their families to overcome their fears and explore the new career horizons for women in science and technology.

At the venue of the Festival, there will be Walk-in Counselling Clinics where school and college students can interact with experts of different domains in science. The counselling will be provided in both English and Hindi.

Experts from various academic and research organizations are expected to guide the students about the processes and requirements to get admission into reputed organizations. These clinics will also guide them on selecting a suitable career to match their abilities, interest, and personality.

Besides the clinics, there will be 'Knowledge Gateway' that will connect the students with professionals and experts in their chosen career through classroom sessions/webinars.

The programme aims to introduce the students to various conventional and non-conventional work fields. Students coming from rural regions and who are completing their 10+2 or graduations would be guided by the experts about various courses, colleges, streams, eligibility criteria for joining them, job opportunities etc. Sessions will be held on Biological, Chemical, Pharmaceutical, Physical Sciences, Mathematics, Engineering, Innovations, Entrepreneurship, Science Communication, Digital Technology, Environmental Sustainability, Archaeology, Forensic Science, Space, Medical & Paramedical Sciences, Lab Technology, Physiotherapy & Dietetics, AYUSH and many more.

The clinic will be open to all and no registration is required. Anybody visiting the festival can come for the counselling clinics and sessions and interact with experts.





भारत के अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव में 59 देशों से मली प्र वष्टियां

इंडिया साइंस वायर | Jan 10, 2023 5:33PM

आईएसएफएफआई के समन्वयक और वज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक नि मष कपूर ने बताया है क “वज्ञान फिल्मोत्सव के अंतर्गत वज्ञान, प्रौद्योगिकी और शोध तथा वकास से जुडे व वध वषयों पर चार श्रे णयों में फिल्म प्र वष्टियां आमंत्रित की गई थीं।

इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -(आईआईएसएफ)2022 के एक प्रमुख घटक के रूप में इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया का आयोजन आगामी (आईएसएफएफआई)21 से 23 जनवरी को भोपाल में कया जा रहा है। आईआईएसएफ के 8वें संस्करण के अंतर्गत आयोजित होने वाले इस अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्मोत्सव में 59 देशों से वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार पर आधारित कुल 437 फिल्म प्र वष्टियां प्राप्त हुई हैं।

आईएसएफएफआई के समन्वयक और वज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक नि मष कपूर ने बताया है क “वज्ञान फिल्मोत्सव के अंतर्गत वज्ञान, प्रौद्योगिकी और शोध तथा वकास से जुडे व वध वषयों पर चार श्रे णयों में फिल्म प्र वष्टियां आमंत्रित की गई थीं। प्राप्त 437 प्र वष्टियों में से 61 भारतीय और 33 वदेशी फिल्मों को समारोह के लए नामांकित कया गया है। भारत, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, रूस, कनाडा, इजराइल, फलीपींस, अमेरिका, ऑस्ट्रे लया सहित अन्य देशों की पुरस्कृत वज्ञान फिल्मों की वशेष स्क्रीनिंग फिल्मोत्सव में की जाएगी। फिल्म महोत्सव में कसी प्रकार का शुल्क नहीं रखा गया है। 21 से 23 जनवरी 2023 के दौरान इन फिल्मों की स्क्रीनिंग में बच्चों और छात्रों समेत हर आयु वर्ग के लोग आकर फिल्में देख सकते हैं।”

इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -(आईआईएसएफ)2022 का आयोजन 21 से 24 जनवरी को मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में कया जा रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित हो रहे आईआईएसएफ के 8वें संस्करण की प्रमुख वषयवस्तु ‘वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर’ है। चार दिवसीय आईआईएसएफ के दौरान



15 अलगअलग कार्यक्रम आयोजित कए जाएंगे-, जिनमें तीन दिवसीय इंटरनेशनल साइंस फ़िल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया शामिल है। वज्ञान फ़िल्म महोत्सव का (आईएसएफएफआई) आयोजन 21 से 23 जनवरी को पंखुशीलाल शर्मा गवर्नमेंट आयुर्वेद कॉलेज ऐंड इंस्टीट्यूट ., भोपाल में कया जा रहा है।

आईएसएफएफआई के लए नामांकित फ़िल्मों का चयन व शष्ट निर्णायक मंडल द्वारा कया गया है। वज्ञान कथा, वज्ञान वृत्त चित्र, एनिमेशन, लघु फ़िल्म और सूचनात्मक वज्ञान वीडियो के रूप में प्रतिभा गयों से गत 25 दिसंबर 2023 तक फ़िल्म प्रवष्टियां आमंत्रित की गई थीं। आईएसएफएफआई की श्रेणियों में स्थायी वकास के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार; जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार; बेहतर जीवन के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार; और एक गैरप्रतिस्पर्धी श्रेणी शामिल है। फ़िल्म महोत्सव - साथ दर्शकों को फ़िल्मकारों से मिलने का अवसर भी -में वज्ञान फ़िल्मों के अवलोकन के साथ मिल सकता है।

आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी वभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी वभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा मध्य प्रदेश सरकार (सीएसआईआर); मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और वज्ञान भारती के सहयोग से कया जा रहा है। अंतरिक्ष वभाग की सहभागिता इस वर्ष आईआईएसएफ का एक (डीईई) और परमाणु ऊर्जा वभाग (डीओएस) अतिरिक्त आकर्षण होगी।

इस अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फ़िल्म महोत्सव का उद्देश्य वज्ञान फ़िल्मों और फ़िल्म निर्माताओं के माध्यम से वज्ञान संचार और वज्ञान फ़िल्म निर्माण की रोमांचक यात्रा को प्रोत्साहन प्रदान करना है। वज्ञान फ़िल्मोत्सव की तीन प्रतियोगी श्रेणियों के अंतर्गत चुनी गई उत्कृष्ट वज्ञान फ़िल्मों के लए 11 पुरस्कार प्रदान कये जाएंगे। वज्ञान फ़िल्म महोत्सव वैज्ञानिक चेतना, तार्किकता एवं विश्लेषणात्मक सोच को आकार देने में भूमिका निभाता है। दूसरी ओर, फ़िल्म जैसे लोक प्रिय माध्यम द्वारा यह महोत्सव उत्साही छात्रों और फ़िल्मकारों को वज्ञान से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करता है।

(इंडिया साइंस वायर)



नई दिल्ली। भारत के अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव में 59 देशों से मली प्र वष्टियां।

News जनवरी 10, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली (इंडिया साइंस वायर)। इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 के एक प्रमुख घटक के रूप में इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (आईएसएफएफआई) का आयोजन आगामी 21 से 23 जनवरी को भोपाल में किया जा रहा है। आईआईएसएफ के 8वें संस्करण के अंतर्गत आयोजित होने वाले इस अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्मोत्सव में 59 देशों से वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार पर आधारित कुल 437 फिल्म प्र वष्टियां प्राप्त हुई हैं।

आईएसएफएफआई के समन्वयक और वज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक निमेष कपूर ने बताया है कि “वज्ञान फिल्मोत्सव के अंतर्गत वज्ञान, प्रौद्योगिकी और शोध तथा विकास से जुड़े व वध वषयों पर चार श्रेणियों में फिल्म प्र वष्टियां आमंत्रित की गई थीं। प्राप्त 437 प्र वष्टियों में से 61 भारतीय और 33 वदेशी फिल्मों को समारोह के लिए नामांकित किया गया है। भारत, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, रूस, कनाडा, इजराइल, फलीपींस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों की पुरस्कृत वज्ञान फिल्मों की वशेष स्क्रीनिंग फिल्मोत्सव में की जाएगी। फिल्म महोत्सव में कसी प्रकार का शुल्क नहीं रखा गया है। 21 से 23 जनवरी 2023 के दौरान इन फिल्मों की स्क्रीनिंग में बच्चों और छात्रों समेत हर आयु वर्ग के लोग आकर फिल्में देख सकते हैं।”



INA NEWS
Initiate | News | Agency

75 Azadi Ka Amrit Mahotsav

G20 India 2023

Department of Science and Technology
Government of India

INDIA INTERNATIONAL SCIENCE FESTIVAL
21-24 January, 2023 2022
MANIT, Bhopal, Madhya Pradesh

MARCHING TOWARDS AMRIT KAAL WITH SCIENCE, TECHNOLOGY, AND INNOVATION

“Science is like that energy in the development of 21st century India, which has the power to accelerate the development of every region, the development of every state”

इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 का आयोजन 21 से 24 जनवरी को मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में किया जा रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित हो रहे आईआईएसएफ के 8वें संस्करण की प्रमुख वषयवस्तु 'वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर' है। चार दिवसीय आईआईएसएफ के दौरान 15 अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जिनमें तीन दिवसीय इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (आईएसएफएफआई) शामिल है। वज्ञान फिल्म महोत्सव का आयोजन 21 से 23 जनवरी को पं. खुशीलाल शर्मा गवर्नमेंट आयुर्वेद कॉलेज ऐंड इंस्टीट्यूट, भोपाल में किया जा रहा है।

आईएसएफएफआई के लिए नामांकित फिल्मों का चयन व शर्षट निर्णायक मंडल द्वारा किया गया है। वज्ञान कथा, वज्ञान वृत्त चित्र, एनिमेशन, लघु फिल्म और सूचनात्मक वज्ञान वीडियो के रूप में प्रतिभा गियों से गत 25 दिसंबर 2023 तक फिल्म प्रवर्षटियां आमंत्रित की गई थीं। आईएसएफएफआई की श्रेणियों में स्थायी वकास के लिए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार;

जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार; बेहतर जीवन के लिए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार; और एक गैर-प्रतिस्पर्धी श्रेणी शामिल है। फिल्म महोत्सव में वज्ञान फिल्मों के अवलोकन के साथ-साथ दर्शकों को फिल्मकारों से मिलने का अवसर भी मिल सकता है।

आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा मध्य प्रदेश सरकार; मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और वज्ञान भारती के सहयोग से किया जा रहा है। अंतरिक्ष विभाग (डीओएस) और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई) की सहभागिता इस वर्ष आईआईएसएफ का एक अतिरिक्त आकर्षण होगी।

इस अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव का उद्देश्य वज्ञान फिल्मों और फिल्म निर्माताओं के माध्यम से वज्ञान संचार और वज्ञान फिल्म निर्माण की रोमांचक यात्रा को प्रोत्साहन प्रदान करना है। वज्ञान फिल्मोत्सव की तीन प्रतियोगी श्रेणियों के अंतर्गत चुनी गई उत्कृष्ट वज्ञान फिल्मों के लिए 11 पुरस्कार प्रदान किये जाएंगे। वज्ञान फिल्म महोत्सव वैज्ञानिक चेतना, तार्किकता एवं विश्लेषणात्मक सोच को आकार देने में भूमिका निभाता है। दूसरी ओर, फिल्म जैसे लोकप्रिय माध्यम द्वारा यह महोत्सव उत्साही छात्रों और फिल्मकारों को वज्ञान से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करता है।

(इंडिया साइंस वायर)



रिपब्लिक न्यूज़ इंडिया

भारत के अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव में 59 देशों से मली प्र वष्टियां

By Rupesh Dharmik -January 10, 2023



नई दिल्ली, 10 जनवरी : (इंडिया साइंस वायर) इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल - (आईआईएसएफ) 2022 के एक प्रमुख घटक के रूप में इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया का आयोजन आगामी (आईएसएफएफआई) 21 से 23 जनवरी को भोपाल में किया जा रहा है। आईआईएसएफ के 8वें संस्करण के अंतर्गत आयोजित होने वाले इस अंतरराष्ट्रीय वज्ञान

फल्मोत्सव में 59 देशों से वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार पर आधारित कुल 437 फल्म प्र वष्टियां प्राप्त हुई हैं।

आईएसएफएफआईके समन्वयक और वज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक निमेष कपूर ने बताया है कि “वज्ञान फल्मोत्सव के अंतर्गत वज्ञान, प्रौद्योगिकी और शोध तथा वकास से जुड़े वषयों पर चार श्रेणियों में फल्म प्र वष्टियां आमंत्रित की गई थीं। प्राप्त 437 प्र वष्टियों में से 61 भारतीय और 33 वदेशी फल्मों को समारोह के लएनामांकित कया गया है। भारत, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, रूस, कनाडा, इजराइल, फलीपींस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों की पुरस्कृत वज्ञान फल्मों की वशेष स्क्रीनिंग फल्मोत्सव में की जाएगी। फल्म महोत्सव में कसी प्रकार का शुल्क नहीं रखा गया है। 21 से 23 जनवरी 2023 के दौरान इन फल्मों की स्क्रीनिंग में बच्चों और छात्रों समेत हर आयु वर्ग के लोग आकर फल्में देख सकते हैं।”

इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल - (आईआईएसएफ) 2022 का आयोजन 21 से 24 जनवरी को मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में कया जा रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित हो रहे आईआईएसएफ के 8वें संस्करण की प्रमुख वषयवस्तु ‘वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर’ है। चार दिवसीय आईआईएसएफ के दौरान 15 अलगअलग कार्यक्रम आयोजित कए जाएंगे-, जिनमें तीन दिवसीय इंटरनेशनल साइंस फल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया शामिल है। वज्ञान फल्म (आईएसएफएफआई) महोत्सव का आयोजन 21 से 23 जनवरी को पंखुशीलाल शर्मा गवर्नमेंट आयुर्वेद कॉलेज ऐंड इंस्टीट्यूट ., भोपाल में कया जा रहा है।

आईएसएफएफआई के लए नामांकित फल्मों का चयन वषष्ट निर्णायक मंडल द्वारा कया गया है। वज्ञान कथा, वज्ञान वृत्त चित्र, एनिमेशन, लघु फल्म और सूचनात्मक वज्ञान वीडियो के रूप में प्रतिभागियों से गत 25 दिसंबर 2023 तक फल्म प्र वष्टियां आमंत्रित की गई थीं। आईएसएफएफआईकी श्रेणियों में स्थायी वकास के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार; जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार; बेहतर जीवन के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार; और एक गैरप्रतिस्पर्धी श्रेणी शामिल है। फल्म महोत्सव -



साथ दर्शकों को फिल्मकारों से मिलने का अवसर भी -में वज्ञान फिल्मों के अवलोकन के साथ मिल सकता है।

आईआईएसएफ का आयोजन भारत सरकार के पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा मध्य प्रदेश सरकार (सीएसआईआर); मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और वज्ञान भारती के सहयोग से किया जा रहा है। अंतरिक्ष विभाग की सहभागिता इस वर्ष आईआईएसएफ का एक (डीई) और परमाणु ऊर्जा विभाग (डीओएस) अतिरिक्त आकर्षण होगी।

इस अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव का उद्देश्य वज्ञान फिल्मों और फिल्म निर्माताओं के माध्यम से वज्ञान संचार और वज्ञान फिल्म निर्माण की रोमांचक यात्रा को प्रोत्साहन प्रदान करना है। वज्ञान फिल्मोत्सव की तीन प्रतियोगी श्रेणियों के अंतर्गत चुनी गई उत्कृष्ट वज्ञान फिल्मों के लिए 11 पुरस्कार प्रदान किये जाएंगे। वज्ञान फिल्म महोत्सव वैज्ञानिक चेतना, तार्किकता एवं विश्लेषणात्मक सोच को आकार देने में भूमिका निभाता है। दूसरी ओर, फिल्म जैसे लोकप्रिय माध्यम द्वारा यह महोत्सव उत्साही छात्रों और फिल्मकारों को वज्ञान से जुड़ने का अवसर भी प्रदान करता है। (इंडिया साइंस वायर)



Mega Science and Technology exhibition' to showcase India's scientific strengths

SCIENCE

By Online Editor On Jan 10, 2023



New Delhi, Jan 10 (India Science Wire): One of the major attractions of the 8th edition of India International Science Festival (IISF) being held in Bhopal is the “Mega Science and Technology Exhibition”.

The exhibition will display the strengths and achievements of the Government, corporate, public sector undertakings, academic, and research and development institutes, innovators & entrepreneurs from across the country. Major

developments, major accomplishments and the significant contributions of Indian Science and Technology to society will be showcased in the exhibition.

IISF 2022 Exhibition will feature various initiatives by the Prime Minister Shri Narendra Modi in the last eight years, like Aatmanirbhar Bharat, Swachh Bharat, Digital India, Skill India, Make in India, etc. Also, to mark the 75th Anniversary of India's independence, the exhibits of this edition will have a special focus on 'Science Technology Innovation in Amrit Kaal and Achievements@75'. The exhibition will act as a platform for people from the research and industrial sectors to interact with the general public.

The exhibition also emphasizes the various scientific activities in different parts of the country highlighting the art, culture, and traditions of the regions. By providing a deeper glimpse into the research expanding the bounds of human knowledge, the scientific exhibition hopes to enhance awareness and interest in this area among a wide range of audiences, including students from schools, colleges, and universities.

Partners in business, academia, the scientific community, government, policymakers, journalists, and members of the public are included in the initiative's outreach efforts. This wide range of attendees is intended to facilitate more communication and collaboration among all parties involved, leading to the fertilisation of new ideas.

IISF 2022 is a collaborative effort of the Govt. of India and Indian state government agencies, including the Ministry of Science and Technology, the Ministry of Earth Sciences, the Department of Atomic Energy, the Department of Space, the Government of Madhya Pradesh, and the Government of India. The festival is centrally coordinated by the Department of Biotechnology, Ministry of Science & Technology. Vijnana Bharati (VIBHA) will serve as the knowledge partner, with the Madhya Pradesh Council of Science and



Technology (MPCOST) as the local partner. The Department of Biotechnology's Regional Centre for Biotechnology (RCB) in Faridabad is spearheading the festival's planning.

Apart from various central and state government departments; research institutions, educational institutions, universities, artisans and NGOs are invited to participate in the mega exhibition at Bhopal from 21st to 24th January 2023. There is also a provision for sponsoring the event under different categories. Interested people can get more details through the website <https://www.scienceindiafest.org/> and email id - iisfexpo2022@gmail.com. (India Science Wire)



‘Mega Science and Technology Exhibition’ to Showcase India’s Scientific Strengths

Article By : India Science Wire



The Mega Science and Technology Exhibition will showcase major developments, major accomplishments, and the significant contributions of Indian science and technology to society.

One of the major attractions of the 8th edition of India International Science Festival (IISF) being held in Bhopal is the “Mega Science and Technology Exhibition”, which will display the strengths and achievements of the government, corporate, public sector undertakings, academic, and research and development institutes, innovators and entrepreneurs from across the country. The exhibition will showcase major developments, major accomplishments, and the significant contributions of Indian science and technology to society.



IISF 2022 Exhibition will feature various initiatives by the Prime Minister Narendra Modi in the last eight years, such as Aatmanirbhar Bharat, Swachh Bharat, Digital India, Skill India, and Make in India, to name a few. Also, to mark the 75th Anniversary of India's independence, the exhibits of this edition will have a special focus on "Science Technology Innovation in Amrit Kaal and Achievements@75". The exhibition will act as a platform for people from the research and industrial sectors to interact with the general public.

The exhibition also emphasizes the various scientific activities in different parts of the country highlighting the art, culture, and traditions of the regions. By providing a deeper glimpse into the research expanding the bounds of human knowledge, the scientific exhibition hopes to enhance awareness and interest in this area among a wide range of audiences, including students from schools, colleges, and universities.



Partners in business, academia, the scientific community, government, policymakers, journalists, and members of the public are included in the initiative's outreach efforts. This wide range of attendees is intended to facilitate more communication and collaboration among all parties involved, leading to the fertilisation of new ideas.

IISF 2022 is a collaborative effort of the Government of India and Indian state government agencies, including the Ministry of Science and Technology, the Ministry of Earth Sciences, the Department of Atomic Energy, the Department of Space, the Government of Madhya Pradesh, and the Government of India. The festival is centrally coordinated by the Department of Biotechnology, Ministry of Science & Technology. Vijnana Bharati (VIBHA) will serve as the knowledge partner, with the Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) as the local partner. The Department of Biotechnology's Regional Centre for Biotechnology (RCB) in Faridabad is spearheading the festival's planning.

Apart from various central and state government departments; research institutions, educational institutions, universities, artisans and NGOs are invited to participate in the mega exhibition at Bhopal from January 21-24, 2023.



BISinfotech

'Mega Science and Technology exhibition' to Showcase India's Scientific Strengths

Nitisha Dubey January 10, 2023



(India Science Wire): One of the major attractions of the 8th edition of India International Science Festival (IISF) being held in Bhopal is the “Mega Science and Technology Exhibition”.

The exhibition will display the strengths and achievements of the Government, corporate, public sector undertakings, academic, and research and development institutes, innovators & entrepreneurs from across the country. Major developments, major accomplishments and the significant contributions of Indian Science and Technology to society will be showcased in the exhibition.

IISF 2022 Exhibition will feature various initiatives by the Prime Minister Shri Narendra Modi in the last eight years, like Aatmanirbhar Bharat, Swachh Bharat, Digital India, Skill India, Make in India, etc. Also, to mark the 75th Anniversary of India's independence, the exhibits of this edition will have a special focus on 'Science Technology Innovation in Amrit Kaal and Achievements@75'. The exhibition will act as a platform for people from the research and industrial sectors to interact with the general public.

The exhibition also emphasizes the various scientific activities in different parts of the country highlighting the art, culture, and traditions of the regions. By providing a deeper glimpse into the research expanding the bounds of human knowledge, the scientific exhibition hopes to enhance awareness and interest in this area among a wide range of audiences, including students from schools, colleges, and universities.

Partners in business, academia, the scientific [community](#), government, policymakers, journalists, and members of the public are included in the initiative's outreach efforts. This wide range of attendees is intended to facilitate more communication and collaboration among all parties involved, leading to the fertilisation of new ideas.

IISF 2022 is a collaborative effort of the Govt. of India and Indian state government agencies, including the Ministry of Science and Technology, the Ministry of Earth Sciences, the Department of Atomic Energy, the Department of Space, the Government of Madhya Pradesh, and the Government of India. The festival is centrally coordinated by the Department of Biotechnology, Ministry of Science & Technology. Vijnana Bharati (VIBHA) will serve as the knowledge partner, with the Madhya Pradesh Council of Science and



Technology (MPCOST) as the local partner. The Department of Biotechnology's Regional Centre for Biotechnology (RCB) in Faridabad is spearheading the festival's planning.

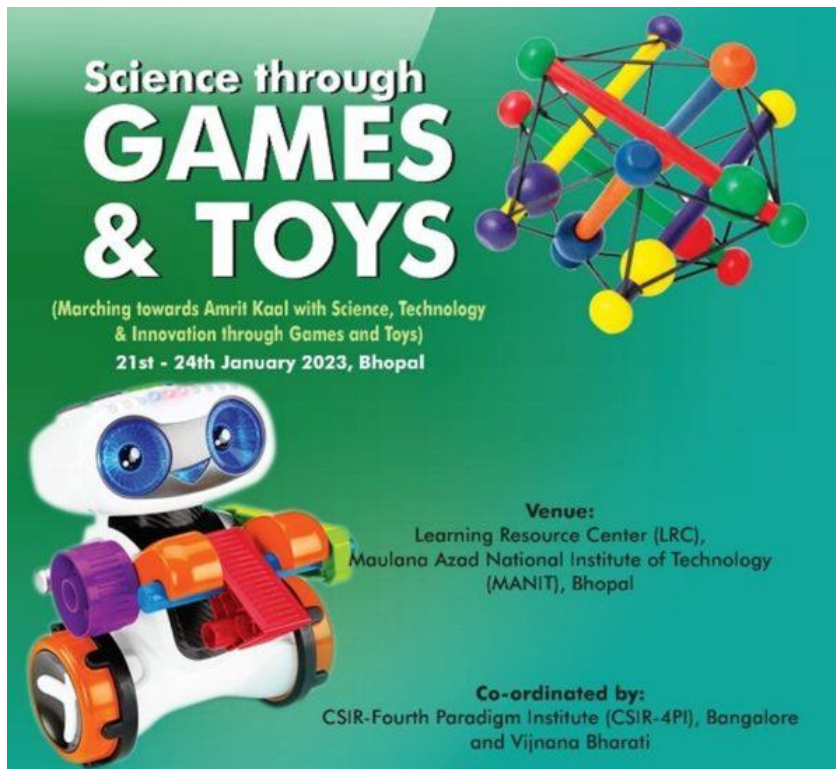
Apart from various central and state government departments; research institutions, educational institutions, universities, artisans and NGOs are invited to participate in the mega exhibition at Bhopal from 21st to 24th January 2023. There is also a provision for sponsoring the event under different categories.



Science Through Games and Toys

Article By : India Science Wire

2023-01-19



The event "Science with Games and Toys" synchronizes well with the 8th edition of the India International Science Festival (IISF) 2022 on the theme "Marching towards Amrit Kaal with Science, Technology and Innovation".

A child enjoys playing with toys, as they engage child's senses, and spark their imagination. Most of us remember the science behind many of those childhood games. Only during the secondary level of the school, we realized that toy cars function based on potential and kinetic energy. And while at the higher

secondary level, we understood the nitty gritty that by changing the shape of the material, energy is stored and then released as motion.

The event “Science with Games and Toys” synchronizes well with the 8th edition of the India International Science Festival (IISF) 2022 on the theme “Marching towards Amrit Kaal with Science, Technology and Innovation”. The event will be organized at the Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, from January 21-24, 2023. If well received and accepted by the community, it can be used as a teaching pedagogy leading towards popularization of science among students.

In the curtain raiser program, Dr. Ajay Sood, the Principal Scientific Advisor to the Govt. of India, stressed the need to integrate science with our thinking process, celebrating it as a festival and suggested distributing games and toys in schools.

“It will enable the students to learn its technology with a hands-on experience in a scientific manner,” said Dr. Sood.

Games and toys provide one of the best tools to impart knowledge and learn science, joyfully and entertainingly. Abacus is one of the best games of learn mathematics, matching the color code of a cube enables better hand-eye coordination. Screwing the key for a monkey to dance or a toy train to roll upon the tracks helps develop sensory and motor nerves. The traditional Indian toys worked upon a scientific principle and were not just used for fun purposes but played an essential role in learning skills. With the advancements in science and technology, new vistas have opened up for creative and imaginative people to develop games and toys of a new age.

India has a rich tradition of local toys and has talented and skilled artisans with expertise in making good toys. Indian toy industries have opportunities to proliferate in this space. IISF provides a platform to showcase traditional, innovative, creative, and modern toys by traditional toy makers and new start-ups in a spirit of vocal for local toys. The program hosts sessions and workshops for students to motivate the development of mental concentration and logical thinking and the science behind the development of games and toys.

IISF is a festival to celebrate the achievements of India's scientific and technological advancements with students, innovators, artisans, farmers, industrialists, entrepreneurs, artisans, policy makers, scientists, and technocrats from India and abroad. Celebrating IISF 2022 during India's presidency of the G20 Summit gives an additional edge to showcase Indian scientific accomplishments globally. The activities during the festival will foster the global theme of G20 - "One Earth, One Family, One Future."

Engagement of common people with science in a joyful manner is essential for the healthy, prosperous and meaningful life. Through its creative programs and activities, IISF provides opportunities to people and the scientific fraternity in the country and abroad to come together, work together, and experience the joy of doing science for the well-being of India and humanity.

The India International Science Festival aims to engage the public with science, celebrate the joy of science, and show how science, technology, engineering and mathematics (STEM) provide us with the solutions to improve our lives.



Science through games and toys

by [India Science Wire](#) [January 12, 2023](#) in [Science](#)



A child enjoys playing with toys, as they engage child's senses, and spark their imagination. Most of us remember the science behind many of those childhood games. Only during the secondary level of the school, we realized that toy cars function based on potential and kinetic energy. And while at the Higher Secondary level, we understood the nitty gritty that by changing the shape of the material, energy is stored and then released as motion.

The event "Science with Games and Toys" synchronizes well with the 8th edition of the India International Science Festival (IISF) 2022 on the theme 'Marching towards Amrit Kaal with Science, Technology and Innovation'. The event will be organised at Maulana Azad National Institute of



Technology (MANIT), Bhopal, from January 21-24, 2023. If well received and accepted by the community, it can be used as a teaching pedagogy leading towards popularization of science among school students.

In the curtain raiser program, Dr Ajay Sood, the Principal Scientific Advisor to the Govt. of India, stressed the need to integrate science with our thinking process, celebrating it as a festival and suggested distributing games and toys in schools. 'It will enable the students to learn its technology with a hands-on experience in a scientific manner,' said Dr Sood.

Games and toys provide one of the best tools to impart knowledge and learn science, joyfully and entertainingly. Abacus is one of the best games of learn mathematics, matching the colour code of a cube enables better hand-eye coordination. Screwing the key for a monkey to dance or a toy train to roll upon the tracks helps develop sensory and motor nerves. The traditional Indian toys worked upon a scientific principle and were not just used for fun purposes but played an essential role in learning skills. With the advancements in science and technology, new vistas have opened up for creative and imaginative people to develop games and toys of a new age.

India has a rich tradition of local toys and has talented and skilled artisans with expertise in making good toys. Indian toy industries have opportunities to proliferate in this space. IISF provides a platform to showcase traditional, innovative, creative, and modern toys by traditional toy makers and new start-ups in a spirit of vocal for local toys. The program hosts sessions and workshops for students to motivate the development of mental concentration and logical thinking and the science behind the development of games and toys.

IISF is a festival to celebrate the achievements of India's scientific and technological advancements with students, innovators, artisans, farmers, industrialists, entrepreneurs, artisans, policy makers, scientists, and technocrats



from India and abroad. Celebrating IISF 2022 during India's presidency of the G20 Summit gives an additional edge to showcase Indian scientific accomplishments globally. The activities during the festival will foster the global theme of G20 - "One Earth, One Family, One Future."

Engagement of common people with science in a joyful manner is essential for the healthy, prosperous and meaningful life. Through its creative programs and activities, IISF provides opportunities to people and the scientific fraternity in the country and abroad to come together, work together, and experience the joy of doing science for the well-being of India and humanity.

The India International Science Festival aims to engage the public with science, celebrate the joy of science, and show how science, technology, engineering and mathematics (STEM) provide us with the solutions to improve our lives. (India Science Wire)





New Delhi: Science through games and toys

News जनवरी 12, 2023

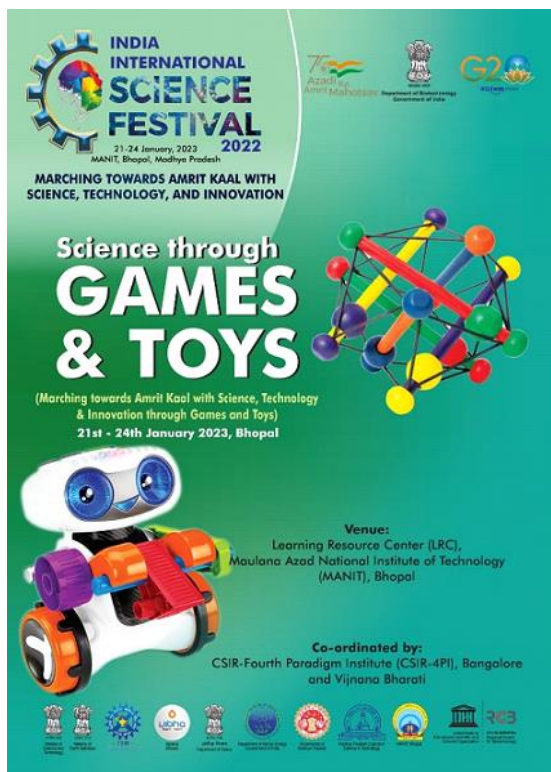
[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

New Delhi: (India Science Wire) A child enjoys playing with toys, as they engage child's senses, and spark their imagination. Most of us remember the science behind many of those childhood games. Only during the secondary level of the school, we realized that toy cars function based on potential and kinetic energy. And while at the Higher Secondary level, we understood the nitty gritty that by changing the shape of the material, energy is stored and then released as motion.

The event "Science with Games and Toys" synchronizes well with the 8th edition of the India International Science Festival (IISF) 2022 on the theme 'Marching towards Amrit Kaal with Science, Technology and Innovation'. The event will be organised at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, from January 21-24, 2023. If well received and accepted by the community, it can be used as a teaching pedagogy leading towards popularization of science among school students.

In the curtain raiser program, Dr Ajay Sood, the Principal Scientific Advisor to the Govt. of India, stressed the need to integrate science with our thinking process, celebrating it as a festival and suggested distributing games and toys in schools. 'It will enable the students to learn its technology with a hands-on experience in a scientific manner,' said Dr Sood.





Games and toys provide one of the best tools to impart knowledge and learn science, joyfully and entertainingly. Abacus is one of the best games of learn mathematics, matching the colour code of a cube enables better hand-eye coordination. Screwing the key for a monkey to dance or a toy train to roll upon the tracks helps develop sensory and motor nerves. The traditional Indian toys worked upon a scientific principle and were not just used for fun purposes but played an essential role in learning skills. With the advancements in science and technology, new vistas have opened up for creative and imaginative people to develop games and toys of a new age.

India has a rich tradition of local toys and has talented and skilled artisans with expertise in making good toys. Indian toy industries have opportunities to proliferate in this space. IISF provides a platform to showcase traditional, innovative, creative, and modern toys by traditional toy makers and new start-ups in a spirit of vocal for local toys. The program hosts sessions and workshops for students to motivate the development of mental concentration

and logical thinking and the science behind the development of games and toys.

IISF is a festival to celebrate the achievements of India's scientific and technological advancements with students, innovators, artisans, farmers, industrialists, entrepreneurs, artisans, policy makers, scientists, and technocrats from India and abroad. Celebrating IISF 2022 during India's presidency of the G20 Summit gives an additional edge to showcase Indian scientific accomplishments globally. The activities during the festival will foster the global theme of G20 - "One Earth, One Family, One Future."

Engagement of common people with science in a joyful manner is essential for the healthy, prosperous and meaningful life. Through its creative programs and activities, IISF provides opportunities to people and the scientific fraternity in the country and abroad to come together, work together, and experience the joy of doing science for the well-being of India and humanity.

The India International Science Festival aims to engage the public with science, celebrate the joy of science, and show how science, technology, engineering and mathematics (STEM) provide us with the solutions to improve our lives.

(India Science Wire)

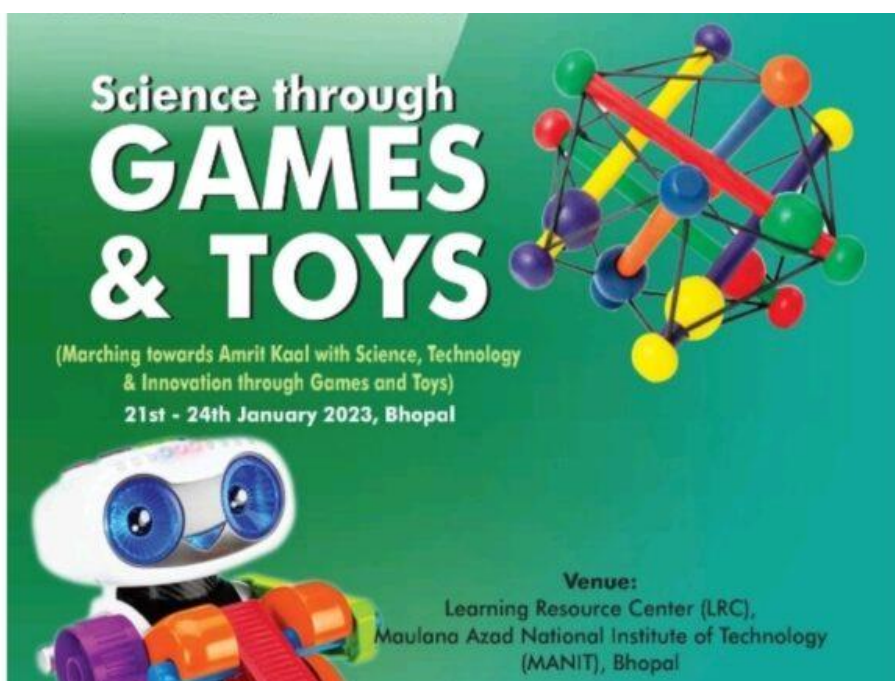


Science through games and toys

#KCScienceCommunication

SCIENCE

By Online Editor On Jan 11, 2023



□ New Delhi, Jan 11 (India Science Wire): A child enjoys playing with toys, as they engage child's senses, and spark their imagination. Most of us remember the science behind many of those childhood games. Only during the secondary level of the school, we realized that toy cars function based on potential and kinetic energy. And while at the Higher Secondary level, we understood the nitty gritty that by changing the shape of the material, energy is stored and then released as motion.

The event “Science with Games and Toys” synchronizes well with the 8th edition of the India International Science Festival (IISF) 2022 on the theme 'Marching towards Amrit Kaal with Science, Technology and Innovation'. The event will be organised at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, from January 21-24, 2023. If well received and accepted by the community, it can be used as a teaching pedagogy leading towards popularization of science among school students.

In the curtain raiser program, Dr Ajay Sood, the Principal Scientific Advisor to the Govt. of India, stressed the need to integrate science with our thinking process, celebrating it as a festival and suggested distributing games and toys in schools. ‘It will enable the students to learn its technology with a hands-on experience in a scientific manner,’ said Dr Sood.

Games and toys provide one of the best tools to impart knowledge and learn science, joyfully and entertainingly. Abacus is one of the best games of learn mathematics, matching the colour code of a cube enables better hand-eye coordination. Screwing the key for a monkey to dance or a toy train to roll upon the tracks helps develop sensory and motor nerves. The traditional Indian toys worked upon a scientific principle and were not just used for fun purposes but played an essential role in learning skills. With the advancements in science and technology, new vistas have opened up for creative and imaginative people to develop games and toys of a new age.

India has a rich tradition of local toys and has talented and skilled artisans with expertise in making good toys. Indian toy industries have opportunities to proliferate in this space. IISF provides a platform to showcase traditional, innovative, creative, and modern toys by traditional toy makers and new start-ups in a spirit of vocal for local toys. The program hosts sessions and workshops for students to motivate the development of mental concentration



and logical thinking and the science behind the development of games and toys.

IISF is a festival to celebrate the achievements of India's scientific and technological advancements with students, innovators, artisans, farmers, industrialists, entrepreneurs, artisans, policy makers, scientists, and technocrats from India and abroad. Celebrating IISF 2022 during India's presidency of the G20 Summit gives an additional edge to showcase Indian scientific accomplishments globally. The activities during the festival will foster the global theme of G20 - "One Earth, One Family, One Future."

Engagement of common people with science in a joyful manner is essential for the healthy, prosperous and meaningful life. Through its creative programs and activities, IISF provides opportunities to people and the scientific fraternity in the country and abroad to come together, work together, and experience the joy of doing science for the well-being of India and humanity.

The India International Science Festival aims to engage the public with science, celebrate the joy of science, and show how science, technology, engineering and mathematics (STEM) provide us with the solutions to improve our lives. (India Science Wire)



साइंस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में करियर और बिजनेस अपॉर्चुनिटी, MANIT BHOPAL में वैज्ञानिक बताएंगे

NEWS ROOM January 11, 2023



भोपाल। 21 से 24 जनवरी 2023 के दौरान भोपाल में आयोजित होने वाले “इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (IISF)” में युवाओं और उद्यमियों को वज्ञानप्रौद्योगिकी क्षेत्र की अपार - संभावनाओं से परिचित कराने और मार्गदर्शन के लिए आयोजित किया जा रहा “सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)” कार्यक्रम, इन प्रयासों का हिस्सा है।

इस वर्ष, IISF में कंसलटेंसी डेस्क स्थापित करने के डॉ. सिंह के सुझाव के बाद, सलाह और परामर्श को इस आईआईएसएफ में एक नये आयाम के रूप में जोड़ा गया है। (वैज्ञानिक चर्चा) संभावित वैज्ञानिक और तकनीकी करियर ऑप्शन और इनोवेशन के बारे में शुरू की गई यह पहल छात्रों और उनके अभिभावकों का भी मार्गदर्शन करने में सहायक होगी। तीन दिनों (22 से

24 जनवरी तक चलने वाले (“सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)”) के व भन्न सत्रों में देशभर से आये वैज्ञानिक और वषय वशेषज्ञ; चर्चा, सलाह और परामर्श हेतु उपलब्ध रहेंगे।

“सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)” कार्यक्रम में स्कूल और कॉलेज के छात्रों को वज्ञान, प्रौद्यो गकी, इंजीनियरिंग और गणत से जुडे वशेषज्ञों के साथ बातचीत करने का (एसटीईएम) अवसर मलेगा। यहाँ पर छात्र वज्ञान और प्रौद्यो गकी से संबं धत व भन्न पहलुओं पर वशेषज्ञों के साथ वस्तार से चर्चा कर पायेंगे। इसके साथ ही, कार्यक्रम में छात्रों को वज्ञान के क्षेत्र में शक्षा, शोध से जुडे अपनी रुच के वषयों और करियर के बारे में भी सलाह और परामर्श मल सकेगा।

छात्रों और उद्यमी युवाओं के साथसाथ उनके अभभावक-, शक्षक आदि भी बच्चों के करियर-प्रौद्यो गकी क्षेत्र की ओर उन्मुख और प्रोत्साहित करने -वकल्पो को समझने और उन्हें वज्ञान हेतु क्या क्या जाए; यह जानने और समझने के लए मार्गदर्शन ले पाएंगे। वज्ञान की ओर छात्राओं और महिलाओं का झुकाव हो, वज्ञान को लेकर उनके मन में जो भांतियां और डर है, वह दूर हो और वो संभावनाओं के नये क्षतिज तलाश सकें, इसके लये भी वशेषज्ञों का मार्गदर्शन उपलब्ध होगा।

वज्ञान व वैज्ञानिक चर्चा से जुडे इस फोरम पर देशभर की प्रमुख शैक्षणक और शोध संस्थाएं हिस्सा लेंगी। व भन्न शैक्षणक और अनुसंधान संगठनों के वशेषज्ञ “परामर्श फोरम” पर इन प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश पाने के लए प्रक्रयाओं और आवश्यकताओं के बारे में छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे। वहीं दूसरी तरफ “नॉलेज गेटवे” के तहत तेजी से बढ़ती प्रौद्यो गकी और वज्ञान के क्षेत्र में हो रहे वकास और बदलाव के साथसाथ वज्ञान के क्षेत्र में करियर पर भी -वशेषज्ञ सलाह उपलब्ध होगी, जिसमें डेटा वश्लेषण, कंप्यूटर वज्ञान और प्रौद्यो गकी, अकाद मक अनुसंधान, अंतरिक्ष वज्ञान, वज्ञान संचार आदि क्षेत्र शा मल हैं।

भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। आजादी के इस अमृतकाल में भारत को वकसत और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में वश्व पटल पर प्रदर्शत करना है तो देश के नौजवानों, छात्रों और उभरते उद्य मयों के बीच वज्ञान और वैज्ञानिक सोच को ले जाना होगा। इस दिशा में इंडया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल जैसे (आईआईएसएफ) आयोजनों की भूमका महत्वपूर्ण हो जाती है।

आईआईएसएफ का आयोजन पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्यो गकी वभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्यो गकी वभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्यो गक अनुसंधान परिषद द्वार (सीएसआईआर) ा मध्य प्रदेश सरकार; मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्यो गकी

परिषद; और वज्ञान भारती के सहयोग से कया जा रहा है। अंतरिक्ष वभाग और परमाणु ऊर्जा वभाग की सहभा गता भी इस वर्ष आईआईएसएफ में होगी।

आईआईएसएफ एक वा र्षक आयोजन है, जिसने वर्ष 2015 में अपनी यात्रा शुरू की थी। इसका 8वाँ संस्करण 21-24 जनवरी 2023 को मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्यो गकी संस्थान (मानित), भोपाल में आयोजित कया जाएगा।(इं डया साइंस वायर)





नवयुग संदेश

वशेषज्ञ देंगे वज्ञानप्रौद्योगिकी में करियर और - परामर्श-उद्यमता संबंधी सलाह

By Navyug Sandesh -11/01/2023



नई दिल्ली, 11 जनवरी, (इंडिया साइंस वायर भारत युवाओं का देश है। आगामी :25 वर्षों के 'अमृतकाल' में विशेषकर वज्ञान के क्षेत्र में युवाओं और नवउद्यमियों की सक्रय और उत्साही प्रतिभा गता द्वारा हम आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की ओर तत्परता से बढ़ सकते हैं। भारत सरकार और व भन्न संस्थानों द्वारा इस दिशा में अनेक प्रयास कये जा रहे हैं। 21 से 24 जनवरी 2023 के दौरान भोपाल में आयोजित होने वाले "इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल आईआईएसएफ(" में युवाओं और उद्यमियों को वज्ञानप्रौद्योगिकी क्षेत्र की अपार -

संभावनाओं से परिचित कराने और मार्गदर्शन के लिए आयोजित किया जा रहा “सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)” कार्यक्रम इन प्रयासों का हिस्सा है।

केंद्रीय राज्य मंत्री वज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कामक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है कि “भविष्य उनका है जिनके पास नवोन्मेषी वचार और नये लक्ष्य हैं, और उन्हें प्राप्त करने का दृढ़ वश्वास और साहस है।”

इस वर्ष, आईआईएसएफ में परामर्श डेस्क स्थापित करने के डॉ सिंह के सुझाव के बाद, सलाह और परामर्श को इस आईआईएसएफ में एक नये आयाम के रूप में जोड़ा गया (वैज्ञानिक चर्चा) है। संभावित वैज्ञानिक और तकनीकी करियर वकल्पों और नवाचारों के बारे में शुरू की गई यह पहल छात्रों और उनके अभिभावकों का भी मार्गदर्शन करने में सहायक होगी। तीन दिनों 22 से 24 जनवरी तक चलने वाले (“सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)” के वभिन्न सत्रों में देशभर से आये वैज्ञानिक और विषय विशेषज्ञ; चर्चा, सलाह और परामर्श हेतु उपलब्ध रहेंगे।

“सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)” कार्यक्रम में स्कूल और कॉलेज के छात्रों को वज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित से जुड़े विशेषज्ञों के साथ बातचीत करने का (एसटीईएम) अवसर मलेगा। यहाँ पर छात्र वज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित वभिन्न पहलुओं पर विशेषज्ञों के साथ वस्तुतः से चर्चा कर पायेंगे। इसके साथ ही, कार्यक्रम में छात्रों को वज्ञान के क्षेत्र में शिक्षा, शोध से जुड़े अपनी रुचि के विषयों और करियर के बारे में भी सलाह और परामर्श मिल सकेगा।

छात्रों और उद्यमी युवाओं के साथसाथ उनके अभिभावक-, शिक्षक आदि भी बच्चों के करियर-प्रौद्योगिकी क्षेत्र की ओर उन्मुख और प्रोत्साहित करने - वकल्पों को समझने और उन्हें वज्ञान हेतु क्या किया जाए; यह जानने और समझने के लिए मार्गदर्शन ले पाएंगे। वज्ञान की ओर छात्राओं और महिलाओं का झुकाव हो, वज्ञान को लेकर उनके मन में जो भ्रान्तियाँ और डर है, वह दूर हो और वो संभावनाओं के नये क्षतिज तलाश सकें, इसके लिये भी विशेषज्ञों का मार्गदर्शन उपलब्ध होगा।

वज्ञान व वैज्ञानिक चर्चा से जुड़े इस फोरम पर देशभर की प्रमुख शैक्षणिक और शोध संस्थाएं हिस्सा लेंगी। वभिन्न शैक्षणिक और अनुसंधान संगठनों के विशेषज्ञ “परामर्श फोरम” पर इन



प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश पाने के लिए प्रक्रियाओं और आवश्यकताओं के बारे में छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे। वहीं दूसरी तरफ “नॉलेज गेटवे” के तहत तेजी से बढ़ती प्रौद्योगिकी और विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे विकास और बदलाव के साथसाथ विज्ञान के क्षेत्र में करियर पर भी विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध होगी, जिसमें डेटा विश्लेषण, कंप्यूटर विज्ञान और प्रौद्योगिकी, अकादमिक अनुसंधान, अंतरिक्ष विज्ञान, विज्ञान संचार आदि क्षेत्र शामिल हैं।

भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। आजादी के इस अमृतकाल में भारत को एक सत और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर प्रदर्शित करना है तो देश के नौजवानों, छात्रों और उभरते उद्यमियों के बीच विज्ञान और वैज्ञानिक सोच को ले जाना होगा। इस दिशा में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल जैसे (आईआईएसएफ) आयोजनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

आईआईएसएफ का आयोजन पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा (सीएसआईआर) मध्य प्रदेश सरकार; मध्य प्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद; और विज्ञान भारती के सहयोग से किया जा रहा है। अंतरिक्ष विभाग और परमाणु ऊर्जा विभाग की सहभागिता भी इस वर्ष आईआईएसएफ में होगी।

आईआईएसएफ एक वार्षिक आयोजन है, जिसने वर्ष 2015 में अपनी यात्रा शुरू की थी। इसका 8वाँ संस्करण 21-24 जनवरी 2023 को मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (मानित), भोपाल में आयोजित किया जाएगा।

(इंडिया साइंस वायर)



वज्ञान-प्रौद्योगिकी में करियर और उद्यमता संबंधी सलाह-परामर्श

January 12, 2023 by Dialogue India

भारत युवाओं का देश है। आगामी 25 वर्षों के 'अमृतकाल' में विशेषकर वज्ञान के क्षेत्र में युवाओं और नव-उद्यमियों की सक्रय और उत्साही प्रतिभा गता द्वारा हम आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की ओर तत्परता से बढ़ सकते हैं। भारत सरकार और व भन्न संस्थानों द्वारा इस दिशा में अनेक प्रयास कये जा रहे हैं।

21 से 24 जनवरी 2023 के दौरान भोपाल में आयोजित होने वाले "इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)" में युवाओं और उद्यमियों को वज्ञान-प्रौद्योगिकी क्षेत्र की अपार संभावनाओं से परिचय कराने और मार्गदर्शन के लए आयोजित कया जा रहा "सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)" कार्यक्रम इन प्रयासों का हिस्सा है।

केंद्रीय राज्य मंत्री वज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, का र्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क "भ वष्य उनका है जिनके पास नवोन्मेषी वचार और नये लक्ष्य हैं, और उन्हें प्राप्त करने का दृढ वश्वास और साहस है।"

इस वर्ष, आईआईएसएफ में परामर्श डेस्क स्थापित करने के डॉ सिंह के सुझाव के बाद, सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा) को इस आईआईएसएफ में एक नये आयाम के रूप में जोड़ा गया है। संभावित वैज्ञानिक और तकनीकी करियर विकल्पों और नवाचारों के बारे में शुरू की गई यह पहल छात्रों और उनके अभिभावकों का भी मार्गदर्शन करने में सहायक होगी। तीन दिनों (22 से 24 जनवरी) तक चलने वाले "सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)" के व भन्न सत्रों में देशभर से आये वैज्ञानिक और वषय विशेषज्ञ; चर्चा, सलाह और परामर्श हेतु उपलब्ध रहेंगे।



“सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)” कार्यक्रम में स्कूल और कॉलेज के छात्रों को वज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणत (एसटीईएम) से जुड़े विशेषज्ञों के साथ बातचीत करने का अवसर मलेगा। यहाँ पर छात्र वज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित व भन्न पहलुओं पर विशेषज्ञों के साथ वस्तार से चर्चा कर पायेंगे। इसके साथ ही, कार्यक्रम में छात्रों को वज्ञान के क्षेत्र में शक्षा, शोध से जुड़े अपनी रुच के वषयों और करियर के बारे में भी सलाह और परामर्श मल सकेगा।

छात्रों और उद्यमी युवाओं के साथ-साथ उनके अभभावक, शक्षक आदि भी बच्चों के करियर-वकल्पों को समझने और उन्हें वज्ञान-प्रौद्योगिकी क्षेत्र की ओर उन्मुख और प्रोत्साहित करने हेतु क्या क्या जाए; यह जानने और समझने के लए मार्गदर्शन ले पाएंगे। वज्ञान की ओर छात्राओं और महिलाओं का झुकाव हो, वज्ञान को लेकर उनके मन में जो भांतियां और डर है, वह दूर हो और वो संभावनाओं के नये क्षतिज तलाश सकें, इसके लये भी विशेषज्ञों का मार्गदर्शन उपलब्ध होगा।

वज्ञान व वैज्ञानिक चर्चा से जुड़े इस फोरम पर देशभर की प्रमुख शैक्षणिक और शोध संस्थाएं हिस्सा लेंगी। व भन्न शैक्षणिक और अनुसंधान संगठनों के विशेषज्ञ “परामर्श फोरम” पर इन प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश पाने के लए प्रक्रयाओं और आवश्यकताओं के बारे में छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे। वहीं दूसरी तरफ “नॉलेज गेटवे” के तहत तेजी से बढ़ती प्रौद्योगिकी और वज्ञान के क्षेत्र में हो रहे वकास और बदलाव के साथ-साथ वज्ञान के क्षेत्र में करियर पर भी विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध होगी, जिसमें डेटा वश्लेषण, कंप्यूटर वज्ञान और प्रौद्योगिकी, अकादमिक अनुसंधान, अंतरिक्ष वज्ञान, वज्ञान संचार आदि क्षेत्र शामिल हैं।

भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। आजादी के इस अमृतकाल में भारत को वकसत और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में वश्व पटल पर प्रदर्शित करना है तो देश के नौजवानों, छात्रों और उभरते उद्यमियों के बीच वज्ञान और वैज्ञानिक सोच को ले जाना होगा। इस दिशा में इंडया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) जैसे आयोजनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

आईआईएसएफ का आयोजन पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी वभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी वभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) द्वारा मध्य प्रदेश सरकार; मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद;



और वज्ञान भारती के सहयोग से कया जा रहा है। अंतरिक्ष वभाग और परमाणु ऊर्जा वभाग की सहभा गता भी इस वर्ष आईआईएसएफ में होगी। आईआईएसएफ एक वा र्षक आयोजन है, जिसने वर्ष 2015 में अपनी यात्रा शुरू की थी। इसका 8वाँ संस्करण 21-24 जनवरी 2023 को मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्यो गकी संस्थान (मानित), भोपाल में आयोजित कया जाएगा।



नई दिल्ली। विशेषज्ञ देंगे वज्ञानप्रौद्योगिकी में करियर और - परामर्श।-उद्यमता संबंधी सलाह

News जनवरी 12, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली (इंडिया साइंस वायर):(भारत युवाओं का देश है। आगामी 25 वर्षों के 'अमृतकाल' में विशेषकर वज्ञान के क्षेत्र में युवाओं और नवउद्यमियों की सक्रय और उत्साही प्रतिभा गता - द्वारा हम आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की ओर तत्परता से बढ़ सकते हैं। भारत सरकार और व भन्न संस्थानों द्वारा इस दिशा में अनेक प्रयास कये जा रहे हैं।21 से 24 जनवरी 2023 के दौरान भोपाल में आयोजित होने वाले "इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)" में युवाओं और उद्यमियों को वज्ञानप्रौद्योगिकी क्षेत्र की अपार संभावनाओं से परिचय कराने - और मार्गदर्शन के लए आयोजित कया जा रहा "सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)" कार्यक्रम इन प्रयासों का हिस्सा है।



केंद्रीय राज्य मंत्री वज्ञान और प्रौद्योगिकी एवं पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (स्वतंत्र प्रभार), प्रधानमंत्री कार्यालय, कामक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क भवष्य उनका है जिनके पास" नवोन्मेषी वचार और नये लक्ष्य हैं, और उन्हें प्राप्त करने का दृढ वश्वास और साहस है।"

इस वर्ष, आईआईएसएफ में परामर्श डेस्क स्थापित करने के डॉ सिंह के सुझाव के बाद, सलाह और परामर्श को इस आईआईएसएफ में एक नये आयाम के रूप में जोड़ा गया (वैज्ञानिक चर्चा) है। संभावित वैज्ञानिक और तकनीकी करियर वकल्पों और नवाचारों के बारे में शुरू की गई यह पहल छात्रों और उनके अभिभावकों का भी मार्गदर्शन करने में सहायक होगी। तीन दिनों 22 से 24 जनवरी तक चलने वाले ("सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)" के वभन्न सत्रों में देशभर से आये वैज्ञानिक और वषय वशेषज्ञ; चर्चा, सलाह और परामर्श हेतु उपलब्ध रहेंगे।

"सलाह और परामर्श (वैज्ञानिक चर्चा)" कार्यक्रम में स्कूल और कॉलेज के छात्रों को वज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणत से जुड़े वशेषज्ञों के साथ बातचीत करने का (एसटीईएम) अवसर मलेगा। यहाँ पर छात्र वज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित वभन्न पहलुओं पर वशेषज्ञों के साथ वस्तार से चर्चा कर पायेंगे। इसके साथ ही, कार्यक्रम में छात्रों को वज्ञान के क्षेत्र में शक्षा, शोध से जुड़े अपनी रुच के वषयों और करियर के बारे में भी सलाह और परामर्श मल सकेगा।

छात्रों और उद्यमी युवाओं के साथसाथ उनके अभिभावक-, शक्षक आदि भी बच्चों के करियर-प्रौद्योगिकी क्षेत्र की ओर उन्मुख और प्रोत्साहित करने - वकल्पों को समझने और उन्हें वज्ञान हेतु क्या क्या जाए; यह जानने और समझने के लए मार्गदर्शन ले पाएंगे। वज्ञान की ओर छात्राओं और महिलाओं का झुकाव हो, वज्ञान को लेकर उनके मन में जो भांतियां और डर है, वह दूर हो और वो संभावनाओं के नये क्षतिज तलाश सकें, इसके लये भी वशेषज्ञों का मार्गदर्शन उपलब्ध होगा।





वज्ञान व वैज्ञानिक चर्चा से जुड़े इस फोरम पर देशभर की प्रमुख शैक्षणिक और शोध संस्थाएं हिस्सा लेंगी। व भन्न शैक्षणिक और अनुसंधान संगठनों के विशेषज्ञ “परामर्श फोरम” पर इन प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश पाने के लिए प्रक्रियाओं और आवश्यकताओं के बारे में छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे। वहीं दूसरी तरफ “नॉलेज गेटवे” के तहत तेजी से बढ़ती प्रौद्योगिकी और वज्ञान के क्षेत्र में हो रहे विकास और बदलाव के साथसाथ वज्ञान के क्षेत्र में करियर पर भी - विशेषज्ञ सलाह उपलब्ध होगी, जिसमें डेटा विश्लेषण, कंप्यूटर वज्ञान और प्रौद्योगिकी, अकादमिक अनुसंधान, अंतरिक्ष वज्ञान, वज्ञान संचार आदि क्षेत्र शामिल हैं।

भारत अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहा है। आजादी के इस अमृतकाल में भारत को एक सत और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर प्रदर्शित करना है तो देश के नौजवानों, छात्रों और उभरते उद्यमियों के बीच वज्ञान और वैज्ञानिक सोच को ले जाना होगा। इस दिशा में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल जैसे (आईआईएसएफ) आयोजनों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

आईआईएसएफ का आयोजन पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय (एमओईएस); वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी); जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी); वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा मध्य प्रदेश सरकार (सीएसआईआर); मध्य प्रदेश वज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद;

और वज्ञान भारती के सहयोग से कया जा रहा है। अंतरिक्ष वभाग और परमाणु ऊर्जा वभाग की सहभा गता भी इस वर्ष आईआईएसएफ में होगी।

आईआईएसएफ एक वा र्षक आयोजन है, जिसने वर्ष 2015 में अपनी यात्रा शुरू की थी। इसका 8वाँ संस्करण 21-24 जनवरी 2023 को मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्यो गकी संस्थान (मानित), भोपाल में आयोजित कया जाएगा। (इं डया साइंस वायर)



IISF 2022: Startup Conclave to Focus on Biotech Innovation Ecosystem

During the last 2 years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108.

By Team DP On Jan 13, 2023



India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the US and China. During the last two years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108. Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15%.

The 8th edition of India International Science Festival (IISF2022), which will be organised from 21-24 January 2023 at Maulana Azad National Institute of Technology(MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would focus on the Biotech Innovation ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency set up by the DBT.

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution.

The four major elements of the Conclave include an exhibition of innovative products and technologies by startups in various fields; exhibits by Incubators offering enabling services and shared infrastructure; focused discussions on startup challenges and opportunities; and guidance on availing enabling opportunities under the Startup India mission.

Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres.

India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60% of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the Atmanirbhar Bharat. Young minds should be encouraged to look for affordable innovations to tackle various social issues. With effective diffusion of innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting holistic growth, especially for rural regions.

For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr. Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in



Ahmedabad in September 2022, said, “Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting-edge and globally competitive products and solutions.”

A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from experts.



IISF 2022: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem

January 13, 2023 by Dialogue India

New Delhi, January 12 (India Science Wire): India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the US and China. During the last 2 years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108.

Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15%. The 8 th edition of India International Science Festival (IISF2022), which will be organized from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would have a particular focus on the Biotech Innovation ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency, set up by the DBT. The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution. The four major elements of the Conclave include an exhibition of innovative products and technologies by startups in various fields; exhibits by Incubators offering enabling services and shared infrastructure; focused discussions on startup challenges and opportunities; and guidance on availing enabling opportunities under Startup India mission. Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the



emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres. India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60% of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the Atmanirbhar Bharat. The young minds should be encouraged to look for affordable innovations to tackle a wide range of social issues. With effective diffusion of the innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting a holistic growth, especially for the rural regions. For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr. Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in Ahmedabad in September 2022, said, "Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting- edge and globally competitive products and solutions." A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from the experts.





New Delhi: IISF 2022: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem

News जनवरी 13, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

New Delhi (India Science Wire): India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the US and China. During the last 2 years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108. Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15%. The 8th edition of India International Science Festival (IISF2022), which will be organised from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would have a particular focus on the Biotech Innovation ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency, set up by the DBT.

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution.





The four major elements of the Conclave include an exhibition of innovative products and technologies by startups in various fields; exhibits by Incubators offering enabling services and shared infrastructure; focused discussions on startup challenges and opportunities; and guidance on availing enabling opportunities under Startup India mission.

Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres.

India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60% of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the



Atmanirbhar Bharat. The young minds should be encouraged to look for affordable innovations to tackle a wide range of social issues. With effective diffusion of the innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting a holistic growth, especially for the rural regions.

For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr. Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in Ahmedabad in September 2022, said, “Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting-edge and globally competitive products and solutions.” A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from the experts.



IISF 2022: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres

By **BioVoice News Desk** - January 13, 2023



New Delhi: India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the US and China. During the last 2 years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108. Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15%. The 8th edition of India International Science Festival (IISF2022), which will be organized from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would have a particular focus on the Biotech Innovation ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency, set up by the DBT.

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution.

The four major elements of the Conclave include an exhibition of innovative products and technologies by startups in various fields; exhibits by Incubators offering enabling services and shared infrastructure; focused discussions on startup challenges and opportunities; and guidance on availing enabling opportunities under Startup India mission.

Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres.



India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60% of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the Atmanirbhar Bharat. The young minds should be encouraged to look for affordable innovations to tackle a wide range of social issues. With effective diffusion of the innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting a holistic growth, especially for the rural regions.

For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr. Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in Ahmedabad in September 2022, said, “Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting-edge and globally competitive products and solutions.”

A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from the experts.

Source: India Science Wire



IISF 2022: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem

India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the US and China. During the last 2 years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108. Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15%.

The 8th edition of India International Science Festival (IISF2022), which will be organised from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would have a particular focus on the Biotech Innovation ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency, set up by the DBT.

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution.

The four major elements of the Conclave include an exhibition of innovative products and technologies by startups in various fields; exhibits by Incubators offering enabling services and shared infrastructure; focused discussions on startup challenges and opportunities; and guidance on availing enabling opportunities under Startup India mission.

Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer



excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres.

India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60% of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the Atmanirbhar Bharat. The young minds should be encouraged to look for affordable innovations to tackle a wide range of social issues. With effective diffusion of the innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting a holistic growth, especially for the rural regions.

For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr. Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in Ahmedabad in September 2022, said, "Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting-edge and globally competitive products and solutions."

A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from the experts.

CREDIT: India Science Wire



BISinfotech

IISF 2022: Startup Conclave to Focus on Biotech Innovation Ecosystem

Nitisha Dubey January 12, 2023



(India Science Wire): India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the US and China. During the last 2 years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108. Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15%.

The 8th edition of India International Science Festival (IISF2022), which will be organised from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of



Technology (MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would have a particular focus on the Biotech Innovation ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency, set up by the DBT.

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and [startups](#) and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution.

The four major elements of the Conclave include an exhibition of innovative products and technologies by startups in various fields; exhibits by Incubators offering enabling services and shared infrastructure; focused discussions on startup challenges and opportunities; and guidance on availing enabling opportunities under Startup India mission.

Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres.

India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60% of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the Atmanirbhar Bharat. The young minds should be encouraged to look for



affordable innovations to tackle a wide range of social issues. With effective diffusion of the innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting a holistic growth, especially for the rural regions.

For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr. Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in Ahmedabad in September 2022, said, “Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting-edge and globally competitive products and solutions.”

A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from the experts.

IISF 2022: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem

by [India Science Wire](#) [January 18, 2023](#) in [Science](#)



India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the US and China. During the last 2 years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108. Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15%.

The 8th edition of India International Science Festival (IISF2022), which will be organised from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would have a particular focus on the Biotech Innovation ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the



Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency, set up by the DBT.

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution.

The four major elements of the Conclave include an exhibition of innovative products and technologies by startups in various fields; exhibits by Incubators offering enabling services and shared infrastructure; focused discussions on startup challenges and opportunities; and guidance on availing enabling opportunities under Startup India mission.

Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres.

India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60% of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the Atmanirbhar Bharat. The young minds should be encouraged to look for affordable innovations to tackle a wide range of social issues. With effective diffusion of the innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting a holistic growth, especially for the rural regions.

For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science



& Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr. Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in Ahmedabad in September 2022, said, “Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting-edge and globally competitive products and solutions.”

A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from the experts.



India International Science Festival 2023: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem

[Jan 13, 2023, 11:00 pm IST](#) in [Sci & Tech](#)



[Share on Facebook](#)[Share on Twitter](#)[Telegram](#)[Email](#)

New Delhi (India Science Wire): India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the United States and China. During the last two years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108. Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15 per cent.

The 8th edition of India International Science Festival (IISF 2023), which will be organised from January 21-24, 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would have a particular focus on the Biotech Innovation

ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency set up by the DBT.

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution.

The four major elements of the conclave include:

Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres.

India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60 per cent of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the Atmanirbhar Bharat. Young minds should be encouraged to look for affordable innovations to tackle a wide range of social issues. With effective diffusion of innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting holistic growth, especially for the rural regions.

For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in



Ahmedabad in September 2022, said, “Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting-edge and globally competitive products and solutions.”

A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from the experts.

PRAJA AMARAVATI

ISF 2022: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem

January 12, 2023 • GUDIBANDI SUDHAKAR REDDY

ISF 2022: Startup Conclave to focus on Biotech Innovation Ecosystem

New Delhi, January 12 (India Science Wire) (prajaamaravathi): India has become the third-largest startup ecosystem in the world after the US and China. During the last 2 years, 65 Indian startups achieved unicorn status, taking the overall tally of startup unicorns in India to 108. Startup India, an initiative of the Government of India, projects a YoY growth of 12-15%.

The 8th edition of India International Science Festival (IISF2022), which will be organised from 21-24 January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, has an exclusive event titled 'Startup Conclave'. The conclave would have a particular focus on the Biotech Innovation ecosystem championed by the Department of Biotechnology (DBT) and the Biotechnology Industry Research Assistance Council (BIRAC), an Interface Agency, set up by the DBT.

The conclave will showcase the outcomes of the largest funding schemes in the biotech sector, namely, the Biotech Ignition Grant (BIG) for entrepreneurs and startups and the BioNEST scheme for bio-incubation centres that have completed ten years and have made an immense contribution.

The four major elements of the Conclave include an exhibition of innovative products and technologies by startups in various fields; exhibits by Incubators offering enabling services and shared infrastructure; focused discussions on



startup challenges and opportunities; and guidance on availing enabling opportunities under Startup India mission.

Discussions and communications among the Startups during the event are expected to strengthen and empower the emerging startup ecosystem of India. The event would offer an opportunity to meet people who are part of the startup community in various forms, be it the innovators, the implementing authorities, or researchers supporting the innovations. The event would offer excellent opportunities to learn, understand, and engage with 'science-led' Startups and supporting enablers, especially the Incubation centres.

India has entered the Amrit Kaal, when, in the coming 25 years, it will be a nation having nearly 60% of its population young and active. Fostering the spirit of innovation and entrepreneurship in our youth will help develop the Atmanirbhar Bharat. The young minds should be encouraged to look for affordable innovations to tackle a wide range of social issues. With effective diffusion of the innovations, startup products and services can be replicated in various places, promoting a holistic growth, especially for the rural regions.

For startups and entrepreneurs, it is imperative to ensure the global competitiveness of their products and services. Union Minister of State Science & Technology and Ministry of Earth Sciences (Ind. Charges), Minister of State PMO, PP/DoPT, Atomic Energy, and Space, Dr. Jitendra Singh, while addressing the Centre-State Science Conclave, held at the Science City in Ahmedabad in September 2022, said, "Integration of research, startups, academia, and industry is no longer an option but a dire necessity to attract young innovators in the country, particularly in the states to come out with cutting-edge and globally competitive products and solutions."

A platform like IISF will be the right place to learn tricks of the trade from the experts.



New Delhi: Students' innovation festival to buoy up novel ideas in science and technology.

News जनवरी 17, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

New Delhi (India Science Wire): The Students' Innovation Festival (SIF) is a Launchpad for young minds to present their ingenious ideas, display creativity, and showcase their projects/products. Such avenues help prepare the youth to tackle society's problems through scientific and technological interventions. The festival is a part of the 8th edition of the India International Science Festival (IISF)-2022, to be held in Bhopal from 21-24 January 2023.

A total of 3392 entries have been received out of these 792 entries were shortlisted for further screening to select 100 innovations for physical presentation at Bhopal during 22nd and 23rd January 2023. "The participants need to bring their own projects or models for display and presentations. The best innovations will be awarded, followed up, and, if required, patented," said Dr Meghvendra Sharma, one of the coordinators of SIF from Vijnana Bharati.



The program has been designed to attract prospective engineers, researchers, and scientists. To emphasize SIF-22's core theme 'Developing Sustainable Life Based on Five Elements of Nature', the program will be conducted under five themes: The Earth, The Water, The Fire, The Air, and The Space. Each theme has multiple sub-themes. The prizes will be given to the best three presenters in each category. Each team can have a maximum of six students and one teacher/guide registered per project/idea.

With concerted efforts of several stakeholders, in the recent times, innovations and inventions have crossed the boundaries of research labs and institutes in recent times. Innovative thinking is observed at the school and college levels. Scientific and technological developments are visible beyond age and resource limits. Providing avenues is vital to encourage such actions. And that's where science fairs chip in.

Science fairs are some of the best opportunities for students to pursue an interest in science and make discoveries and share them with their peers as well as renowned scientists, professors, and professionals.

IISF-2022 is jointly organised by the Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh. The Department of Biotechnology is the nodal coordinating department for the festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) is the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency for organising the festival.



The Students Innovation Festival, previously held as the Engineering Students Festival (ESF) or Students' Engineering Model Competition (SEMC) under the India International Science Festival (IISF), is an occasion where bright engineering students mingle and get to showcase their projects on an international stage. A national jury comprising doctoral-level scientists will review and judge their work.

The students can use any technological areas, including Material Technology, Nanotechnology, Biotechnology, Computer technology, Manufacturing Technology, Communication Technology, Digital Technology, AI/ML/VR, Electrical Vehicle Technology, Space Vehicle Technology, Energy Technology, and many others. The students have registered themselves through a portal for SIF and submitted their project's idea and demonstration through a short video online.

(India Science Wire)



Students' innovation festival to buoy up novel ideas in science and technology --India Science Wire

Core Theme: Marching Towards Amrit Kaal With Science, Technology and Innovation

Students' Innovation Festival

22 - 23 January, 2023

Registration Open

Venue: LRC Building, Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, M.P.

Developing Sustainable Life based on Five Elements of Nature

The earth (Bhumi) Waste Management, Agriculture, Soil, Housing, Food, Farming, Health, Transport	Eligibility <ul style="list-style-type: none">Engineering Students: Students/research scholars/Post-graduate/ & Non-UG level or equivalent or higher courseNon-Engineering Students: Students/research scholars pending studies in basic sciences, agriculture, medical, Ayurvedic, food technology or any other engineering course at graduate or post graduate or higher level
The water (Jal) Drinking Water, Rivers, Irrigation, Water Energy, Iodine, Skatol	Methodology <ul style="list-style-type: none">After online processing, top 100 selected projects will be invited for exhibition and final evaluation at the India International Science Festival, Bhopal.Prizes for each themeCertificate for all participants
The air (Vayu) Energy, Solar Energy, Thermal Energy, Electricity, Power Generation	
The fire (Agni) Environment, Pollution, Wind Power	
The space (Akash) Satellites, Space Stations, Drones, Aviation, Space Vehicles, Robotics	

How to apply: Applications are to be submitted online on <https://scienceindiafest.org>

Last Date of Submission: 13th January 2023

SIF- IISF-2022 Control Room	National Coordinators		
CSIR-CEERI CFC-1, Malviya Nagar Industrial Area, Malviya Nagar, Jaipur-302017, Rajasthan	Namita Gupta, Head, INSPIRE/MANAK Division, DST M: 011-26590371/9818744552 Email: namita@nic.in	Dr. Meghendra Sharma, Vignana Bharati (VIBNA) M: 9829021975, Email: meghendrasatcom@gmail.com	Dr. Naresh Chafekar, M: 9650294596, Email: nchafekar@gmail.com
	Dr. Sandeep Bansal, Sorensen 'C', DST 9873922200 Email: sandeep.bansal@nic.in	Dr. Sarvesh Shukla, M: 9926347191 Email: sarveshshukla@iitbhopal.ac.in	

♡ 💬 + ↗

vignyanprasara.gov.in • 27d

The Students' Innovation Festival (SIF) is a Launchpad for young minds to present their ingenious ideas, display creativity, and showcase their ...

[Read more on vignyanprasara.gov.in](http://vignyanprasara.gov.in)

[#INDIA](#) [#TECHNOLOGY \(INDIA\)](#) [#TECHNOLOGY](#) [#FESTIVALS](#) [#INNOVATION](#)



Students' innovation festival to buoy up novel ideas in science and technology

by [India Science Wire](#) [January 17, 2023](#) in [Science](#)



The Students' Innovation Festival (SIF) is a Launchpad for young minds to present their ingenious ideas, display creativity, and showcase their projects/products. Such avenues help prepare the youth to tackle society's problems through scientific and technological interventions. The festival is a part of the 8th edition of the India International Science Festival (IISF)-2022, to be held in Bhopal from 21-24 January 2023.

A total of 3392 entries have been received out of these 792 entries were shortlisted for further screening to select 100 innovations for physical presentation at Bhopal during 22nd and 23rd January 2023. "The participants



need to bring their own projects or models for display and presentations. The best innovations will be awarded, followed up, and, if required, patented,” said Dr Meghvendra Sharma, one of the coordinators of SIF from Vijnana Bharati.

The program has been designed to attract prospective engineers, researchers, and scientists. To emphasize SIF-22’s core theme ‘Developing Sustainable Life Based on Five Elements of Nature’, the program will be conducted under five themes: The Earth, The Water, The Fire, The Air, and The Space. Each theme has multiple sub-themes. The prizes will be given to the best three presenters in each category. Each team can have a maximum of six students and one teacher/guide registered per project/idea.

With concerted efforts of several stakeholders, in the recent times, innovations and inventions have crossed the boundaries of research labs and institutes in recent times. Innovative thinking is observed at the school and college levels. Scientific and technological developments are visible beyond age and resource limits. Providing avenues is vital to encourage such actions. And that’s where science fairs chip in.

Science fairs are some of the best opportunities for students to pursue an interest in science and make discoveries and share them with their peers as well as renowned scientists, professors, and professionals.

IISF-2022 is jointly organised by the Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh. The Department of Biotechnology is the nodal coordinating department for the festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) is the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency for organising the festival.



The Students Innovation Festival, previously held as the Engineering Students Festival (ESF) or Students' Engineering Model Competition (SEMC) under the India International Science Festival (IISF), is an occasion where bright engineering students mingle and get to showcase their projects on an international stage. A national jury comprising doctoral-level scientists will review and judge their work.

The students can use any technological areas, including Material Technology, Nanotechnology, Biotechnology, Computer technology, Manufacturing Technology, Communication Technology, Digital Technology, AI/ML/VR, Electrical Vehicle Technology, Space Vehicle Technology, Energy Technology, and many others. The students have registered themselves through a portal for SIF and submitted their project's idea and demonstration through a short video online. (India Science Wire)



Students' innovation festival to buoy up novel ideas in science and technology Students'

January 17, 2023 by Dialogue India

Students' innovation festival to buoy up novel ideas in science and technology New Delhi, January 16 (India Science Wire): The Students' Innovation Festival (SIF) is a Launchpad for young minds to present their ingenious ideas, display creativity, and showcase their projects/products. Such avenues help prepare the youth to tackle society's problems through scientific and technological interventions. The festival is a part of the 8th edition of the India International Science Festival (IISF)-2022, to be held in Bhopal from 21-24 January 2023. A total of 3392 entries have been received out of these 792 entries were shortlisted for further screening to select 100 innovations for physical presentation at Bhopal during 22nd and 23rd January 2023. "The participants need to bring their own projects or models for display and presentations. The best innovations will be awarded, followed up, and, if required, patented," said Dr Meghvendra Sharma, one of the coordinators of SIF from Vijnana Bharati.

The program has been designed to attract prospective engineers, researchers, and scientists. To emphasize SIF-22's core theme 'Developing Sustainable Life Based on Five Elements of Nature', the program will be conducted under five themes: The Earth, The Water, The Fire, The Air, and The Space. Each theme has multiple sub-themes. The prizes will be given to the best three presenters in each category. Each team can have a maximum of six students and one teacher/guide registered per project/idea. With concerted efforts of several stakeholders, in the recent times, innovations and inventions have crossed the boundaries of research labs and institutes in recent times. Innovative thinking is observed at the school and college levels. Scientific and technological

developments are visible beyond age and resource limits. Providing avenues is vital to encourage such actions. And that's where science fairs chip in. Science fairs are some of the best opportunities for students to pursue an interest in science and make discoveries and share them with their peers as well as renowned scientists, professors, and professionals. IISF-2022 is jointly organised by the Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS),

Government of India, and Government of Madhya Pradesh. The Department of Biotechnology is the nodal coordinating department for the festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) is the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency for organising the festival. The Students Innovation Festival, previously held as the Engineering Students Festival (ESF) or Students' Engineering Model Competition (SEMC) under the India International Science Festival (IISF), is an occasion where bright engineering students mingle and get to showcase their projects on an international stage. A national jury comprising doctoral-level scientists will review and judge their work. The students can use any technological areas, including Material Technology, Nanotechnology, Biotechnology, Computer technology, Manufacturing Technology, Communication Technology, Digital Technology, AI/ML/VR, Electrical Vehicle Technology, Space Vehicle Technology, Energy Technology, and many others. The students have registered themselves through a portal for SIF and submitted their project's idea and demonstration through a short video online. (India Science Wire)



Students' innovation festival to buoy up novel ideas in science & technology

A total of 3392 entries have been received out of these 792 entries were shortlisted for further screening to select 100 innovations for physical presentation at Bhopal during 22nd and 23rd January 2023

By **BioVoice News Desk** - January 18, 2023



New Delhi: The Students' Innovation Festival (SIF) is a Launchpad for young minds to present their ingenious ideas, display creativity, and showcase their projects/products. Such avenues help prepare the youth to tackle society's problems through scientific and technological interventions. The festival is a part of the 8th edition of the India International Science Festival (IISF)-2022, to be held in Bhopal from 21-24 January 2023.

A total of 3392 entries have been received out of these 792 entries were shortlisted for further screening to select 100 innovations for physical presentation at Bhopal during 22nd and 23rd January 2023. "The participants need to bring their own projects or models for display and presentations. The best innovations will be awarded, followed up, and, if required, patented," said Dr Meghvendra Sharma, one of the coordinators of SIF from Vijnana Bharati.

The program has been designed to attract prospective engineers, researchers, and scientists. To emphasize SIF-22's core theme 'Developing Sustainable Life Based on Five Elements of Nature', the program will be conducted under five themes: The Earth, The Water, The Fire, The Air, and The Space. Each theme has multiple sub-themes. The prizes will be given to the best three presenters in each category. Each team can have a maximum of six students and one teacher/guide registered per project/idea.

With concerted efforts of several stakeholders, in the recent times, innovations and inventions have crossed the boundaries of research labs and institutes in recent times. Innovative thinking is observed at the school and college levels. Scientific and technological developments are visible beyond age and resource limits. Providing avenues is vital to encourage such actions. And that's where science fairs chip in.

Science fairs are some of the best opportunities for students to pursue an interest in science and make discoveries and share them with their peers as well as renowned scientists, professors, and professionals.

IISF-2022 is jointly organised by the Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh. The Department of Biotechnology is the nodal coordinating department for the festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) is the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency for organising the festival.

The Students Innovation Festival, previously held as the Engineering Students Festival (ESF) or Students' Engineering Model Competition (SEMC) under the India International Science Festival (IISF), is an occasion where bright engineering students mingle and get to showcase their projects on an international stage. A national jury comprising doctoral-level scientists will review and judge their work.

The students can use any technological areas, including Material Technology, Nanotechnology, Biotechnology, Computer technology, Manufacturing Technology, Communication Technology, Digital Technology, AI/ML/VR, Electrical Vehicle Technology, Space Vehicle Technology, Energy Technology, and many others. The students have registered themselves through a portal for SIF and submitted their project's idea and demonstration through a short video online.

(India Science Wire)



नई दिल्ली। वज्ञान महोत्सव में गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड पर होगी नज़र।

News जनवरी 17, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली (इंडिया साइंस वायर: (मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 21 से 23 जनवरी तक आयोजित होने वाले इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -(आईआईएसएफ)2022 के दौरान गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के प्रयास कये जाएंगे।

गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से संबंधित गति व धर्यों के अंतर्गत मोटा अनाज वर्ष (Year of millets) पर ध्यान केंद्रित कया जा रहा है, जिसे माननीय प्रधानमंत्री द्वारा घोषित कया गया है। इसमें भोपाल के 1500 से ज्यादा छात्रों द्वारा एक साथ रोबोटिक सिस्टम से बीज बोने का रिकॉर्ड बनाने की कोशिश की जाएगी।

गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड से जुड़ी गति व धर्यों के दौरान भवष्य के उभरते युवा वैज्ञानिक एक साथ प्रयोग करते हैं और वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास करते हैं। विश्व रिकॉर्ड बनाने के इन प्रयासों में प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली और व्यावहारिक वज्ञान मॉडल का प्रदर्शन शामिल है।





गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम करने के उद्देश्यों में आत्मनिर्भर भारत के लिए 'वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार' के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथसाथ लोगों को उनके प्रभावी योगदान देने के लिए सक्षम बनाना शामिल है। आईआईएसएफ के पूर्व संस्करणों में स्थापित 14 गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स को भी इस दौरान 'वॉल ऑफ फेम' पर प्रदर्शित किया जाएगा।

गत वर्ष गोवा में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल-2021 के दौरान तीन गनीज रिकॉर्ड बने थे। इनमें 'एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक लोगों द्वारा मॉडल रॉकेट कट को असेंबल करना'; 'वर्षा जल संचयन कट को ऑनलाइन एवं एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक लोगों द्वारा असेंबल करना'; और 'एक ही स्थान में सबसे बड़े अंतरिक्ष अन्वेषण पाठ' के लक्ष्य को प्राप्त करना शामिल है।

वर्ष 2015 में आईआईएसएफ की शुरुआत के बाद से अब तक गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड वज्ञान के इस महाकुंभ का एक अभिन्न अंग रहा है। रिकॉर्डब्रेकंग उपलब्धियों को दर्ज करने - और उन्हें मान्यता प्रदान करने के लिए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड वैश्विक संस्था है, जो नये रिकॉर्ड बनाने की कोशिश करने वालों के लिए वैश्विक पटल पर अपनी छाप छोड़ने का अवसर प्रदान करती है।

(इंडिया साइंस वायर)





वज्ञान महोत्सव में गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड पर होगी नज़र



इंडिया साइंस वायर | Jan 17, 2023 3:25PM

गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड से जुड़ी गति व धर्यों के दौरान भ वष्य के उभरते युवा वैज्ञानिक एक साथ प्रयोग करते हैं और वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास करते हैं। वश्व रिकॉर्ड बनाने के इन प्रयासों में प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली और व्यावहारिक वज्ञान मॉडल का प्रदर्शन शा मल है।

मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 21 से 23 जनवरी तक आयोजित होने वाले इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -(आईआईएसएफ)2022 के दौरान गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के प्रयास कये जाएंगे।



गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से संबंधित गति व धर्यों के अंतर्गत मोटा अनाज वर्ष (Year of millets) पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, जिसे माननीय प्रधानमंत्री द्वारा घोषित किया गया है। इसमें भोपाल के 1500 से ज्यादा छात्रों द्वारा एक साथ रोबोटिक सिस्टम से बीज बोने का रिकॉर्ड बनाने की कोशिश की जाएगी।

गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड से जुड़ी गति व धर्यों के दौरान भवष्य के उभरते युवा वैज्ञानिक एक साथ प्रयोग करते हैं और वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास करते हैं। विश्व रिकॉर्ड बनाने के इन प्रयासों में प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली और व्यावहारिक विज्ञान मॉडल का प्रदर्शन शामिल है।

गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम करने के उद्देश्यों में आत्मनिर्भर भारत के लिए विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथसाथ लोगों को उनके - प्रभावी योगदान देने के लिए सक्षम बनाना शामिल है। आईआईएसएफ के पूर्व संस्करणों में स्थापित 14 गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स को भी इस दौरान 'वॉल ऑफ फेम' पर प्रदर्शित किया जाएगा।

गत वर्ष गोवा में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल-2021 के दौरान तीन गनीज रिकॉर्ड बने थे। इनमें 'एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक लोगों द्वारा मॉडल रॉकेट कट को असेंबल करना'; 'वर्षा जल संचयन कट को ऑनलाइन एवं एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक लोगों द्वारा असेंबल करना'; और 'एक ही स्थान में सबसे बड़े अंतरिक्ष अन्वेषण पाठ' के लक्ष्य को प्राप्त करना शामिल है।

वर्ष 2015 में आईआईएसएफ की शुरुआत के बाद से अब तक गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड विज्ञान के इस महाकुंभ का एक अभिन्न अंग रहा है। रिकॉर्डब्रेकिंग उपलब्धियों - को दर्ज करने और उन्हें मान्यता प्रदान करने के लिए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड वैश्विक संस्था है, जो नये रिकॉर्ड बनाने की कोशिश करने वालों के लिए वैश्विक पटल पर अपनी छाप छोड़ने का अवसर प्रदान करती है।

(इंडिया साइंस वायर)



वज्ञान महोत्सव में गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड पर होगी नज़र

16/01/2023V3news India



नई दिल्ली, 16 जनवरी : (इंडिया साइंस वायर) मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 21 से 23 जनवरी तक आयोजित होने वाले इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल -(आईआईएसएफ)2022 के दौरान गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के प्रयास कये जाएंगे। गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से संबंधित गति व धर्यों के अंतर्गत मोटा अनाज वर्ष (Year of millets) पर ध्यान केंद्रित कया जा रहा है, जिसे माननीय प्रधानमंत्री द्वारा घोषित कया गया है। इसमें भोपाल के 1500 से ज्यादा छात्रों द्वारा एक साथ रोबोटिक सस्टम से बीज बोलने का रिकॉर्ड बनाने की कोशिश की जाएगी।

गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड से जुड़ी गति व धर्यों के दौरान भ वष्य के उभरते युवा वैज्ञानिक एक साथ प्रयोग करते हैं और वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास करते हैं। वश्व रिकॉर्ड बनाने के इन प्रयासों में प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली और व्यावहारिक वज्ञान मॉडल का प्रदर्शन शा मल है। गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम करने के उद्देश्यों में आत्मनिर्भर भारत के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार' के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथसाथ लोगों को उनके प्रभावी - योगदान देने के लए सक्षम बनाना शा मल है।

आईआईएसएफ के पूर्व संस्करणों में स्था पत 14 गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स को भी इस दौरान 'वॉल ऑफ फेम' पर प्रदर्शित किया जाएगा। गत वर्ष गोवा में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल-2021 के दौरान तीन गनीज रिकॉर्ड बने थे। इनमें एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक लोगों द्वारा मॉडल रॉकेट कट को असेंबल करना वर्षा जल संचयन कट को ऑनलाइन एवं एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक लोगों द्वारा असेंबल करना और एक ही स्थान में सबसे बड़े अंतरिक्ष अन्वेषण पाठ के लक्ष्य को प्राप्त करना शा मल है।

वर्ष 2015 में आईआईएसएफ की शुरुआत के बाद से अब तक गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड वज्ञान के इस महाकुंभ का एक अभिन्न अंग रहा है। रिकॉर्डब्रेकंग उपलब्धियों को दर्ज करने - और उन्हें मान्यता प्रदान करने के लए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड वैश्विक संस्था है, जो नये रिकॉर्ड बनाने की कोशिश करने वालों के लए वैश्विक पटल पर अपनी छाप छोड़ने का अवसर प्रदान करती है।



वज्ञान महोत्सव में गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड पर होगी नज़र

January 17, 2023 by Dialogue India

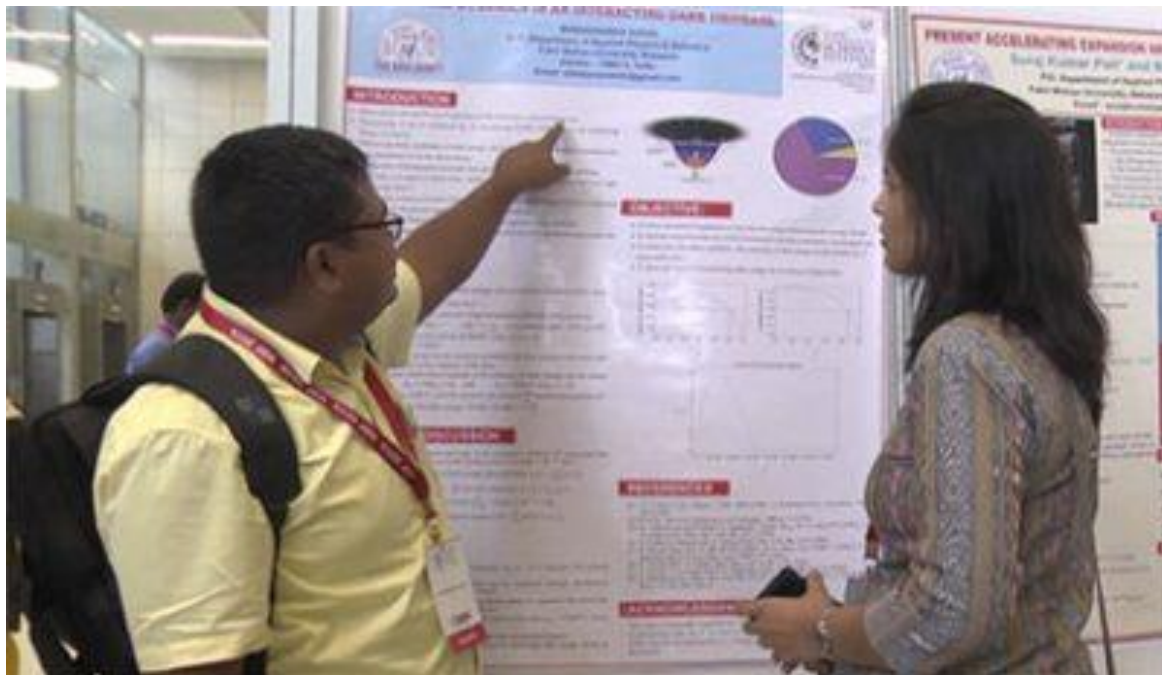
नई दिल्ली, 16 जनवरी (इंडिया साइंस वायर): मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में 21 से 23 जनवरी तक आयोजित होने वाले इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 के दौरान गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के प्रयास किये जाएंगे। गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से संबंधित गति व धर्यों के अंतर्गत मोटा अनाज वर्ष (Year of millets) पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, जिसे माननीय प्रधानमंत्री द्वारा घोषित किया गया है। इसमें भोपाल के 1500 से ज्यादा छात्रों द्वारा एक साथ रोबोटिक सिस्टम से बीज बोने का रिकॉर्ड बनाने की कोशिश की जाएगी। गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड से जुड़ी गति व धर्यों के दौरान भवष्य के उभरते युवा वैज्ञानिक एक साथ प्रयोग करते हैं और वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास करते हैं। विश्व रिकॉर्ड बनाने के इन प्रयासों में प्रोटोटाइप मॉडल की एक साथ असेंबली और व्यावहारिक वज्ञान मॉडल का प्रदर्शन शामिल है। गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम करने के उद्देश्यों में आत्मनिर्भर भारत के लिए वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ लोगों को उनके प्रभावी योगदान देने के लिए सक्षम बनाना शामिल है। आईआईएसएफ के पूर्व संस्करणों में स्थापित 14 गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स को भी इस दौरान 'वॉल ऑफ फेम' पर प्रदर्शित किया जाएगा। गत वर्ष गोवा में इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल-2021 के दौरान तीन गनीज रिकॉर्ड बने थे। इनमें 'एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक लोगों द्वारा मॉडल रॉकेट कट को असेंबल करना'; 'वर्षा जल संचयन कट को ऑनलाइन एवं एक ही स्थान पर एक साथ सबसे अधिक लोगों द्वारा असेंबल करना'; और 'एक ही स्थान में सबसे बड़े अंतरिक्ष अन्वेषण पाठ' के लक्ष्य को प्राप्त करना शामिल है। वर्ष 2015 में आईआईएसएफ की शुरुआत के बाद से अब तक गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड वज्ञान के इस महाकुंभ का एक अभिन्न अंग रहा है। रिकॉर्ड-ब्रेकिंग उपलब्धियों को दर्ज करने और उन्हें मान्यता प्रदान करने के लिए गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड वैश्विक संस्था है, जो नये रिकॉर्ड बनाने की कोशिश करने वालों के लिए वैश्विक पटल पर अपनी छाप छोड़ने का अवसर प्रदान करती है। (इंडिया साइंस वायर)



BISinfotech

Budding Researchers to Take Centre Stage at Young Scientist Conference

Nitisha Dubey January 18, 2023



(India Science Wire): In the 8th edition of India International Science Festival (IISF) 2022, the Young Scientist conference is one of the 15 events will be organised from 22nd -24th January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, Madhya Pradesh.

Hundreds of young scientists and researchers, including persons from the scientific Industry, faculty members, Postdoctoral fellows, PhD students, and final-year MSc and B.Tech students from across the country, will participate in the conference.



The young scientist conference aims to familiarise young researchers with the scientific policies of India and share with them the stories of India's scientific achievements. Aligned with the G20 theme -One Earth, One Family, One Future, and LiFE (Lifestyle for Environment), the conference is aimed at inspiring young minds to come up with scientific solutions to the challenges faced by the nation and humanity. Climate change, the bio-economy, ecosystem sustainability, judicious use, and conservation of natural resources are some of the key areas of focus moving forward.

The young scientist conference is coordinated by the Ministry of Earth Sciences, Department of Atomic Energy, Government of India, and Vijnana Bharati. With the broad theme of IISF 2022, "Marching towards Amrit Kaal with science, technology, and innovation", the Young Scientist conference will primarily focus on frontier areas of Science Research (Biological, Chemical, Mathematical, Physical sciences, Agriculture, Medicine, and Engineering); Pandemic Challenges, impacts, and research in vaccine development; Water resources, conservation, recycling, and purification; Biodiversity, Environment & Climate Change; and Food & Energy Security for Self-Reliant India (Atmanirbhar Bharat).

Theme-wise awards for best poster presentation will also be given to participants. Moreover, the young scientist conference participants will get to meet and interact with eminent professors and scientists from prestigious universities, institutes, and organisations like the Indian Institute of Technologies (IITs), Defence Research and Development Organisation (DRDO), Indian Space Research Organisation (ISRO) and Indian Council of Agricultural Research (ICAR).



The conference offers young researchers a platform to present their ideas and work to the public and other scientists. The young scientist conference program of IISF 2022 is an effort to help young researchers enhance their skill of public presentation and motivate young minds to pursue research in other frontier areas of sciences such as artificial intelligence, nanotechnology, [quantum](#) computation, etc. This event will also support the scientific potential of young researchers by facilitating their future collaborations in interdisciplinary areas to tackle a wide range of issues at the national level, industry, and society through science and technology.

IISF-2022 is jointly organised by the Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh. The Department of Biotechnology is the nodal coordinating department for the festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) are the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency for organising the festival. (India Science Wire)



Budding researchers take centre stage at young scientist conference

January 18, 2023 by Dialogue India

In the 8th edition of India International Science Festival (IISF) 2022, the Young Scientist conference is one of the 15 events organised from 22nd -24th January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, Madhya Pradesh. Hundreds of young scientists and researchers, including persons from the scientific Industry, faculty members, Postdoctoral fellows, PhD students, and final-year MSc and B.Tech students from across the country, will participate in the conference.

The young scientist conference aims to familiarise young researchers with the scientific policies of India and share with them the stories of India's scientific achievements. Aligned with the G20 theme -One Earth, One Family, One Future, and LiFE (Lifestyle for Environment), the conference is aimed at inspiring young minds to come up with scientific solutions to the challenges faced by the nation and humanity. Climate change, the bio-economy, ecosystem sustainability, judicious use, and conservation of natural resources are some of the key areas of focus moving forward.

The young scientist conference is coordinated by the Ministry of Earth Sciences, Department of Atomic Energy, Government of India, and Vijnana Bharati. With the broad theme of IISF 2022, "Marching towards Amrit Kaal with science, technology, and innovation", the Young Scientist conference will primarily focus on frontier areas of Science Research (Biological, Chemical, Mathematical, Physical sciences, Agriculture, Medicine, and Engineering); Pandemic Challenges, impacts, and research in vaccine



development; Water resources, conservation, recycling, and purification; Biodiversity, Environment & Climate Change; and Food & Energy Security for Self-Reliant India (Atmanirbhar Bharat).

Theme-wise awards for best poster presentation will also be given to participants. Moreover, the young scientist conference participants will get to meet and interact with eminent professors and scientists from prestigious universities, institutes, and organisations like the Indian Institute of Technologies (IITs), Defence Research and Development Organisation (DRDO), Indian Space Research Organisation (ISRO) and Indian Council of Agricultural Research (ICAR).

The conference offers young researchers a platform to present their ideas and work to the public and other scientists. The young scientist conference program of IISF 2022 is an effort to help young researchers enhance their skill of public presentation and motivate young minds to pursue research in other frontier areas of sciences such as artificial intelligence, nanotechnology, quantum computation, etc. This event will also support the scientific potential of young researchers by facilitating their future collaborations in interdisciplinary areas to tackle a wide range of issues at the national level, industry, and society through science and technology.

IISF-2022 is jointly organised by the Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh. The Department of Biotechnology is the nodal coordinating department for the festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) are the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency for organising the festival. (India Science Wire)

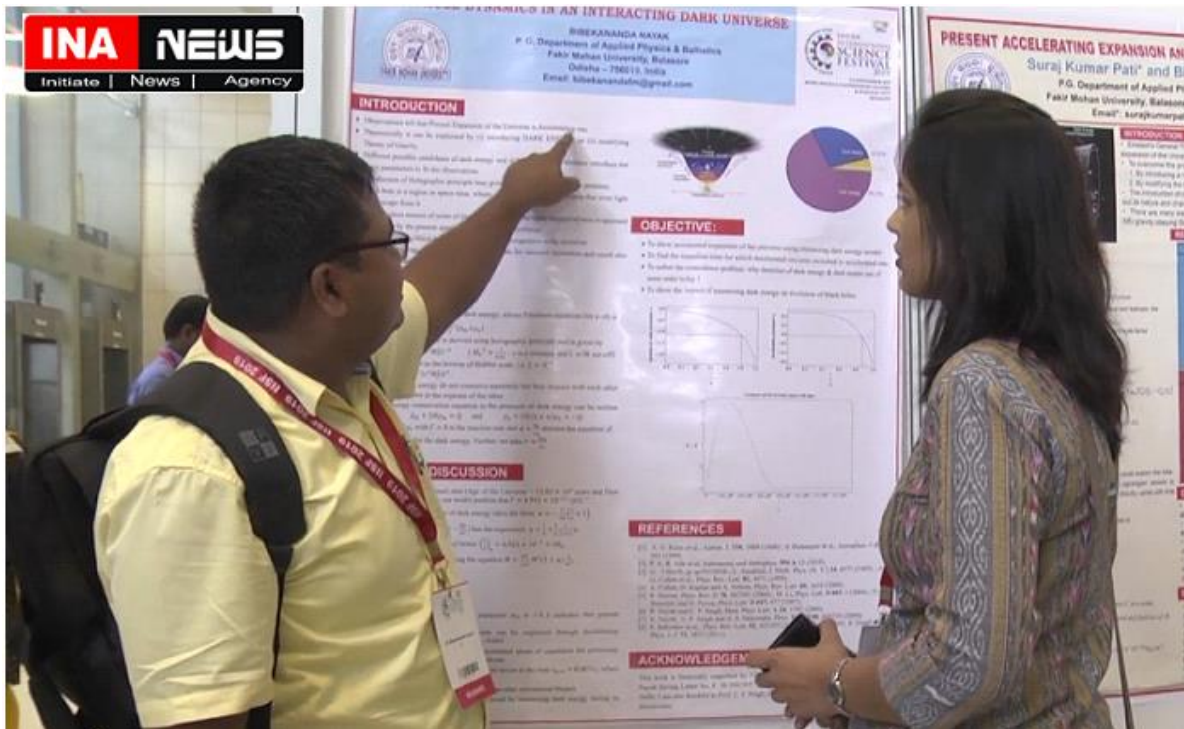


New Delhi: Budding researchers take centre stage at young scientist conference

News जनवरी 17, 2023

Facebook Twitter Google+

New Delhi (India Science Wire): In the 8th edition of India International Science Festival (IISF) 2022, the Young Scientist conference is one of the 15 events organised from 22nd -24th January 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, Madhya Pradesh. Hundreds of young scientists and researchers, including persons from the scientific Industry, faculty members, Postdoctoral fellows, PhD students, and final-year MSc and B.Tech students from across the country, will participate in the conference.



The young scientist conference aims to familiarise young researchers with the scientific policies of India and share with them the stories of India's scientific achievements. Aligned with the G20 theme -One Earth, One Family, One Future, and LiFE (Lifestyle for Environment), the conference is aimed at inspiring young minds to come up with scientific solutions to the challenges faced by the nation and humanity. Climate change, the bio-economy, ecosystem sustainability, judicious use, and conservation of natural resources are some of the key areas of focus moving forward.

The young scientist conference is coordinated by the Ministry of Earth Sciences, Department of Atomic Energy, Government of India, and Vijnana Bharati. With the broad theme of IISF 2022, "Marching towards Amrit Kaal with science, technology, and innovation", the Young Scientist conference will primarily focus on frontier areas of Science Research (Biological, Chemical, Mathematical, Physical sciences, Agriculture, Medicine, and Engineering); Pandemic Challenges, impacts, and research in vaccine development; Water resources, conservation, recycling, and purification; Biodiversity, Environment & Climate Change; and Food & Energy Security for Self-Reliant India (Atmanirbhar Bharat).

Theme-wise awards for best poster presentation will also be given to participants. Moreover, the young scientist conference participants will get to meet and interact with eminent professors and scientists from prestigious universities, institutes, and organisations like the Indian Institute of Technologies (IITs), Defence Research and Development Organisation (DRDO), Indian Space Research Organisation (ISRO) and Indian Council of Agricultural Research (ICAR). The conference offers young researchers a platform to present their ideas and work to the public and other scientists. The young scientist conference program of IISF 2022 is an effort to help young researchers enhance their skill of public presentation and motivate young minds to pursue research in other frontier areas of sciences such as artificial intelligence, nanotechnology, quantum computation, etc. This event will also support the



scientific potential of young researchers by facilitating their future collaborations in interdisciplinary areas to tackle a wide range of issues at the national level, industry, and society through science and technology.

IISF-2022 is jointly organised by the Ministry of Science and Technology (MoS&T), Ministry of Earth Sciences (MoES), Department of Atomic Energy (DAE), Department of Space (DoS), Government of India, and Government of Madhya Pradesh. The Department of Biotechnology is the nodal coordinating department for the festival. The Madhya Pradesh Council of Science and Technology (MPCOST) is the local partner, and Vijnana Bharati (VIBHA) are the Knowledge Partner. Regional Centre for Biotechnology (RCB), Faridabad, Department of Biotechnology, is the nodal agency for organising the festival.

(India Science Wire)





नई दिल्ली। आईआईएसएफ-2022 के मुख्य आकर्षणों में अत्याधुनिक-प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी।

News जनवरी 17, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली (इंडिया साइंस वायर): भोपाल में 21 से 24 जनवरी 2023 तक आयोजित किये जा रहे इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल ऑफ इंडिया (आईआईएसएफ) के 8वें संस्करण का एक महत्वपूर्ण आयाम 'न्यू एज टेक्नोलॉजीज' कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञों के वमर्श के साथ-साथ अत्याधुनिक प्रौद्योगिकीयों को प्रदर्शित किया जाएगा।

'न्यू एज टेक्नोलॉजीज' कार्यक्रम का उद्देश्य उभरती प्रौद्योगिकीयों में नवोन्मेष को प्रोत्साहित करना है। इनमें मेटावर्स, ऑगमेंटेड रियलिटी, मक्सड रियलिटी और वर्चुअल रियलिटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस / मशीन लर्निंग, साइबर सिक्योरिटी, ब्लॉक चेन, डिजिटल करेंसी, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, इंडस्ट्री 4.0, 5जी / 6जी, क्वांटम कंप्यूटिंग, सेमीकंडक्टर चप डजाइन, ड्रोन टेक्नोलॉजी, ग्रीन एनर्जी, एज कंप्यूटिंग, स्पेस टेक्नोलॉजी, सेंसर टेक्नोलॉजी, सस्टेनस एंड संधेटिक बायोलॉजी, जीनोमिक्स, वैक्सीन डेवलपमेंट, डायग्नोस्टिक्स, स्टेम सेल, सीएआर-टी सेल और जीन थेरेपी जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकीयों का प्रमुखता से शामिल हैं।





यह आयोजन व भन्न अत्याधुनिक क्षेत्रों में इंजीनियर्ड प्रोटोटाइप और उत्पादों के प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर का प्रदर्शन करेगा। इस वर्ष न्यू एज टेक्नोलॉजी कार्यक्रम में लोकप्रिय वार्ताएं, पैनल चर्चा और उद्योगों/संस्थानों/स्टार्टअप्स द्वारा उभरती प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शनी के साथ-साथ क्विज और पोस्टर प्रतियोगिताएं होंगी। कार्यक्रम के अंतिम दिन वजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा।

आईआईएसएफ-2022 का आयोजन 21 से 24 जनवरी 2023 तक झीलों के शहर भोपाल में किया जा रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग, मध्य प्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद एवं मध्य प्रदेश सरकार और गैर सरकारी संस्था विज्ञान भारती के सहयोग से संयुक्त रूप से यह आयोजन किया जा रहा है।

आज की दुनिया अनेक क्षेत्रों में वज्ञान और इंजीनियरिंग आधारित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी पर निर्भर है। हमारा दैनिक जीवन नये-युग की ऐसी प्रौद्योगिकियों से सीधे जुड़ा है। यह सही समय है कि पूरी दुनिया नये युग की प्रौद्योगिकियों की पहचान और उनके विकास में प्रभावी योगदानकर्ता के रूप में भारत की क्षमता को पहचानें। इस दिशा में आईआईएसएफ जैसे मंच महत्वपूर्ण हो जाते हैं, जहां वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जगत समसामयिक चुनौतियों, समाधान, संभावनाओं पर एक साथ मंथन करता है।

आईआईएसएफ-2022 की थीम 'वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर' वषय पर केंद्रित है। वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत जैव प्रौद्योगिकी वभाग आईआईएसएफ-2022 के आयोजन के लए नोडल वभाग है। वहीं, आईआईएसएफ को आयोजित करने वाली नोडल एजेंसी क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी), फरीदाबाद है।

(इंडिया साइंस वायर)



आईआईएसएफ-2022 के मुख्य आकर्षणों में अत्याधुनिक-प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी

January 18, 2023 by Dialogue India

भोपाल में 21 से 24 जनवरी 2023 तक आयोजित किये जा रहे इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल ऑफ इंडिया (आईआईएसएफ) के 8वें संस्करण का एक महत्वपूर्ण आयाम 'न्यू एज टेक्नोलॉजीज' कार्यक्रम है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत विशेषज्ञों के वमर्श के साथ-साथ अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित किया जाएगा। 'न्यू एज टेक्नोलॉजीज' कार्यक्रम का उद्देश्य उभरती प्रौद्योगिकियों में नवोन्मेष को प्रोत्साहित करना है। इनमें मेटावर्स, ऑगमेंटेड रियलिटी, मक्सड रियलिटी और वर्चुअल रियलिटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस / मशीन लर्निंग, साइबर सिक्योरिटी, ब्लॉकचेन, डिजिटल करेंसी, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, इंडस्ट्री 4.0, 5जी / 6जी, क्वांटम कंप्यूटिंग, सेमीकंडक्टर चिप डिजाइन, ड्रोन टेक्नोलॉजी, ग्रीन एनर्जी, एज कंप्यूटिंग, स्पेस टेक्नोलॉजी, सेंसर टेक्नोलॉजी, सस्टेनैबल एंड संधेटिक बायोलॉजी, जीनोमिक्स, वैक्सीन डेवलपमेंट, डायग्नोस्टिक्स, स्टेम सेल, सीएआर-टी सेल और जीन थेरेपी जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों का प्रमुखता से शामिल है। यह आयोजन नवोन्मेष अत्याधुनिक क्षेत्रों में इंजीनियरिंग प्रोटोटाइप और उत्पादों के प्रौद्योगिकी तत्परता स्तर का प्रदर्शन करेगा। इस वर्ष न्यू एज टेक्नोलॉजी कार्यक्रम में लोकप्रिय वार्ताएं, पैनल चर्चा और उद्योगों/संस्थानों/स्टार्टअप्स द्वारा उभरती प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शनी के साथ-साथ क्विज और पोस्टर प्रतियोगिताएं होंगी। कार्यक्रम के अंतिम दिन वजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। आईआईएसएफ-2022 का आयोजन 21 से 24 जनवरी 2023 तक झीलों के शहर भोपाल में किया जा रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, परमाणु ऊर्जा विभाग, अंतरिक्ष विभाग, मध्य प्रदेश विज्ञान और प्रौद्योगिकी परिषद एवं मध्य प्रदेश सरकार और गैर सरकारी संस्था विज्ञान भारती के सहयोग से संयुक्त रूप से यह आयोजन किया जा रहा है। आज की दुनिया अनेक क्षेत्रों में विज्ञान और इंजीनियरिंग आधारित अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी पर निर्भर है। हमारा दैनिक जीवन नये-युग की ऐसी प्रौद्योगिकियों से सीधे जुड़ा है। यह सही समय है कि पूरी दुनिया नये युग की प्रौद्योगिकियों की पहचान और उनके विकास में

प्रभावी योगदानकर्ता के रूप में भारत की क्षमता को पहचानें। इस दिशा में आईआईएसएफ जैसे मंच महत्वपूर्ण हो जाते हैं, जहां वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जगत समसामयिक चुनौतियों, समाधान, संभावनाओं पर एक साथ मंथन करता है। आईआईएसएफ-2022 की थीम 'वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर' वषय पर केंद्रित है। वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत जैव प्रौद्योगिकी वभाग आईआईएसएफ-2022 के आयोजन के लिए नोडल वभाग है। वहीं, आईआईएसएफ को आयोजित करने वाली नोडल एजेंसी क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी), फरीदाबाद है।



स्वस्थ भारत

स्वास्थ्य समाचार एवं विचार का राष्ट्रीय मंच

देश और लोगों को सशक्त बनाता है वैज्ञानिक चेतना से
लैस सनेमा

By [admin](#) January 23, 2023



उमाशंकर मश्र

भोपाल। भारतीय राष्ट्रीय वज्ञान अकादमी (INSA) में वज्ञान संचार सलाहकार डॉ चंद्र मोहन नौटियाल ने कहा क वज्ञान से भरपूर सनेमा समाज की तकनीकी ताकत है और यह देश और इसके लोगों को सशक्त बनाने का एक प्रभावी उपकरण है। वह पछले दिनों रजत जयंती सभागार, पं. खुशी लाल शर्मा आयुर्वेद संस्थान, भोपाल में शुरू हुए तीन दिवसीय भारतीय अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फलम महोत्सव (ISFFI) में मुख्य वक्ता के तौर पर बोल रहे थे। प्रसद्ध वैज्ञानिक डॉ. चंद्र मोहन नौटियाल G-20 के कार्यकारी समूहों में से एक वज्ञान-20 (S-20) के

वशेष संदर्भ में “ फलम्स टू रिफ्लेक्ट इंडियाज इमर्जेस एज साइंस एंड टेक्नोलॉजी लीडर” वषय पर संबोधत कर रहे थे।

वर्ष 2023 में जी-20 की अध्यक्षता भारत कर रहा है। 2023 के लिए S-20 की थीम ‘नवोन्मेषी और सतत् विकास के लिए वघटनकारी वज्ञान’ है। पहले कई वर्षों से, जी-20 देशों का समूह जलवायु परिवर्तन शमन और सतत् विकास जैसी अन्य वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने की दिशा में काम कर रहा है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जी-20 सहित कई कार्यकारी समूहों की स्थापना की गई है।

इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (ISFFI), भोपाल के मौलाना आजाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MANIT) में चल रहे चार दिवसीय भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव का एक प्रमुख घटक है। ISFFI-2022 का उद्घाटन शनिवार को मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश, शवराज सिंह और केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) वज्ञान और प्रौद्योगिकीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी वज्ञान और अंतरिक्ष डॉ. जितेंद्र सिंह की उपस्थिति में किया गया। भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. अजय कुमार सूदय, राजेश एस. गोखले, सचिव, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, डॉ. एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर और सचिव, DSIR एम. र. वचंद्रन, सचिव, पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय, ओम प्रकाश सखलेचा, वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, मध्य प्रदेश और निकुंज श्रीवास्तव, सचिव-वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, मध्य प्रदेश भी इस दौरान मौजूद थे। COVID-19 महामारी के दौरान भारत के लचीलेपन का उल्लेख करते हुए, डॉ. सीएम नौटियाल ने वज्ञान और प्रौद्योगिकी की ताकत और लोगों को बीमारी के बारे में शिक्षित करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने G-20 और S-20 पहलों के महत्व के बारे में भी बताया। डॉ. नौटियाल ने कहा, S-20 वज्ञान में सहयोग के लिए शुरू की गई पहल है। किसी भी राष्ट्र को महाशक्ति बनाने के लिए संचार के माध्यम से S-20 कार्यक्रमों में वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं की भागीदारी बहुत आवश्यक है। इन वकासात्मक कार्यक्रमों को संचार के कई चैनलों द्वारा समर्थित किया जाता है, और ऐसे कुशल माध्यमों में से एक फिल्म और सनेमा है।

डॉ. नौटियाल ने कहा, “चूंकि फिल्म और सनेमा को बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा आसानी से समझा जा सकता है, खासकर आमजन द्वारा भीड़ से समझा जा सकता है। इसी लिए, फिल्मों का उपयोग मानव सभ्यता में वज्ञान और उसके व भन्न पहलुओं और भूमिकाओं को चित्रित करने के लिए प्रभावी माध्यम के रूप में किया जा सकता है। यह छात्रों और युवाओं जैसे आला दर्शकों को लक्षित करके परिवर्तनकारी प्रभाव छोड़ने में सक्षम है। भारत में, वज्ञान प्रसार द्वारा लगभग 4000 वज्ञान फिल्में पहले ही बनायीं जा चुकी हैं और दर्शकों के लिए उपलब्ध करायीं जा चुकी हैं। कुछ अन्य संस्थान जैसे डीडी, NCSTC (DST) और कुछ निजी चैनल भी वज्ञान फिल्म

बनाने की दुनिया में मुख्य खलाडी हैं।” डॉ नौटियाल ने कहा, पश्चिमी सनेमा, जो पहले से ही साइंस फक्शन शैलियों में समृद्ध था, ने जुरासिक पार्क, इंटरस्टेलर, ग्रे वटी, स्टार वार्स जैसी फिल्मों का निर्माण किया, और अपने दर्शकों के लिए एक पूरी तरह से अलग दुनिया बनायी। वहीं, ‘मस्टर एक्स इन बॉम्बे’, ‘कोई मल गया’, ‘क्रश’ और ‘द्रोणा’ जैसी फिल्मों ने साइंस फक्शन लीग में भारतीय सनेमा का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने कहा, “वज्ञान और प्रौद्योगिकी, कुल मिलाकर एक राष्ट्र की नियति को नियंत्रित करते हैं, और अंततः राष्ट्र के औद्योगीकरण और तकनीकी उद्भव को आकार देने में मदद करते हैं।”

अरुण चड्ढा, फिल्म निर्माता और जूरी अध्यक्ष, ISFFI-2022, प्रो. शंभुनाथ सिंह, पूर्व कुलपति, पटना विश्व विद्यालय और संस्थापक निदेशक, SoJMS, इग्नू, जूरी सदस्य, ISFFI 2022, राजीव वर्मा, प्रसिद्ध अभिनेता, जूरी सदस्य, ISFFI-2022, डॉ नकुल पाराशर, निदेशक, वज्ञान प्रसारण डॉ सुधीर एस. भटौरिया, महासचिव, वज्ञान भारतीय और निमेष कपूर, फिल्म महोत्सव के संयोजक एवं वैज्ञानिक-ई, वज्ञान प्रसार भी इस अवसर पर उपस्थित थे। वज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ नकुल पाराशर ने कहा कि भारत का अंतर्राष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव वज्ञान संचार, लोकप्रियता और इसके विस्तार (SCoPE) में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

ISFFI के समन्वयक और वज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक निमेष कपूर ने बताया है कि वज्ञान फिल्मोत्सव के अंतर्गत वज्ञान, प्रौद्योगिकी और शोध तथा विकास से जुड़े विषयों पर चार श्रेणियों में फिल्म प्रदर्शियां आमंत्रित की गई थीं। प्राप्त 437 प्रदर्शियों में से 61 भारतीय और 33 विदेशी फिल्मों को समारोह के लिए नामांकित किया गया। भारत, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, रूस, कनाडा, इजराइल, फ्लोपींस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों की पुरस्कृत वज्ञान फिल्मों की विशेष स्क्रीनिंग फिल्मोत्सव में की गई। फिल्म महोत्सव में किसी प्रकार का शुल्क नहीं रखा गया था। 21 से 23 जनवरी 2023 के दौरान इन फिल्मों की स्क्रीनिंग में बच्चों और छात्रों समेत हर आयु वर्ग के लोग आकर फिल्में देखीं। फिल्म महोत्सव के उद्घाटन सत्र के दौरान एक फिल्म-‘रिटर्न ऑफ चीता’ दिखाई गई। इस 2.27 मिनट की फिल्म का निर्माण क्रएटिव चैनल और पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा किया गया है। यह लघु फिल्म खूबसूरती से दर्शाती है कि कैसे भारत में चीतों की वापसी मानव निर्मित पारिस्थितिक दोष को ठीक करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नामीबियाई चीतों का भारत आना विश्व में एक ऐतिहासिक घटना है।

इंडिया साइंस वायर से साभार



“देश और लोगों को सशक्त बनाता है वैज्ञानिक चेतना से लैस

January 23, 2023 by Dialogue India

सनेमा”

उमाशंकर

मश्र

भारतीय राष्ट्रीय वज्ञान अकादमी (INSA) में वज्ञान संचार सलाहकार डॉ चंद्र मोहन नौटियाल ने कहा क वज्ञान से भरपूर सनेमा समाज की तकनीकी ताकत है और यह देश और इसके लोगों को सशक्त बनाने का एक प्रभावी उपकरण है। वह शनिवार को रजत जयंती सभागार, पं. खुशी लाल शर्मा आयुर्वेद संस्थान, भोपाल, मध्य प्रदेश में शुरू हुए तीन दिवसीय भारतीय अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव (आईएसएफएफआई) में मुख्य वक्ता के तौर पर बोल रहे थे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. चंद्र मोहन नौटियाल जी-20 के कार्यकारी समूहों में से एक वज्ञान-20 (एस-20) के विशेष संदर्भ में “फिल्म्स टू रिफ्लेक्ट इंडियाज इमर्जेंस एज साइंस एंड टेक्नोलॉजी लीडर” वषय पर सभा को संबोधित कर रहे थे। वर्ष 2023 में जी-20 की अध्यक्षता भारत कर रहा है। 2023 के लिए S-20 की थीम ‘नवोन्मेषी और सतत् विकास के लिए वघटनकारी वज्ञान’ है। पहले कई वर्षों से, G-20 देशों का समूह जलवायु परिवर्तन शमन और सतत् विकास जैसी अन्य वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने की दिशा में काम कर रहा है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए S-20 सहित कई कार्यकारी समूहों की स्थापना की गई है। इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (ISFFI); भोपाल के मौलाना आज़ाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MANIT) में चल रहे चार दिवसीय भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ)-2022 का एक प्रमुख घटक है। आईआईएसएफ-2022 का उद्घाटन शनिवार को मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश, शवराज सिंह चौहान; और केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) वज्ञान और प्रौद्योगिकी; राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी वज्ञान; एमओएस पीएमओ, कार्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह की उपस्थिति में किया गया है। भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. अजय कुमार सूद; राजेश एस. गोखले, सचिव, जैव प्रौद्योगिकी वभाग, भारत सरकार; डॉ एन कलैसेल्वी, महानिदेशक,

सीएसआईआर और स चव, डीएसआईआर; एम. र वचंद्रन, स चव, पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय; ओम प्रकाश सखलेचा, वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, मध्य प्रदेश; और निकुंज श्रीवास्तव,

स चव- वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, मध्य प्रदेश भी आईआईएसएफ के उद्घाटन के दौरान भी मौजूद थे।

कोविड-19 महामारी के दौरान भारत के लचीलेपन का उल्लेख करते हुए, डॉ. सीएम नौटियाल ने वज्ञान और प्रौद्योगिकी की ताकत और लोगों को बीमारी के बारे में शिक्षित करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने जी-20 और एस-20 पहलों के महत्व के बारे में भी बताया। डॉ. नौटियाल ने कहा, एस-20 वज्ञान में सहयोग के लिए शुरू की गई पहल है। कहीं भी राष्ट्र को महाशक्ति बनाने के लिए संचार के माध्यम से एस-20 कार्यक्रमों में वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं की भागीदारी बहुत आवश्यक है। इन वकसात्मक कार्यक्रमों को संचार के कई चैनलों द्वारा समर्थित किया जाता है, और ऐसे कुशल माध्यमों में से एक फिल्म और सनेमा है।

डॉ. नौटियाल ने कहा, “चूंकि फिल्म और सनेमा को बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा आसानी से समझा जा सकता है, खासकर आमजन द्वारा भी इसे समझा जा सकता है। इसी लिए, फिल्मों का उपयोग मानव सभ्यता में वज्ञान और उसके विभिन्न पहलुओं और भूमिकाओं को चित्रित करने के लिए प्रभावी माध्यम के रूप में किया जा सकता है। यह छात्रों और युवाओं जैसे आला दर्शकों को शिक्षित करके परिवर्तनकारी प्रभाव छोड़ने में सक्षम है। भारत में, वज्ञान प्रसार द्वारा लगभग 4000 वज्ञान फिल्मों पहले ही बनायीं जा चुकी हैं और दर्शकों के लिए उपलब्ध करायीं जा चुकी हैं। कुछ अन्य संस्थान जैसे डीडी, एनसीएसटीसी (डीएसटी) और कुछ निजी चैनल भी वज्ञान फिल्म बनाने की दुनिया में मुख्य खिलाड़ी हैं।”

डॉ. नौटियाल ने कहा, पश्चिमी सनेमा, जो पहले से ही साइंस फक्शन शैलियों में समृद्ध था, ने जुरासिक पार्क, इंटरस्टेलर, ग्रेवटी, स्टार वार्स जैसी फिल्मों का निर्माण किया, और अपने दर्शकों के लिए एक पूरी तरह से अलग दुनिया बनायी। वहीं, ‘मस्टर एक्स इन बॉम्बे’, ‘कोई मल गया’, ‘क्रश’ और ‘द्रोणा’ जैसी फिल्मों ने साइंस फक्शन लीग में भारतीय सनेमा का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने कहा, “वज्ञान और प्रौद्योगिकी, कुल मिलाकर एक राष्ट्र की नियति को नियंत्रित करते हैं, और अंततः राष्ट्र के औद्योगीकरण और तकनीकी उद्भव को आकार देने में मदद करते हैं।”

अरुण चड्ढा, फिल्म निर्माता और जूरी अध्यक्ष, आईएसएफएफआई-2022; प्रो. शंभुनाथ सिंह, पूर्व कुलपति, पटना विश्व विद्यालय और संस्थापक निदेशक, SoJMS, इग्नू, जूरी सदस्य,



आईएसएफएफआई-2022; राजीव वर्मा, प्रसिद्ध अभिनेता, जूरी सदस्य, आईएसएफएफआई-2022; डॉ नकुल पाराशर, निदेशक, वज्ञान प्रसार; डॉ सुधीर एस. भदौरिया, महासचिव,

वज्ञान भारती; और निमेष कपूर, फिल्म महोत्सव के संयोजक एवं वैज्ञानिक-ई, वज्ञान प्रसार भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

वज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ नकुल पाराशर ने कहा कि भारत का अंतर्राष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव वज्ञान संचार, लोकप्रियता और इसके विस्तार (SCoPE) में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

आईएसएफएफआई-2022 के समन्वयक और वज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक निमेष कपूर ने बताया है कि “वज्ञान फिल्मोत्सव के अंतर्गत वज्ञान, प्रौद्योगिकी और शोध तथा विकास से जुड़े विविध विषयों पर चार श्रेणियों में फिल्म प्रदर्शियां आमंत्रित की गई थीं। प्राप्त 437 प्रदर्शियों में से 61 भारतीय और 33 विदेशी फिल्मों को समारोह के लिए नामांकित किया गया है। भारत, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, रूस, कनाडा, इजराइल, फ्लोपींस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों की पुरस्कृत वज्ञान फिल्मों की विशेष स्क्रीनिंग फिल्मोत्सव में की जाएगी। फिल्म महोत्सव में किसी प्रकार का शुल्क नहीं रखा गया है। 21 से 23 जनवरी 2023 के दौरान इन फिल्मों की स्क्रीनिंग में बच्चों और छात्रों समेत हर आयु वर्ग के लोग आकर फिल्में देख सकते हैं।”

फिल्म महोत्सव के उद्घाटन सत्र के दौरान एक फिल्म - ‘रिटर्न ऑफ चीता’ दिखाई गई। इस 2.27 मिनट की फिल्म का निर्माण क्रिएटिव चैनल और पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा किया गया है। यह लघु फिल्म खूबसूरती से दर्शाती है कि कैसे भारत में चीतों की वापसी मानव निर्मित पारिस्थितिक दोष को ठीक करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नामीबियाई चीतों का भारत आना विश्व में एक ऐतिहासिक घटना है।



PRAJA AMARAVATI

देश और लोगों को सशक्त बनाता है वैज्ञानिक चेतना से
लैस सनेमा” उमाशंकर मश्र

January 21, 2023 • GUDIBANDI SUDHAKAR REDDY
“देश और लोगों को सशक्त बनाता है वैज्ञानिक चेतना से लैस सनेमा”

उमाशंकर मश्र



भोपाल, 21 जनवरी (इंडिया साइंस वायर) (prajaamaravathi): भारतीय राष्ट्रीय वज्ञान अकादमी (INSA) में वज्ञान संचार सलाहकार डॉ चंद्र मोहन नौटियाल ने कहा क वज्ञान से



भरपूर सनेमा समाज की तकनीकी ताकत है और यह देश और इसके लोगों को सशक्त बनाने का एक प्रभावी उपकरण है। वह शनिवार को रजत जयंती सभागार, पं. खुशी लाल शर्मा आयुर्वेद संस्थान, भोपाल, मध्य प्रदेश में शुरू हुए तीन दिवसीय भारतीय अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव (आईएसएफएफआई) में मुख्य वक्ता के तौर पर बोल रहे थे। प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. चंद्र मोहन नौटियाल जी-20 के कार्यकारी समूहों में से एक वज्ञान-20 (एस-20) के विशेष संदर्भ में "फिल्म्स टू रिफ्लेक्ट इंडियाज इमर्जेस एज साइंस एंड टेक्नोलॉजी लीडर" वषय पर सभा को संबोधित कर रहे थे।

वर्ष 2023 में जी-20 की अध्यक्षता भारत कर रहा है। 2023 के लिए S-20 की थीम 'नवोन्मेषी और सतत् विकास के लिए वघटनकारी वज्ञान' है। पहले कई वर्षों से, G-20 देशों का समूह जलवायु परिवर्तन शमन और सतत् विकास जैसी अन्य वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने की दिशा में काम कर रहा है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए S-20 सहित कई कार्यकारी समूहों की स्थापना की गई है।

इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (ISFFI); भोपाल के मौलाना आज़ाद नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MANIT) में चल रहे चार दिवसीय भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ)-2022 का एक प्रमुख घटक है। आईआईएसएफ-2022 का उद्घाटन शनिवार को मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश, शवराज सिंह चौहान; और केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) वज्ञान और प्रौद्योगिकी; राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी वज्ञान; एमओएस पीएमओ, कार्मक, लोक शकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष, डॉ जितेंद्र सिंह की उपस्थिति में किया गया है। भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार प्रो. अजय कुमार सूद; राजेश एस. गोखले, सचिव, जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार; डॉ एन कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर और सचिव, डीएसआईआर; एम. र वचंद्रन, सचिव, पृथ्वी वज्ञान मंत्रालय; ओम प्रकाश सखलेचा, वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, मध्य प्रदेश; और निकुंज श्रीवास्तव, सचिव- वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, मध्य प्रदेश भी आईआईएसएफ के उद्घाटन के दौरान भी मौजूद थे।

कोविड-19 महामारी के दौरान भारत के लचीलेपन का उल्लेख करते हुए, डॉ. सीएम नौटियाल ने वज्ञान और प्रौद्योगिकी की ताकत और लोगों को बीमारी के बारे में शिक्षित करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने जी-20 और एस-20 पहलों के महत्व के बारे में भी बताया। डॉ. नौटियाल ने कहा, एस-20 वज्ञान में सहयोग के लिए शुरू की गई पहल है। कहीं भी राष्ट्र को महाशक्ति बनाने के लिए संचार के माध्यम से एस-20 कार्यक्रमों में वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं की भागीदारी बहुत आवश्यक है। इन वकासात्मक कार्यक्रमों को संचार के कई



चैनलों द्वारा समर्थित किया जाता है, और ऐसे कुशल माध्यमों में से एक फिल्म और सनेमा है।

डॉ नौटियाल ने कहा, “चूंकि फिल्म और सनेमा को बड़े पैमाने पर लोगों द्वारा आसानी से समझा जा सकता है, खासकर आमजन द्वारा भी इसे समझा जा सकता है। इसी लिए, फिल्मों का उपयोग मानव सभ्यता में विज्ञान और उसके विभिन्न पहलुओं और भूमिकाओं को चित्रित करने के लिए प्रभावी माध्यम के रूप में किया जा सकता है। यह छात्रों और युवाओं जैसे आला दर्शकों को लक्षित करके परिवर्तनकारी प्रभाव छोड़ने में सक्षम है। भारत में, विज्ञान प्रसार द्वारा लगभग 4000 विज्ञान फिल्मों पहले ही बनायीं जा चुकी हैं और दर्शकों के लिए उपलब्ध करायीं जा चुकी हैं। कुछ अन्य संस्थान जैसे डीडी, एनसीएसटीसी (डीएसटी) और कुछ निजी चैनल भी विज्ञान फिल्म बनाने की दुनिया में मुख्य खिलाड़ी हैं।”

डॉ नौटियाल ने कहा, पश्चिमी सनेमा, जो पहले से ही साइंस फक्शन शैलियों में समृद्ध था, ने जुरासिक पार्क, इंटरस्टेलर, ग्रे वटी, स्टार वार्स जैसी फिल्मों का निर्माण किया, और अपने दर्शकों के लिए एक पूरी तरह से अलग दुनिया बनायी। वहीं, ‘मस्टर एक्स इन बॉम्बे’, ‘कोई मल गया’, ‘क्रश’ और ‘द्रोणा’ जैसी फिल्मों ने साइंस फक्शन लीग में भारतीय सनेमा का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने कहा, “विज्ञान और प्रौद्योगिकी, कुल मिलाकर एक राष्ट्र की नियति को नियंत्रित करते हैं, और अंततः राष्ट्र के औद्योगिकरण और तकनीकी उद्भव को आकार देने में मदद करते हैं।”

अरुण चड्ढा, फिल्म निर्माता और जूरी अध्यक्ष, आईएसएफएफआई-2022; प्रो. शंभुनाथ सिंह, पूर्व कुलपति, पटना विश्व विद्यालय और संस्थापक निदेशक, SoJMS, इग्नू, जूरी सदस्य, आईएसएफएफआई-2022; राजीव वर्मा, प्रसिद्ध अभिनेता, जूरी सदस्य, आईएसएफएफआई-2022; डॉ नकुल पाराशर, निदेशक, विज्ञान प्रसार; डॉ सुधीर एस. भदौरिया, महासचिव, विज्ञान भारती; और निमेष कपूर, फिल्म महोत्सव के संयोजक एवं वैज्ञानिक-ई, विज्ञान प्रसार भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

विज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ नकुल पाराशर ने कहा कि भारत का अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान फिल्म महोत्सव विज्ञान संचार, लोक प्रियता और इसके विस्तार (SCOPE) में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

आईएसएफएफआई-2022 के समन्वयक और विज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक निमेष कपूर ने बताया है कि “विज्ञान फिल्मोत्सव के अंतर्गत विज्ञान, प्रौद्योगिकी और शोध तथा विकास से



जुड़े व वध वषयों पर चार श्रेणियों में फिल्म प्रवष्टियां आमंत्रित की गई थीं। प्राप्त 437 प्रवष्टियों में से 61 भारतीय और 33 वदेशी फिल्मों को समारोह के लिए नामांकित किया गया है। भारत, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, रूस, कनाडा, इजराइल, फलीपींस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों की पुरस्कृत वज्ञान फिल्मों की विशेष स्क्रीनिंग फिल्मोत्सव में की जाएगी। फिल्म महोत्सव में कसी प्रकार का शुल्क नहीं रखा गया है। 21 से 23 जनवरी 2023 के दौरान इन फिल्मों की स्क्रीनिंग में बच्चों और छात्रों समेत हर आयु वर्ग के लोग आकर फिल्में देख सकते हैं।”

फिल्म महोत्सव के उद्घाटन सत्र के दौरान एक फिल्म - 'रिटर्न ऑफ चीता' दिखाई गई। इस 2.27 मिनट की फिल्म का निर्माण क्रएटिव चैनल और पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा किया गया है। यह लघु फिल्म खूबसूरती से दर्शाती है कि कैसे भारत में चीतों की वापसी मानव निर्मित पारिस्थितिक दोष को ठीक करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। नामीबियाई चीतों का भारत आना विश्व में एक ऐतिहासिक घटना है। (इंडिया साइंस वायर)





देश और लोगों को सशक्त बनाता है वज्ञान से भरपूर सनेमा

By [PBNS](#)

January 24, 2023



“वज्ञान से भरपूर सनेमा समाज को मजबूत करता है और राष्ट्र को सशक्त बनाने का एक प्रभावी साधन है।” यह बात भारत अंतर्राष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव 2022 में आयोजित तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव में वज्ञान संचार के सलाहकार डॉ चंद्रमोहन नौटियाल ने कही। वह नई दिल्ली में इस समारोह में मुख्य वक्ता थे।

डॉ नौटियाल मुख्य रूप से 'फिल्म्स टू रिफ्लेक्ट इंडियाज इमर्जेस एज साइंस एंड टेक्नोलॉजी लीडर' पर बोल रहे थे जो मुख्य रूप से साइंस 20 के संदर्भ में था। साइंस 20, भारत की



अध्यक्षता वाले जी20 का एक कार्यकारी समूह है। यह संबोधन विशेष रूप से वज्ञान फिल्म निर्माताओं और वज्ञान फिल्म के प्रति उत्साह रखने वाले लोगों के लिए था।

जी20 और एस 20 सतत विकास में सहायक

गत कई वर्षों से जी 20 देशों का समूह जलवायु परिवर्तन शमन और सतत विकास जैसे अन्य वैश्विक गति व धर्यों वदिशा में लगा हुआ है और लगातार चुनौतियों का समाधान ढूँढ रहा है। ऐसे ही लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए वज्ञान 20 जैसे कई कार्यकारी समूह स्थापित किए गए हैं। साल 2023 के लिए वज्ञान 20 की थीम नवोन्मेषी और सतत विकास के लिए वघटनकारी वज्ञान” है। डॉ नौटियाल ने जी20 और एस 20 पहलों के महत्व के बारे में बताते हुए यह भी बताया कि कस प्रकार यह सतत विकास में सहायक है।

एस-20 वज्ञान में सहयोग के लिए है, वज्ञान और इसके व भन्न क्षेत्रों के लाभों को मानवीय मूल्यों और सभ्यता की बेहतरी में शामिल किया जा सकता है। राष्ट्र को महाशक्ति बनाने हेतु संचार माध्यमों से एस-20 कार्यक्रमों में वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं की भागीदारी बहुत आवश्यक है। इन वकासात्मक कार्यक्रमों को संचार के कई माध्यमों द्वारा समर्थित किया जाता है, और इनमें से ही एक कुशल माध्यम फिल्म और सनेमा है। फिल्म और सनेमा को जनता द्वारा आसानी से समझा जा सकता है, इसका उपयोग मानव सभ्यता में वज्ञान और उसके व भन्न पहलुओं और भूमिकाओं को चित्रित करने के लिए भी किया जा सकता है।

वज्ञान प्रसार द्वारा भारत में लगभग 4000 वज्ञान आधारित फिल्मों दर्शकों के लिए हैं। डॉ नौटियाल ने कहा, कुछ अन्य संस्थान जैसे डीडी, एनसीएसटीसी (डीएसटी) और कुछ निजी चैनल भी वज्ञान फिल्म बनाने की दुनिया के मुख्य खिलाड़ी हैं। पश्चिमी सनेमा, जो पहले से ही वज्ञान-कथा शैली में समृद्ध है, ने जुरासिक पार्क, इंटरस्टेलर, ग्रे वटी, स्टार वार्स जैसी फिल्मों का निर्माण किया है और अपने दर्शकों के लिए एक पूरी तरह से अलग दुनिया बनाई है। मस्टर एक्स इन बॉम्बे, कोई मल गया, क्रश और द्रोण जैसी फिल्मों ने साइंस-फक्शन लीग में भारतीय सनेमा का प्रतिनिधित्व किया है। वज्ञान और प्रौद्योगिकी, कुल मिलाकर एक राष्ट्र की नियति को नियंत्रित करते हैं और अंततः एक राष्ट्र के औद्योगीकरण और तकनीकी उद्भव को आकार देने में मदद करते हैं।



वज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ नकुल पराशर ने कहा, 'भारत का अंतर्राष्ट्रीय वज्ञान फिल्म महोत्सव वज्ञान संचार, लोक प्रयता और इसके वस्तार (एससीओपीई) में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।'

वदेशी फिल्मों भी नामांकित

आईएसएफएफआई-2022 के समन्वयक निमेष कपूर ने कहा, "वज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुसंधान एवं विकास से संबंधित चार श्रेणियों में फिल्म प्रवृष्टियों को आमंत्रित किया गया था। प्राप्त 437 प्रवृष्टियों में से 61 भारतीय और 33 वदेशी फिल्मों को महोत्सव के लिए नामांकित किया गया है। फिल्म महोत्सव में भारत, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, रूस, कनाडा, इजरायल, फलीपींस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और अन्य देशों की पुरस्कार विजेता वज्ञान फिल्मों की विशेष स्क्रीनिंग की जाएगी। फिल्म महोत्सव के लिए कोई भागीदारी शुल्क नहीं है। 21 से 23 जनवरी 2023 के दौरान बच्चों और छात्रों सहित सभी आयु वर्ग के लोग आ सकते हैं और वज्ञान फिल्मों देख सकते हैं।

रिटर्न ऑफ चीता

इस फिल्म महोत्सव के उद्घाटन में एक फिल्म - 'रिटर्न ऑफ चीता' दिखाई गई। 2.27 मिनट की इस फिल्म का निर्माण क्रएटिव चैनल और मनिस्ट्री ऑफ फॉरेस्ट एंड क्लाइमेट चेंज ने किया है। लघु फिल्म दर्शाती है कि कैसे भारत में चीतों की वापसी मानव निर्मित पारिस्थितिक दोष को ठीक करने की दिशा में एक कदम है। नामीबियाई चीतों का भारत आना विश्व में एक ऐतिहासिक घटना है क्योंकि कभी भी एक बड़े मांसाहारी जानवर ने एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप में प्रवास नहीं किया।



भोपाल में आठवें भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव का भव्य शुभारंभ

January 23, 2023 by Dialogue India

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्वराज सिंह चौहान और केंद्रीय वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने शनिवार को भोपाल में संयुक्त रूप से इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ-2022) का उद्घाटन किया। वज्ञान के महाकुंभ के नाम से वख्यात इस महोत्सव की थीम “वज्ञान प्रौद्योगिकी और नवाचार के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर” है।

ओम प्रकाश सखलेचा, वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार, प्रोफेसर अजय कुमार सूद, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार, डॉ राजेश गोखले, सचिव जैव प्रौद्योगिकी वभाग, भारत सरकार, डॉ एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, सीएसआईआर एवं सचिव, डीएसआईआर, डॉ सुधीर भदौरिया, महासचिव, वज्ञान भारती, डॉ संजय मश्रा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, जैव प्रौद्योगिकी वभाग, निकुंज श्रीवास्तव, प्रमुख सचिव, वज्ञान और प्रौद्योगिकी वभाग, मध्य प्रदेश, और भारत सरकार तथा मध्य प्रदेश सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री श्वराज सिंह चौहान ने अपने संबोधन में कहा क अकेले मध्य प्रदेश में एक साल में 2600 स्टार्ट-अप शुरू हुए और यह केवल इंदौर शहर तक ही सी मत नहीं है, बल्कि टियर-2 और टियर-3 शहरों में भी सफल स्टार्ट-अप की भरमार है। उन्होंने मध्य प्रदेश के वद्यार्थियों और उद्यमियों से नवाचार के प्रति उत्साह वकसत करने का आह्वान किया।

अपने वक्तव्य में डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा क भारत क्वांटम टेक्नोलॉजी में एक बड़ी छलांग लगाने की तैयारी कर रहा है, जो भवष्य के वज्ञान को दुनिया की प्रमुख समस्याओं के व्यावहारिक समाधान के साथ परिभाषित करेगा। डॉ सिंह ने कहा क आईआईएसएफ-2022 का आयोजन ऐसे समय में हो रहा है, जब भारत ने 2023 में जी20 की अध्यक्षता ग्रहण की है। यह न केवल बहुआयामी वकासात्मक आयामों को प्रदर्शित करेगा, बल्कि भारत की सार्वभौमिक



रूप से मान्यता प्राप्त क्षमता को भी प्रदर्शित करेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान पर संयुक्त राष्ट्र ने 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष' घोषित किया है। केंद्रीय मंत्री ने यह भी बताया कि भारत 2023 में शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की बैठक की भी अध्यक्षता करेगा, इस प्रकार यह अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत के बढ़ते कद को प्रदर्शित करेगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जून 2020 में अंतरिक्ष क्षेत्र को अनलॉक करने, ड्रोन प्रौद्योगिकियों के उदारीकरण, भू-स्थानिक दिशानिर्देशों के लिए कैबिनेट की मंजूरी और हाल ही में 20000 करोड़ रुपये के हरित हाइड्रोजन मिशन जैसे ऐतिहासिक फैसलों ने भारत के तेजी से विकास के लिए नए रास्ते खोले हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि "प्रौद्योगिकी और नवाचार" भारत की 2047 की अर्थव्यवस्था के पथप्रदर्शक होने जा रहे हैं, जब भारत अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष मनाएगा।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि जून 2020 में अंतरिक्ष क्षेत्र को निजी भागीदारी के लिए खोले जाने के बाद, दो वर्षों में लगभग 120 डीप टेक अंतरिक्ष स्टार्ट-अप भारत में आए हैं। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष स्टार्ट-अप न केवल अंतरिक्ष में रॉकेट भेज रहे हैं, बल्कि उपग्रह निर्माण, कचरा प्रबंधन और कई अन्य दैनिक जीवन से जुड़े क्षेत्रों में भी स्टार्ट-अप शामिल हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि आज विज्ञान जीवन के हर क्षेत्र में प्रवेश कर चुका है और यह न केवल भारत की अर्थव्यवस्था या युवाओं से संबंधित है, बल्कि भारत के भविष्य के साथ भी गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने समावेशी जुड़ाव को भी रेखांकित किया और गर्व के साथ कहा कि महिला वैज्ञानिक गगनयान परियोजना सहित प्रमुख विज्ञान और प्रौद्योगिकी मिशनों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं।

मध्य प्रदेश के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ओम प्रकाश सखलेचा ने बताया कि भोपाल में चार दिवसीय विज्ञान महोत्सव में स्टूडेंट साइंस वलेज की तरह 15 महत्वपूर्ण आयोजन होंगे, जिसमें 2500 छात्र भाग लेंगे और नई तकनीकों और नवाचारों से रूबरू होंगे। उन्होंने कहा कि मेगा स्टार्ट-अप एक्सपो के अलावा 1500 युवा वैज्ञानिक जैव प्रौद्योगिकी सहित सभी क्षेत्रों में उभरती प्रौद्योगिकी पर मंथन करेंगे। श्री सखलेचा ने कहा कि अमृतकाल में नवाचार नए भारत को परिभाषित करेंगे और स्टार्ट-अप और उद्योगों को आगे बढ़ने के लिए भारत सरकार और मध्य प्रदेश सरकार दोनों ही भरपूर सहयोग दे रही हैं।



प्रोफेसर अजय सूद, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार ने बताया क वज्ञान एक स्थिर वषय नहीं है, बल्कि हर दिन नई सफलता के साथ बढ रहा है। उन्होंने कहा क हर प्रगति में वज्ञान, प्रौद्यो गकी और नवाचारों का योगदान होता है। प्रोफेसर सूद ने कहा क भारत बहुत कम समय में इनोवेशन इंडेक्स में 86 से 41वीं रैंक पर पहुंच गया है। उन्होंने कहा क सेमी-कंडक्टर मशन शुरू होने से भारत की अर्थव्यवस्था को बूस्टर डोज मलने जा रहा है। उन्होंने रेखांकित कया क हमें सर्कुलर इकोनॉमी को रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बनाने के लए प्रयास करने होंगे और वेस्ट टू वेल्थ कार्यक्रम की गति व धर्यों को बढ़ाने के लए प्रयास करने होंगे।

जैव प्रौद्यो गकी वभाग के सचिव डॉ राजेश गोखले ने अपने संबोधन में कहा क भवष्य की सभी चुनौतियों से सार्वभौमिक वैज्ञानिक हस्तक्षेप से ही निपटा जा सकता है, जिसे को वड संकट ने काफी हद तक प्रदर्शित कया है। उन्होंने कहा क डीबीटी वैश्विक प्रभाव के साथ भारत में बायोटेक स्टार्ट-अप को बढ़ावा देने के लए ठोस प्रयास कर रहा है।

वज्ञान भारती के महासचिव डॉ सुधीर भदौरिया ने कहा क योग हो, आयुर्वेद हो, वास्तुकला हो या खगोल वज्ञान; भारत की वैज्ञानिक शक्ति को दुनिया ने पहचाना है। उन्होंने कहा क वज्ञान भारती देश और पूरी मानवता के लाभ के लए आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और सोच को बढ़ावा देने के लए भारत में वश्व वद्यालयों और महा वद्यालयों, वज्ञान मंत्रालयों और वज्ञान वभाग के साथ काम कर रहा है। डॉ भदौरिया ने कहा क दुनिया हैरानी से देख रही है क भारत कैसे एक बार में 104 सैटेलाइट भेज रहा है या सबसे सस्ता मंगल मशन लॉन्च कर रहा है।

कार्यक्रम के अन्य महत्वपूर्ण वक्ता और वशेषज्ञ, जो आईआईएसएफ-2022 में भाग ले रहे हैं, में डॉ कृष्णा एल्ला, सीएमडी, भारत बायोटेक, डॉ अर्चना शर्मा, वैज्ञानिक, सर्न, जिनेवा, एस. सोमनाथ, अध्यक्ष, इसरो, परसस्टेंट सस्टम्स के संस्थापक और सीएमडी आनंद देशपांडे, डीएसटी-आईआईजी के निदेशक प्रोफेसर ए.पी. डमरी, पीआरएल के निदेशक डॉ अनिल भारद्वाज, आईएनएसटी, मोहाली के निदेशक प्रोफेसर अमताभ पात्रा, और आईएसीएस के निदेशक प्रोफेसर तापस चक्रवर्ती शामिल हैं।

आईआईएसएफ-2022 के दौरान फेस-टू-फेस इन न्यू फ्रंटियर्स ऑफ साइंस, वज्ञान एवं प्रौद्यो गकी के वभन्न वषयों में उत्कृष्ट लोगों के साथ छात्रों/शोधकर्ताओं के साथ संवाद और



लघु चर्चा-आधारित सत्रों का एक मंच होगा। यह छात्रों को अपने करियर में वज्ञान और अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगा।

डॉ कृष्णा एल्ला, सीएमडी, भारत बायोटेक, “वज्ञान और उदय मता के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत को सशक्त बनाना” शीर्षक वाले सत्र का नेतृत्व करेंगे, जब क आनंद देशपांडे, संस्थापक और सीएमडी पर सस्टेंट सस्टम्स “डेटा साइंस में तकनीकी प्रगति और डिजिटल परिवर्तन में भारत के नेतृत्व” पर सत्र की अध्यक्षता करेंगे। डॉ अर्चना शर्मा, “ब्रह्मांड के रहस्यों को खोलने में एक वैज्ञानिक यात्रा” पर मुख्य वक्ता होंगी, जब क इसरो के अध्यक्ष “अंतरिक्ष की सीमाओं में तकनीकी प्रगति के साथ अमृतकाल की ओर अग्रसर” सत्र की अध्यक्षता करेंगे। वज्ञान महोत्सव के दौरान आयोजित युवा वैज्ञानिक सम्मेलन के वर्षों में वज्ञान अनुसंधान, महामारी की चुनौतियां, टीका वकास में प्रभाव और अनुसंधान, जल संसाधन, संरक्षण, पुनर्चक्रण और शुद्धकरण, जैव व वधता, पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन, आत्मनिर्भर भारत के लिए खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा के प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं। इसी प्रकार, न्यू एज टेक्नोलॉजीज शो (22-24 जनवरी) के आयोजन का उद्देश्य आर्टि फ शयल इंटे लर्जेंस मशीन लर्निंग, साइबर सक्योरिटी, ब्लॉक चेन, डिजिटल करेंसी इंडस्ट्री, 5G/6G, क्वांटम कंप्यूटिंग, सेमीकंडक्टर चप डिजाइन, ग्रीन एनर्जी, स्पेस टेक्नोलॉजीज, सेंसर टेक्नोलॉजीज, सस्टम्स एवं संथेटिक बायोलांजी, और ड्रोन जैसी अत्याधुनिक तकनीकों में नवाचार को बढ़ावा देना है।



Science-Rich Cinema Empowers the Nation and People

International Science Film Festival of India (ISFFI) is a major component of four-day India International Science Festival (IISF)-2022

By Umashankar Mishra On Jan 23, 2023



DrNakul Parasher, Shambhunath Singh, Arun Chaddha, Dr Sudhir Bhadauria, Dr Chandramohan Nautiyal and Nimish Kapoor

Science-rich cinema strengthens society and is an effective tool to empower the nation, said Dr Chandra Mohan Nautiyal, Consultant, Science Communication, at Indian National Science Academy (INSA), New Delhi. He was speaking as a keynote speaker at the three-day International Science Film Festival of India (ISFFI), conducted as a part of the India International Science Festival(IISF) 2022.

A renowned scientist, Dr Nautiyal, delivered his keynote address on “Films to Reflect India’s Emergence as Science & Technology Leader” in the special

context of Science-20 (S-20), one of the working groups of G-20 being presided over by India in 2023. It was addressed to a gathering of science filmmakers, and science film enthusiasts assembled at Rajat Jayanti Auditorium, Pt. Khushilal Sharma Ayurveda Institute, Bhopal, Madhya Pradesh.

The theme of the S-20 for 2023 is 'Disruptive Science for Innovative and Sustainable Development.' For the past several years, the group of G20 countries has been working towards addressing other global challenges, such as climate change mitigation and sustainable development. Several working groups have been established, including S-20, to achieve these goals.

International Science Film Festival of India (ISFFI) is a major component of the four-day India International Science Festival (IISF)-2022, inaugurated on Saturday, in the presence of Chief Minister, Madhya Pradesh, Shivraj Singh Chauhan; and Union Minister of State (Independent Charge) Science & Technology; Minister of State (Independent Charge) Earth Sciences; Minister of State PMO, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr Jitendra Singh'.

Principal Scientific Adviser to the Government of India, Prof. Ajay Kumar Sood; Rajesh S. Gokhale, Secretary, Department of Biotechnology, Government of India; Dr N Kalaiselvi, DG, CSIR and Secretary, DSIR; M. Ravichandran, Secretary, MoES; Om Prakash Sakhlecha, S&T Minister, Madhya Pradesh; and Nikunj Srivastava, Secretary- S&T, Madhya Pradesh, were also present during the inauguration of IISF-2022, in Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT) of Bhopal.

Stating the resilience of India during the COVID-19 pandemic, Dr CM Nautiyal highlighted the strength of science and technology and their crucial role in educating people about the disease. He also stated the importance emergence of G-20 and S-20 initiatives and how these have helped in sustainable development.



As S-20 stands for Cooperation in Science, the benefits of science and its various fields can easily be incorporated into improving human values and civilization. Engagement of scientists and researchers in the S-20 programmes through communication is much needed to make any nation a superpower. These developmental programmes are backhanded by multiple communication channels, and one of the efficient mediums is film and cinema, said Dr Nautiyal.

As the masses can easily understand film and cinema, they can also be used to portray science and its different aspects and roles in human civilization. This can be done by targeting niche audiences like students and youth who have been perceiving science as creativity and innovation. In India, around 4000 science-based films have already been produced and made available to the audience by VIGYAN PRASAR. Some other institutions like DD, NCSTC (DST) and some private channels are the main players in the science film-making world, said DR Nautiyal.

Dr Nautiyal said that western cinema, already rich in science-fiction, has produced movies like JURASSIC PARK, INTERSTELLAR, GRAVITY, and STAR WARS and created a different world for its viewers. Movies like Mr. X IN Bombay, Koi Mil Gaya, Krrish, and Drona have represented Indian Cinema in the science-fiction league. Science and technology, on the whole, control a nation's destinies and eventually help shape industrialization and technological emergence.

Arun Chadha, Veteran Filmmaker and Jury Chair, ISFFI-2022; Prof. Shambhu Nath Singh, Former VC, Patna University, Jury Member, ISFFI-2022; Rajiv Verma, Veteran Actor, Jury Member, ISFFI-2022, DrNakul Parashar, Director, Vigyan Prasar, DrSudhir S. Bhadauria, Secretary General, Vijnana Bharati; and Nimish Kapoor, Festival Convener, Scientist-E, Vigyan Prasar were also present on the occasion.



'International Science film festival of India is playing a crucial role in Science Communication, Popularisation & its Extension (SCoPE),' said Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar.

Nimish Kapoor, Coordinator, ISFFI-2022, said, "Film entries were invited in four categories related to science, technology, and research & development. Out of 437 entries received, 61 Indian and 33 foreign films have been nominated for the festival. Special screening of award-winning science films from India, Switzerland, Germany, Russia, Canada, Israel, Philippines, USA, Australia and other countries will be done at the film festival. There is no participation fee for the film festival. People of all age groups, including children and students, can come and watch the science films from 21 to 23 January 2023."

A film - 'Return of Cheetah' was screened during the inaugural session of the film festival. Creative Channel and the Ministry of Forest and Climate Change have produced this 2.27-minute film. The short film beautifully depicts how the return of cheetahs to India is a step towards correcting the man-made ecological fault. Introduction to Namibian Cheetahs Coming to India is a historical event because a large carnivorous animal never migrated from one continent to another. (India Science Wire)



Science-rich cinema empowers the nation and people”

January 23, 2023 by Dialogue India

By Umashankar Mishra

): Science-rich cinema strengthens society and is an effective tool to empower the nation, said, Dr Chandra Mohan Nautiyal, Consultant, Science Communication, at Indian National Science Academy (INSA), New Delhi. He was speaking as a keynote speaker at the three-day International Science Film Festival of India (ISFFI), conducted as a part of the India International Science Festival (IISF) 2022.

A renowned scientist, Dr Nautiyal delivered his keynote address on “Films to Reflect India’s Emergence as Science & Technology Leader” in special context of Science-20 (S-20), one of the working groups of G-20 being presided over by India in 2023. It was addressed to a gathering of science filmmakers and science film enthusiasts assembled at Rajat Jayanti Auditorium, Pt. Khushilal Sharma Ayurveda Institute, Bhopal, Madhya Pradesh.

The theme of the S-20 for 2023 is ‘Disruptive Science for Innovative and Sustainable Development.’ For the past several years, the group of G20 countries has been working towards addressing other global challenges such as climate change mitigation and sustainable development. Several working groups have been established, including S-20, to achieve these goals.

International Science Film Festival of India (ISFFI) is a major component of four-day India International Science Festival (IISF)-2022, inaugurated on



Saturday, in the presence of Chief Minister, Madhya Pradesh, Shivraj Singh Chauhan; and Union Minister of State (Independent Charge) Science & Technology; Minister of State (Independent Charge) Earth Sciences; Minister of State PMO, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr Jitendra Singh’.

Principal Scientific Adviser to the Government of India, Prof. Ajay Kumar Sood; Rajesh S. Gokhale, Secretary, Department of Biotechnology, Government of India; Dr N Kalaiselvi, DG, CSIR and Secretary, DSIR; M. Ravichandran, Secretary, MoES; Om Prakash Sakhlecha, S&T Minister, Madhya Pradesh; and Nikunj Srivastava, Secretary- S&T, Madhya Pradesh, were also present during the inauguration of IISF-2022, in Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT) of Bhopal.

Stating the resilience of India during the COVID-19 pandemic, Dr CM Nautiyal highlighted the strength of science and technology, and its crucial role in educating people about the disease. He also stated the importance emergence of G-20 and S-20 initiatives, and how these have helped in sustainable development.

As S-20 stands for Cooperation in Science, the benefits of science and its various fields can easily be incorporated in the betterment of human values and civilization. Engagement of scientists and researchers in the S-20 programmes through communication is much needed to make any nation a superpower. These developmental programmes are backhanded by multiple channels of communication, and one of the efficient medium is film and cinema, said, Dr Nautiyal.

As film and cinema can easily be understood by masses, it can also be used to portray science and its different aspects and roles in human civilization. This can be done by targeting niche audience like students and youth who have

been perceiving science as creativity and innovation. In India, around 4000 science-based films have already been produced and made available to the audience by VIGYAN PRASAR. Some other institutions like DD, NCSTC (DST) and some private channels too are the main players in the science film making world, said, DR Nautiyal.

Dr Nautiyal said, western cinema, already rich in the science-fiction genre, has produced movies like JURASIC PARK, INTERSTELLAR, GRAVITY, STAR WARS, and created a totally different world for its viewers. Movies like Mr. X IN Bombay, Koi Mil Gaya, Krrish, and Drona have represented Indian Cinema in the science-fiction league. Science and technology, on a whole control the destinies of a nation and eventually help in shaping the industrialization and technological emergence of a nation.

Arun Chadha, Veteran Filmmaker and Jury Chair, ISFFI-2022; Prof. Shambhu Nath Singh, Former VC, Patna University, Jury Member, ISFFI-2022; Rajiv Verma, Veteran Actor, Jury Member, ISFFI-2022, Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar, Dr Sudhir S. Bhadauria, Secretary General, Vijnana Bharati; and Nimish Kapoor, Festival Convener, Scientist-E, Vigyan Prasar were also present on the occasion.

'International Science film festival of India is playing a crucial role in Science Communication, Popularisation & its Extention (SCoPE),' said Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar.

Nimish Kapoor, Coordinator, ISFFI-2022, said, "Film entries were invited in four categories related to science, technology, and research & development. Out of 437 entries received, 61 Indian and 33 foreign films have been nominated for the festival. Special screening of award winning science films from India, Switzerland, Germany, Russia, Canada, Israel, Philippines, USA, Australia and other countries will be done at the film festival. There is no participation fee for



the film festival. People of all age groups including children and students can come and watch the science films during 21 to 23 January 2023.”

A film - ‘Return of Cheetah’ was screened during the inaugural session of the film festival. This 2.27 minute film has been produced by Creative Channel and Ministry of Forest and Climate Change. The short film beautifully depicts how the return of cheetahs to India is a step towards correcting the man-made ecological fault. Introduction to Namibian Cheetahs Coming to India is a historical event in the world because never a large carnivorous animal migrated from one continent to another. (India Science Wire)



“Science-rich cinema empowers the nation and people”u

by [Umashankar Mishra](#)

[January 23, 2023](#) in [Science](#)



Science-rich cinema strengthens society and is an effective tool to empower the nation, said, Dr Chandra Mohan Nautiyal, Consultant, Science Communication, at Indian National Science Academy (INSA), New Delhi. He was speaking as a keynote speaker at the three-day International Science Film Festival of India (ISFFI), conducted as a part of the India International Science Festival (IISF) 2022.

A renowned scientist, Dr Nautiyal delivered his keynote address on “Films to Reflect India’s Emergence as Science & Technology Leader” in special context



of Science-20 (S-20), one of the working groups of G-20 being presided over by India in 2023. It was addressed to a gathering of science filmmakers and science film enthusiasts assembled at Rajat Jayanti Auditorium, Pt. Khushilal Sharma Ayurveda Institute, Bhopal, Madhya Pradesh.

The theme of the S-20 for 2023 is 'Disruptive Science for Innovative and Sustainable Development.' For the past several years, the group of G20 countries has been working towards addressing other global challenges such as climate change mitigation and sustainable development. Several working groups have been established, including S-20, to achieve these goals.

International Science Film Festival of India (ISFFI) is a major component of four-day India International Science Festival (IISF)-2022, inaugurated on Saturday, in the presence of Chief Minister, Madhya Pradesh, Shivraj Singh Chauhan; and Union Minister of State (Independent Charge) Science & Technology; Minister of State (Independent Charge) Earth Sciences; Minister of State PMO, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr Jitendra Singh'.

Principal Scientific Adviser to the Government of India, Prof. Ajay Kumar Sood; Rajesh S. Gokhale, Secretary, Department of Biotechnology, Government of India; Dr N Kalaiselvi, DG, CSIR and Secretary, DSIR; M. Ravichandran, Secretary, MoES; Om Prakash Sakhlecha, S&T Minister, Madhya Pradesh; and Nikunj Srivastava, Secretary- S&T, Madhya Pradesh, were also present during the inauguration of IISF-2022, in Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT) of Bhopal.

Stating the resilience of India during the COVID-19 pandemic, Dr CM Nautiyal highlighted the strength of science and technology, and its crucial role in educating people about the disease. He also stated the importance emergence of G-20 and S-20 initiatives, and how these have helped in sustainable development.



As S-20 stands for Cooperation in Science, the benefits of science and its various fields can easily be incorporated in the betterment of human values and civilization. Engagement of scientists and researchers in the S-20 programmes through communication is much needed to make any nation a superpower. These developmental programmes are backhanded by multiple channels of communication, and one of the efficient medium is film and cinema, said, Dr Nautiyal.

As film and cinema can easily be understood by masses, it can also be used to portray science and its different aspects and roles in human civilization. This can be done by targeting niche audience like students and youth who have been perceiving science as creativity and innovation. In India, around 4000 science-based films have already been produced and made available to the audience by VIGYAN PRASAR. Some other institutions like DD, NCSTC (DST) and some private channels too are the main players in the science film making world, said, DR Nautiyal.

Dr Nautiyal said, western cinema, already rich in the science-fiction genre, has produced movies like JURASIC PARK, INTERSTELLAR, GRAVITY, STAR WARS, and created a totally different world for its viewers. Movies like Mr. X IN Bombay, Koi Mil Gaya, Krrish, and Drona have represented Indian Cinema in the science-fiction league. Science and technology, on a whole control the destinies of a nation and eventually help in shaping the industrialization and technological emergence of a nation.

Arun Chadha, Veteran Filmmaker and Jury Chair, ISFFI-2022; Prof. Shambhu Nath Singh, Former VC, Patna University, Jury Member, ISFFI-2022; Rajiv Verma, Veteran Actor, Jury Member, ISFFI-2022, Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar, Dr Sudhir S. Bhadauria, Secretary General, Vijnana Bharati; and Nimish Kapoor, Festival Convener, Scientist-E, Vigyan Prasar were also present on the occasion.



'International Science film festival of India is playing a crucial role in Science Communication, Popularisation & its Extension (SCoPE),' said Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar.

Nimish Kapoor, Coordinator, ISFFI-2022, said, "Film entries were invited in four categories related to science, technology, and research & development. Out of 437 entries received, 61 Indian and 33 foreign films have been nominated for the festival. Special screening of award winning science films from India, Switzerland, Germany, Russia, Canada, Israel, Philippines, USA, Australia and other countries will be done at the film festival. There is no participation fee for the film festival. People of all age groups including children and students can come and watch the science films during 21 to 23 January 2023."

A film - 'Return of Cheetah' was screened during the inaugural session of the film festival. This 2.27 minute film has been produced by Creative Channel and Ministry of Forest and Climate Change. The short film beautifully depicts how the return of cheetahs to India is a step towards correcting the man-made ecological fault. Introduction to Namibian Cheetahs Coming to India is a historical event in the world because never a large carnivorous animal migrated from one continent to another. (India Science Wire)



Science-rich cinema empowers the nation and people

TOPICS: Science And Technology



Dr Nakul Parashar, Shambhunath Singh, Arun Chaddha, Dr Sudhir Bhadauria, Dr Chandramohan Nautiyal and Nimish Kapoor (from L to R)

Dr Nakul Parashar, Shambhunath Singh, Arun Chaddha, Dr Sudhir Bhadauria, Dr Chandramohan Nautiyal and Nimish Kapoor (from L to R)

POSTED BY: HASTAKSHEP NEWS 22 JANUARY 2023

By Umashankar Mishra

Bhopal, 22 January 2023: Science-rich cinema strengthens society and is an effective tool to empower the nation, said, Dr Chandra Mohan Nautiyal, Consultant, Science Communication, at Indian National Science Academy (INSA), New Delhi. He was speaking as a keynote speaker at the three-day International Science Film Festival of India (ISFFI), conducted as a part of the India International Science Festival (IISF) 2022.

A renowned scientist, Dr Nautiyal delivered his keynote address on “Films to Reflect India’s Emergence as Science & Technology Leader” in the special context of Science-20 (S-20), one of the working groups of G-20 being presided over by India in 2023. It was addressed to a gathering of science filmmakers and science film enthusiasts assembled at Rajat Jayanti Auditorium, Pt. Khushilal Sharma Ayurveda Institute, Bhopal, Madhya Pradesh.

The theme of the S-20 for 2023 is ‘Disruptive Science for Innovative and Sustainable Development.’ For the past several years, the group of G20 countries has been working towards addressing other global challenges such as climate change mitigation and sustainable development. Several working groups have been established, including S-20, to achieve these goals.

International Science Film Festival of India (ISFFI) is a major component of the four-day India International Science Festival (IISF)-2022, inaugurated on Saturday, in the presence of Chief Minister, Madhya Pradesh, Shivraj Singh Chauhan; and Union Minister of State (Independent Charge) Science & Technology; Minister of State (Independent Charge) Earth Sciences; Minister of State PMO, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr Jitendra Singh’.

Principal Scientific Adviser to the Government of India, Prof. Ajay Kumar Sood; Rajesh S. Gokhale, Secretary, Department of Biotechnology, Government of India; Dr N Kalaiselvi, DG, CSIR and Secretary, DSIR; M. Ravichandran, Secretary, MoES; Om Prakash Sakhlecha, S&T Minister, Madhya Pradesh; and Nikunj Srivastava, Secretary- S&T, Madhya Pradesh, were also present during the inauguration of IISF-2022, in Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT) of Bhopal.

Stating the resilience of India during the COVID-19 pandemic, Dr CM Nautiyal highlighted the strength of science and technology and their crucial role in educating people about the disease. He also stated the importance emergence



of G-20 and S-20 initiatives, and how these have helped in sustainable development.

As S-20 stands for Cooperation in Science, the benefits of science and its various fields can easily be incorporated into the betterment of human values and civilization. Engagement of scientists and researchers in the S-20 programmes through communication is much needed to make any nation a superpower. These developmental programmes are backhanded by multiple channels of communication, and one of the efficient mediums is film and cinema, said, Dr Nautiyal.

As film and cinema can easily be understood by the masses, it can also be used to portray science and its different aspects and roles in human civilization. This can be done by targeting niche audiences like students and youth who have been perceiving science as creativity and innovation. In India, around 4000 science-based films have already been produced and made available to the audience by VIGYAN PRASAR. Some other institutions like DD, NCSTC (DST) and some private channels too are the main players in the science film making world, said, DR Nautiyal.

Dr Nautiyal said, western cinema, already rich in the science-fiction genre, has produced movies like JURASSIC PARK, INTERSTELLAR, GRAVITY, and STAR WARS, and created a totally different world for its viewers. Movies like Mr X IN Bombay, Koi Mil Gaya, Krrish, and Drona have represented Indian Cinema in the science-fiction league. Science and technology, on a whole, control the destinies of a nation and eventually help in shaping the industrialization and technological emergence of a nation.

Arun Chadha, Veteran Filmmaker and Jury Chair, ISFFI-2022; Prof. Shambhu Nath Singh, Former VC, Patna University, Jury Member, ISFFI-2022; Rajiv Verma, Veteran Actor, Jury Member, ISFFI-2022, Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar, Dr Sudhir S. Bhadauria, Secretary General, Vijnana Bharati; and



Nimish Kapoor, Festival Convener, Scientist-E, Vigyan Prasar were also present on the occasion.

'International Science film festival of India is playing a crucial role in Science Communication, Popularisation & its Extention (SCoPE),' said Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar.

Nimish Kapoor, Coordinator, ISFFI-2022, said, "Film entries were invited in four categories related to science, technology, and research & development. Out of 437 entries received, 61 Indian and 33 foreign films have been nominated for the festival. Special screening of award-winning science films from India, Switzerland, Germany, Russia, Canada, Israel, Philippines, USA, Australia and other countries will be done at the film festival. There is no participation fee for the film festival. People of all age groups including children and students can come and watch the science films from 21 to 23 January 2023."

A film - 'Return of Cheetah' was screened during the inaugural session of the film festival. This 2.27-minute film has been produced by Creative Channel and the Ministry of Forest and Climate Change. The short film beautifully depicts how the return of cheetahs to India is a step towards correcting the man-made ecological fault. Introduction to Namibian Cheetahs Coming to India is a historical event in the world because never a large carnivorous animal migrated from one continent to another. (India Science Wire)



PRAJA AMARAVATI

Science-rich cinema empowers the nation and people” By Umashankar Mishra

January 22, 2023 • GUDIBANDI SUDHAKAR REDDY

Science-rich cinema empowers the nation and people”

By Umashankar Mishra



Bhopal, Jan 22 (India Science Wire) (prajaamaravathi): Science-rich cinema strengthens society and is an effective tool to empower the nation, said, Dr Chandra Mohan Nautiyal, Consultant, Science Communication, at Indian National Science Academy (INSA), New Delhi. He was speaking as a keynote speaker at the three-day International Science Film Festival of India (ISFFI), conducted as a part of the India International Science Festival (IISF) 2022.

A renowned scientist, Dr Nautiyal delivered his keynote address on “Films to Reflect India’s Emergence as Science & Technology Leader” in special context of Science-20 (S-20), one of the working groups of G-20 being presided over by India in 2023. It was addressed to a gathering of science filmmakers and science film enthusiasts assembled at Rajat Jayanti Auditorium, Pt. Khushilal Sharma Ayurveda Institute, Bhopal, Madhya Pradesh.

The theme of the S-20 for 2023 is ‘Disruptive Science for Innovative and Sustainable Development.’ For the past several years, the group of G20 countries has been working towards addressing other global challenges such as climate change mitigation and sustainable development. Several working groups have been established, including S-20, to achieve these goals.

International Science Film Festival of India (ISFFI) is a major component of four-day India International Science Festival (IISF)-2022, inaugurated on Saturday, in the presence of Chief Minister, Madhya Pradesh, Shivraj Singh Chauhan; and Union Minister of State (Independent Charge) Science & Technology; Minister of State (Independent Charge) Earth Sciences; Minister of State PMO, Personnel, Public Grievances, Pensions, Atomic Energy and Space, Dr Jitendra Singh’.

Principal Scientific Adviser to the Government of India, Prof. Ajay Kumar Sood; Rajesh S. Gokhale, Secretary, Department of Biotechnology, Government of India; Dr N Kalaiselvi, DG, CSIR and Secretary, DSIR; M. Ravichandran, Secretary, MoES; Om Prakash Sakhlecha, S&T Minister, Madhya Pradesh; and Nikunj Srivastava, Secretary- S&T, Madhya Pradesh, were also present during the inauguration of IISF-2022, in Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT) of Bhopal.

Stating the resilience of India during the COVID-19 pandemic, Dr CM Nautiyal highlighted the strength of science and technology, and its crucial role in educating people about the disease. He also stated the importance emergence



of G-20 and S-20 initiatives, and how these have helped in sustainable development.

As S-20 stands for Cooperation in Science, the benefits of science and its various fields can easily be incorporated in the betterment of human values and civilization. Engagement of scientists and researchers in the S-20 programmes through communication is much needed to make any nation a superpower. These developmental programmes are backhanded by multiple channels of communication, and one of the efficient medium is film and cinema, said, Dr Nautiyal.

As film and cinema can easily be understood by masses, it can also be used to portray science and its different aspects and roles in human civilization. This can be done by targeting niche audience like students and youth who have been perceiving science as creativity and innovation. In India, around 4000 science-based films have already been produced and made available to the audience by VIGYAN PRASAR. Some other institutions like DD, NCSTC (DST) and some private channels too are the main players in the science film making world, said, DR Nautiyal.

Dr Nautiyal said, western cinema, already rich in the science-fiction genre, has produced movies like JURASIC PARK, INTERSTELLAR, GRAVITY, STAR WARS, and created a totally different world for its viewers. Movies like Mr. X IN Bombay, Koi Mil Gaya, Krrish, and Drona have represented Indian Cinema in the science-fiction league. Science and technology, on a whole control the destinies of a nation and eventually help in shaping the industrialization and technological emergence of a nation.

Arun Chadha, Veteran Filmmaker and Jury Chair, ISFFI-2022; Prof. Shambhu Nath Singh, Former VC, Patna University, Jury Member, ISFFI-2022; Rajiv Verma, Veteran Actor, Jury Member, ISFFI-2022, Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar, Dr Sudhir S. Bhadauria, Secretary General, Vijnana Bharati; and



Nimish Kapoor, Festival Convener, Scientist-E, Vigyan Prasar were also present on the occasion.

'International Science film festival of India is playing a crucial role in Science Communication, Popularisation & its Extension (SCoPE),' said Dr Nakul Parashar, Director, Vigyan Prasar.

Nimish Kapoor, Coordinator, ISFFI-2022, said, "Film entries were invited in four categories related to science, technology, and research & development. Out of 437 entries received, 61 Indian and 33 foreign films have been nominated for the festival. Special screening of award winning science films from India, Switzerland, Germany, Russia, Canada, Israel, Philippines, USA, Australia and other countries will be done at the film festival. There is no participation fee for the film festival. People of all age groups including children and students can come and watch the science films during 21 to 23 January 2023."

A film - 'Return of Cheetah' was screened during the inaugural session of the film festival. This 2.27 minute film has been produced by Creative Channel and Ministry of Forest and Climate Change. The short film beautifully depicts how the return of cheetahs to India is a step towards correcting the man-made ecological fault. Introduction to Namibian Cheetahs Coming to India is a historical event in the world because never a large carnivorous animal migrated from one continent to another. (India Science Wire).



भोपाल। भोपाल में स्कूली छात्रों ने रचा इतिहास, एग्रीबॉट बनाकर तोड़ा वश्व रिकॉर्ड।

News जनवरी 24, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

भोपाल। (इंडिया साइंस वायर): भोपाल के मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में चल रहे भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ)-2022 के तीसरे दिन स्कूली छात्रों ने गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। मध्यप्रदेश सहित देश के अन्य राज्यों के 1600 स्कूली वद्यार्थियों ने रोबोटिक तकनीक पर काम करते हुए कृषि कार्यों के लिए एक साथ और एक ही स्थान पर 1484 रोबोट बनाकर नया वश्व रिकॉर्ड कायम किया है। इस रोबोट को एग्रीबॉट नाम दिया गया है। उभरते वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लायी और कार्यक्रम में उपस्थित गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के प्रतिनिधि ऋषनाथ ने वश्व कीर्तिमान की घोषणा की।

गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड लंदन के प्रतिनिधि ऋषनाथ ने कहा कि आज का इवेंट एक बेंचमार्क है। इससे पहले 11 अगस्त 2019 को हांगकांग के रोबोट इंस्टीट्यूट के बच्चों ने एक साथ रोबोट वॉक कराया था। इस रिकॉर्ड को भोपाल में तोड़कर एक नया रिकॉर्ड भारत के खाते में आया है। इस गतिवध में 1484 स्कूली बच्चों ने एक साथ एग्रीबॉट तैयार करके गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है।

मध्यप्रदेश के वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने इस उपलब्धि पर बच्चों की मेहनत को खूब सराहा है। युवा वैज्ञानिकों के एग्रीबॉट देखकर उन्होंने कहा कि आज भोपाल की धरती पर एक वश्व कीर्तिमान बना है। मुझे बेहद खुशी है कि हमने आज चीन और हांगकांग को पीछे छोड़ दिया है। आप लोग ऐसे ही मेहनत करते रहिए आने वाले 4 साल में आप चीन के सभी रिकॉर्ड तोड़ देंगे।

मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने कहा कि “हम ऐसे खलौनों का निर्माण करें, जो बच्चों के लिए हानिकारक न हों। बाजार में मलने वाले ज्यादातर खलौने चाइनीज हैं, जिनमें खतरनाक



के मकल और डाई का इस्तेमाल होता है। कई बार हमारे बच्चे खेल-खेल में इन्हें अपने मुँह में रख लेते हैं, जिससे स्वास्थ्य के लिए कई प्रकार के खतरे पैदा हो जाते हैं।” उन्होंने कहा क एग्रीबॉट जैसे कार्डबोर्ड से और भी ऐसे खलौने बनाये जाने चाहिए, जिनसे हमारे बच्चे खेल-खेल में कुछ सार्थक चीजें सीखते जाएं।

इस वर्ल्ड रिकॉर्ड की खास बात यह है क इस एग्रीबॉट के निर्माण में जो भी चीजें लगी हैं, वो सभी ‘मेड इन इंडिया’ हैं। एग्रीबॉट के निर्माण में कोई भी पार्ट चीन या दूसरे देशों का नहीं है। इस गति व ध में शामिल स्कूली बच्चों को एक कट प्रदान की गई। इस कट में दो व्हील, एक मोटर, एक बैटरी, तीन सीड बॉक्स, वॉटर टैंक, कार्ड बोर्ड शामिल थे। एग्रीबॉट को असेंबल करने के लिए प्रतिभागियों को एक घंटे का समय दिया गया। इससे पहले एग्रीबॉट से संबंधित सात मिनट का वीडियो बच्चों को दिखाया गया था। इस एग्रीबॉट से खेती के काम जैसे- बुआई, संचाई, कटाई और बखरनी की जा सकती है।

वर्ल्ड रिकॉर्ड गति व ध की सह-समन्वयक डॉ मयूरी दत्त ने कहा क “में पाँच साल से वज्ञान आधारित परियोजनाओं को गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराने के लिए कार्यक्रम कर रही हूँ। लेकिन, वज्ञान महोत्सव में बना एग्रीबॉट तैयार करने का यह कीर्तिमान अपने आप में बेहद खास है। इस इवेंट में 1600 प्रतिभागी शामिल हुए। इनमें भोपाल और मध्य प्रदेश के कई स्कूलों के वद्यार्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया था। लगभग 250 प्रतिभागी ऐसे भी हैं, जो अन्य राज्यों से स्वप्रेरणा से यहाँ पहुँचे थे।”

(इंडिया साइंस वायर)





भोपाल में स्कूली छात्रों ने रचा इतिहास, एग्रीबॉट बनाकर तोड़ा विश्व रिकॉर्ड



[हितेश कुशवाहा | इं डया साइंस वायर](#) | Jan 27, 2023 6:32PM

गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड लंदन के प्रतिनिध ऋषनाथ ने कहा क इवेंट एक बेंचमार्क है। इससे पहले 11 अगस्त 2019 को हांगकांग के रोबोट इंस्टीट्यूट के बच्चों ने एक साथ रोबोट वॉक कराया था। इस रिकॉर्ड को भोपाल में तोड़कर एक नया रिकॉर्ड भारत के खाते में आया है।

भोपाल के मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में चल रहे भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ)-2022 के तीसरे दिन स्कूली छात्रों ने गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। मध्यप्रदेश सहित देश के अन्य राज्यों के 1600 स्कूली विद्यार्थियों ने रोबोटिक तकनीक पर काम करते हुए कृषि कार्यों के लिए एक साथ और एक ही स्थान पर 1484 रोबोट बनाकर नया



वश्व रिकॉर्ड कायम किया है। इस रोबोट को एग्रीबॉट नाम दिया गया है। उभरते वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लायी और कार्यक्रम में उपस्थित गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के प्रतिनिध ऋषनाथ ने वश्व कीर्तिमान की घोषणा की।

गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड लंदन के प्रतिनिध ऋषनाथ ने कहा कि इवेंट एक बेंचमार्क है। इससे पहले 11 अगस्त 2019 को हांगकांग के रोबोट इंस्टीट्यूट के बच्चों ने एक साथ रोबोट वॉक कराया था। इस रिकॉर्ड को भोपाल में तोड़कर एक नया रिकॉर्ड भारत के खाते में आया है। इस गतिवध में 1484 स्कूली बच्चों ने एक साथ एग्रीबॉट तैयार करके गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है।

मध्यप्रदेश के वज्ञान एवं प्रोद्योगकी मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने इस उपलब्धि पर बच्चों की मेहनत को खूब सराहा है। युवा वैज्ञानिकों के एग्रीबॉट देखकर उन्होंने कहा कि आज भोपाल की धरती पर एक वश्व कीर्तिमान बना है। मुझे बेहद खुशी है कि हमने आज चीन और हांगकांग को पीछे छोड़ दिया है। आप लोग ऐसे ही मेहनत करते रहिए आने वाले 4 साल में आप चीन के सभी रिकॉर्ड तोड़ देंगे।

मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने कहा कि “हम ऐसे खलौनों का निर्माण करें, जो बच्चों के लए हानिकारक न हों। बाजार में मलने वाले ज्यादातर खलौने चाइनीज हैं, जिनमें खतरनाक केमिकल और डाई का इस्तेमाल होता है। कई बार हमारे बच्चे खेल-खेल में इन्हें अपने मुँह में रख लेते हैं, जिससे स्वास्थ्य के लए कई प्रकार के खतरे पैदा हो जाते हैं।” उन्होंने कहा कि एग्रीबॉट जैसे कार्डबोर्ड से और भी ऐसे खलौने बनाये जाने चाहिए, जिनसे हमारे बच्चे खेल-खेल में कुछ सार्थक चीजें सीखते जाएं।

इस वर्ल्ड रिकॉर्ड की खास बात यह है कि इस एग्रीबॉट के निर्माण में जो भी चीजें लगी हैं, वो सभी ‘मेड इन इंडिया’ हैं। एग्रीबॉट के निर्माण में कोई भी पार्ट चीन या दूसरे देशों का नहीं है। इस गतिवध में शामिल स्कूली बच्चों को एक कट प्रदान की गई। इस कट में दो व्हील, एक मोटर, एक बैटरी, तीन सीड बॉक्स, वॉटर टैंक, कार्ड बोर्ड शामिल थे। एग्रीबॉट को असेंबल करने के लए प्रतिभाग्यों को एक घंटे का समय दिया गया। इससे पहले एग्रीबॉट से संबंधित सात मिनट का वीडियो बच्चों को दिखाया गया था। इस एग्रीबॉट से खेती के काम जैसे- बुआई, संचाई, कटाई और बखरनी की जा सकती है।

वर्ल्ड रिकॉर्ड गतिवध की सह-समन्वयक डॉ मयूरी दत्त ने कहा कि “में पाँच साल से वज्ञान आधारित परियोजनाओं को गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराने के लए कार्यक्रम कर



रही हूँ। ले कन, वज्ञान महोत्सव में बना एग्रीबॉट तैयार करने का यह कीर्तिमान अपने आप में बेहद खास है। इस इवेंट में 1600 प्रतिभागी शा मल हुए। इनमें भोपाल और मध्य प्रदेश के कई स्कूलों के वद्यार्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया था। लगभग 250 प्रतिभागी ऐसे भी हैं, जो अन्य राज्यों से स्वप्रेरणा से यहाँ पहुँचे थे।”

(इं डया साइंस वायर)



भोपाल में स्कूली छात्रों ने रचा इतिहास, एग्रीबॉट बनाकर तोड़ा विश्व रिकॉर्ड

25/01/2023 V3news India



हितेश

कुशवाहा

भोपाल, 23 जनवरी (इंडिया साइंस वायर): भोपाल के मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में चल रहे भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ)-2022 के तीसरे दिन स्कूली छात्रों ने गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। मध्यप्रदेश सहित देश के अन्य राज्यों के 1600 स्कूली विद्यार्थियों ने रोबोटिक तकनीक पर काम करते हुए कृषि कार्यों के लिए एक साथ और एक ही स्थान पर 1484 रोबोट बनाकर नया विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। इस रोबोट को एग्रीबॉट नाम दिया गया है।



उभरते वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लायी और कार्यक्रम में उपस्थित गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के प्रतिनिध ऋषनाथ ने वश्व कीर्तिमान की घोषणा की। गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड लंदन के प्रतिनिध ऋषनाथ ने कहा क आज का इवेंट एक बेंचमार्क है। इससे पहले 11 अगस्त 2019 को हांगकांग के रोबोट इंस्टीट्यूट के बच्चों ने एक साथ रोबोट वॉक कराया था। इस रिकॉर्ड को भोपाल में तोड़कर एक नया रिकॉर्ड भारत के खाते में आया है। इस गति व ध में 1484 स्कूली बच्चों ने एक साथ एग्रीबॉट तैयार करके गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है।

मध्यप्रदेश के वज्ञान एवं प्रोद्यौगकी मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने इस उपलब्धि पर बच्चों की मेहनत को खूब सराहा है। युवा वैज्ञानिकों के एग्रीबॉट देखकर उन्होंने कहा क आज भोपाल की धरती पर एक वश्व कीर्तिमान बना है। मुझे बेहद खुशी है क हमने आज चीन और हांगकांग को पीछे छोड़ दिया है। आप लोग ऐसे ही मेहनत करते रहिए आने वाले 4 साल में आप चीन के सभी रिकॉर्ड तोड़ देंगे। मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने कहा क “हम ऐसे खलौनों का निर्माण करें, जो बच्चों के लए हानिकारक न हों।

बाजार में मलने वाले ज्यादातर खलौने चाइनीज हैं, जिनमें खतरनाक के मकल और डाई का इस्तेमाल होता है। कई बार हमारे बच्चे खेल-खेल में इन्हें अपने मुँह में रख लेते हैं, जिससे स्वास्थ्य के लए कई प्रकार के खतरे पैदा हो जाते हैं।” उन्होंने कहा क एग्रीबॉट जैसे कार्डबोर्ड से और भी ऐसे खलौने बनाये जाने चाहिए, जिनसे हमारे बच्चे खेल- खेल में कुछ सार्थक चीजें सीखते जाएं। इस वर्ल्ड रिकॉर्ड की खास बात यह है क इस एग्रीबॉट के निर्माण में जो भी चीजें लगी हैं, वो सभी ‘मेड इन इंडिया’ हैं। एग्रीबॉट के निर्माण में कोई भी पार्ट चीन या दूसरे देशों का नहीं है।

इस गति व ध में शा मल स्कूली बच्चों को एक कट प्रदान की गई। इस कट में दो व्हील, एक मोटर, एक बैटरी, तीन सीड बॉक्स, वॉटर टैंक, कार्ड बोर्ड शा मल थे। एग्रीबॉट को असेंबल करने के लए प्रतिभाग्यों को एक घंटे का समय दिया गया। इससे पहले एग्रीबॉट से संबंधत सात मनट का वीडियो बच्चों को दिखाया गया था। इस एग्रीबॉट से खेती के काम जैसे- बुआई, संचाई, कटाई और बखरनी की जा सकती है। वर्ल्ड रिकॉर्ड गति व ध की सह-समन्वयक डॉ मयूरी दत्त ने कहा क “में पाँच साल से वज्ञान आधारित परियोजनाओं को गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराने के लए कार्यक्रम कर रही हूँ।



लेकन, वज्ञान महोत्सव में बना एग्रीबॉट तैयार करने का यह कीर्तिमान अपने आप में बेहद खास है। इस इवेंट में 1600 प्रतिभागी शामिल हुए। इनमें भोपाल और मध्य प्रदेश के कई स्कूलों के वद्यार्थियों ने रजिस्ट्रेशन कराया था। लगभग 250 प्रतिभागी ऐसे भी हैं, जो अन्य राज्यों से स्वप्रेरणा से यहाँ पहुँचे थे।”



भोपाल में 1600 स्कूली छात्रों ने वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया, एग्रीबॉट गनीज बुक में दर्ज - Robot world record Agribot

Bhopal Samachar January 24, 2023

हितेश कुशवाहा, भोपाल। मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में चल रहे भारत अंतरराष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (IISF)-2022 के तीसरे दिन स्कूली छात्रों ने गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। मध्यप्रदेश सहित देश के अन्य राज्यों के 1600 स्कूली विद्यार्थियों ने रोबोटिक तकनीक पर काम करते हुए कृषि कार्यों के लिए एक साथ और एक ही स्थान पर 1484 रोबोट बनाकर नया विश्व रिकॉर्ड कायम किया है। इस रोबोट को एग्रीबॉट नाम दिया गया है। उभरते वैज्ञानिकों की मेहनत रंग लायी और कार्यक्रम में उपस्थित गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के प्रतिनिधि ऋषनाथ ने विश्व कीर्तिमान की घोषणा की।

हांगकांग के रोबोट इंस्टीट्यूट का रिकॉर्ड भोपाल में टूटा

गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड लंदन के प्रतिनिधि ऋषनाथ ने कहा कि आज का इवेंट एक बेंचमार्क है। इससे पहले 11 अगस्त 2019 को हांगकांग के रोबोट इंस्टीट्यूट के बच्चों ने एक साथ रोबोट वॉक कराया था। इस रिकॉर्ड को भोपाल में तोड़कर एक नया रिकॉर्ड भारत के खाते में आया है। इस गतिविधि में 1484 स्कूली बच्चों ने एक साथ एग्रीबॉट तैयार करके गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अपना नाम दर्ज कराया है।

रोबोट के मामले में भारत ने चीन को पीछे छोड़ा

मध्यप्रदेश के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने इस उपलब्धि पर बच्चों की मेहनत को खूब सराहा है। युवा वैज्ञानिकों के एग्रीबॉट देखकर उन्होंने कहा कि आज भोपाल की धरती पर एक विश्व कीर्तिमान बना है। मुझे बेहद खुशी है कि हमने आज चीन और हांगकांग को पीछे छोड़ दिया है। आप लोग ऐसे ही मेहनत करते रहिए आने वाले 4 साल में आप चीन के सभी रिकॉर्ड तोड़ देंगे।

चाइनीस खलौनों का बाजार तोड़ने की अपील

मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा ने कहा क “हम ऐसे खलौनों का निर्माण करें, जो बच्चों के लए हानिकारक न हों। बाजार में मलने वाले ज्यादातर खलौने चाइनीज हैं, जिनमें खतरनाक के मकल और डाई का इस्तेमाल होता है। कई बार हमारे बच्चे खेल-खेल में इन्हें अपने मुँह में रख लेते हैं, जिससे स्वास्थ्य के लए कई प्रकार के खतरे पैदा हो जाते हैं।” उन्होंने कहा क एग्रीबॉट जैसे कार्डबोर्ड से और भी ऐसे खलौने बनाये जाने चाहिए, जिनसे हमारे बच्चे खेल-खेल में कुछ सार्थक चीजें सीखते जाएं।

वर्ल्ड रिकॉर्ड एग्रीबॉट **100%** मेड इन इंडिया

इस वर्ल्ड रिकॉर्ड की खास बात यह है क इस एग्रीबॉट के निर्माण में जो भी चीजें लगी हैं, वो सभी ‘मेड इन इंडिया’ हैं। एग्रीबॉट के निर्माण में कोई भी पार्ट चीन या दूसरे देशों का नहीं है। इस गति व ध में शा मल स्कूली बच्चों को एक कट प्रदान की गई। इस कट में दो व्हील, एक मोटर, एक बैटरी, तीन सीड बॉक्स, वॉटर टैंक, कार्ड बोर्ड शा मल थे। एग्रीबॉट को असेंबल करने के लए प्रतिभा ग्यों को एक घंटे का समय दिया गया। इससे पहले एग्रीबॉट से संबंधत सात मनट का वीडयो बच्चों को दिखाया गया था। इस एग्रीबॉट से खेती के काम जैसे- बुआई, संचाई, कटाई और बखरनी की जा सकती है।

मध्य प्रदेश के **1600** बच्चों ने वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया

वर्ल्ड रिकॉर्ड गति व ध की सह-समन्वयक डॉ मयूरी दत्त ने कहा क “में पाँच साल से वज्ञान आधारित परियोजनाओं को गनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज कराने के लए कार्यक्रम कर रही हूँ। ले कन, वज्ञान महोत्सव में बना एग्रीबॉट तैयार करने का यह कीर्तिमान अपने आप में बेहद खास है। इस इवेंट में 1600 प्रतिभागी शा मल हुए। इनमें भोपाल और मध्य प्रदेश के कई स्कूलों के वद्यार्थ्यों ने रजिस्ट्रेशन कराया था। लगभग 250 प्रतिभागी ऐसे भी हैं, जो अन्य राज्यों से स्वप्रेरणा से यहाँ पहुँचे थे।” (इंडिया साइंस वायर)

भोपाल। भारत के आठवें अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म पुरस्कार घोषित ।

News जनवरी 24, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

भोपाल। (इंडिया साइंस वायर): इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (आईएसएफएफआई)-2022 में देश एवं दुनिया की कुल 13 फिल्मों को पुरस्कार मिला है। भोपाल में चल रहे चार दिवसीय इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ) के आठवें संस्करण के एक प्रमुख घटक के रूप में आईएसएफएफआई-2022 का आयोजन 21-23 जनवरी तक किया गया। इस साइंस फिल्म फेस्टिवल में चार वदेशी और नौ भारतीय फिल्मों को पुरस्कृत किया गया है।

मध्य प्रदेश के वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ओमप्रकाश सखलेचा, पटना विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति एवं इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय (इग्नू) के स्कूल ऑफ जर्नलज्म एवं न्यू मीडिया स्टडीज के संस्थापक निदेशक तथा आईएसएफएफआई-2022 के जूरी सदस्य शंभुनाथ सिंह, दक्षिण भारत में आरएसएस के संपर्क प्रमुख ए. जयकुमार, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्व विद्यालय, भोपाल के कुलपति के.जी. सुरेश, सत्यजीत रे फिल्म एवं टेली वजन संस्थान, कोलकाता की पूर्व निदेशक एवं वज्ञान फिल्म फेस्टिवल की जूरी सदस्य डॉ देब मत्रा मत्रा, जाने-माने फिल्मकार एवं वज्ञान फिल्म फेस्टिवल के जूरी अध्यक्ष अरुण चड्ढा, AISECT विश्व विद्यालय, भोपाल के चांसलर संतोष चौबे, मशहूर फिल्म अभिनेता एवं जूरी सदस्य राजीव वर्मा, फिल्म महोत्सव के समन्वयक निमेष कपूर एवं वज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक टी.वी. वेंकटेश्वरन की उपस्थिति में आठवें अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म पुरस्कारों की घोषणा की गई है।





अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म पुरस्कारों की 'सतत् विकास के लिए वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार' श्रेणी के अंतर्गत पहला पुरस्कार इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रो फिजिक्स द्वारा निर्मित अंग्रेजी फिल्म 'हानले: इंडियाज फर्स्ट डार्क स्काई रिजर्व' को प्रदान किया गया है। यह फिल्म लद्दाख के हानले में हाल ही में अधसूचित भारत के पहले डार्क स्काई रिजर्व के पीछे के वचार को प्रस्तुत करती है। प्रकाश प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक मुद्दा है। यह फिल्म दिखाती है कि कैसे वैज्ञानिक अनुसंधान, खगोल वदों, प्रशासन और स्थानीय समुदायों के सहयोग से अंधेरे आसमान को संरक्षित करने में प्रभावी हो सकता है। इस श्रेणी में दूसरा पुरस्कार सत्यजित रे फिल्म 'एंड टेली वजन इंस्टीट्यूट, कोलकाता द्वारा बांग्ला एवं अंग्रेजी भाषा में निर्मित 'बोर्शी - द फश' को मिला है। यह फिल्म आधुनिक कोलकाता में वेटलैंड मत्स्यपालन की संभावनाओं तथा अपशष्ट जल प्रबंधन, कैप्टिव मछली उत्पादन, और मछुआरों की स्थिति को रेखांकित करती है। इसी श्रेणी में तीसरा पुरस्कार अर्जुन राय, हर्षवर्धन ओझा एवं अनिमेष पांडेय द्वारा निर्देशित एवं अपरेश मश्रा द्वारा निर्मित 'मलबा-मलबा' फिल्म को मिला है। यह फिल्म मलबे के ढेर से पैदा होने वाले आसन्न खतरों को उजागर करती है।

'जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार' नामक दूसरी श्रेणी के अंतर्गत पहला पुरस्कार वपुल कीर्ति शर्मा द्वारा निर्देशित एवं अशोक शर्मा द्वारा निर्मित फिल्म 'स्ट्रगल फॉर सर्वाइवल' को मिला है। यह फिल्म जमीन पर घोंसला बनाने वाली गौरैया के

आकार की बगेरी (Ashy-crowned sparrow-lark) नामक चड़या और टिटहरी (Lapwing) जैसे पक्षियों पर केंद्रित है। इस श्रेणी में दूसरा पुरस्कार यूके के निर्देशक लओन मशेल एवं निर्माता सनालाइट की फिल्म 'सीक्रेट्स ऑफ द फॉरेस्ट' को मला है। जब क, इस श्रेणी में तीसरा पुरस्कार फलीपीन्स की फिल्म 'आई वाज जस्ट ए चाइल्ड' को प्रदान किया गया है। इस फिल्म के निर्माता एवं निर्देशक ब्रीच एशेर म फेल हारानी हैं। छाया कठपुतली का उपयोग करते हुए यह फिल्म फलीपींस में आए घातक सुपर टाइफून के कारण मान सक और शारीरिक पीड़ा के अनुभव को बताती है।

'बेहतर जीवन के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार' नामक तीसरी श्रेणी के अंतर्गत पहला पुरस्कार अमेरिकी फिल्मकार टिफेनी डीटर की फिल्म 'बायो फजिकल फील्ड मेथड्स: गोबाबेब' को प्रदान किया गया है। इस श्रेणी में दूसरा पुरस्कार भारत के फिल्मकार दीपक कुमार की फिल्म 'एक्स्प्लोरिंग द ग्रेट इंडियन लगेसीस' और तीसरा पुरस्कार वज्ञान प्रसार (वज्ञान एवं प्रौद्योगिकी वभाग) द्वारा निर्मित एवं राकेश अंदानिया द्वारा निर्देशित फिल्म 'से वंग द हिमालयन याक' को मला है।

बीजू पंकज द्वारा निर्देशित एवं मातृभूम टेली वजन द्वारा निर्मित 'वंडर्स ऑफ हेमलकासा' फिल्म के लए एक स्पेशल जूरी पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके अलावा, तीन स्पेशल जूरी मेंशन पुरस्कार 'रिक्ले मंग वेस्टलैंड इन भोपाल', 'क्राइसिस' और 'आचार्य पीसी रे: द नेशन लस्ट साइंटिस्ट' को प्रदान किया गया है। 'आचार्य पीसी रे: द नेशन लस्ट साइंटिस्ट' के निर्देशक नंदन कुधयादि और निर्माता वज्ञान भारती है। इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान की फिल्म 'क्राइसिस' के निर्माता शवा मोमताहन और निर्माता सीमा मोमताहन हैं। जब क, 'रिक्ले मंग वेस्टलैंड इन भोपाल' फिल्म के निर्देशक मधुन वजयन और निर्माता जोएल मशेल हैं।

आईएसएफएफआई के समन्वयक और वज्ञान प्रसार के वरिष्ठ वैज्ञानिक निमेष कपूर ने बताया है क "वज्ञान फिल्मोत्सव के अंतर्गत वज्ञान, प्रौद्योगिकी और शोध तथा वकास से जुड़े व वध वषणों पर चार श्रेणियों में फिल्म प्रवष्टियां आमंत्रित की गई थीं। फिल्म महोत्सव में प्राप्त कुल 437 प्रवष्टियों में से 61 भारतीय और 33 वदेशी फिल्मों को समारोह के लए नामांकित किया गया। 21 से 23 जनवरी तक चले तीन दिवसीय फिल्म फेस्टिवल के दौरान भोपाल के पंडित खुशीलाल शर्मा आयुर्वेद संस्थान के रजत जयंती सभागार में भारत, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, रूस, कनाडा, इजराइल, फलीपींस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया सहित अन्य देशों की 90 से अधिक वज्ञान फिल्मों की स्क्रीनिंग की गई है।"



वज्ञान फल्ड डहोत्सव के दौरान 'जी20 के संदरुड डें डारत की ड्राथ डकता एवं वज्ञान फल्डों की डू डका' और 'सतत् वकास लकुडों को ड्राप्त करने डें वज्ञान फल्डों की डू डका' जैसे वषडों डर केंद्रित वशेषज्ञ चरुाएं डी आयोजित की गई।

(इं डया साइंस वायर)



स्वस्थ भारत

स्वास्थ्य समाचार एवं विचार का राष्ट्रीय माध्यम

भारत के आठवें अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म पुरस्कार घोषित

by [admin](#) January 24, 20230



भोपाल। इंटरनेशनल साइंस फिल्म फेस्टिवल ऑफ इंडिया (ISFFI)-2022में देश एवं दुनिया की कुल 13 फिल्मों को पुरस्कार मला है। इसमें चार वदेशी और नौ भारतीय फिल्में हैं। अंतरराष्ट्रीय वज्ञान फिल्म पुरस्कारों की 'सतत् वकास के लए वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार' श्रेणी के अंतर्गत पहला पुरस्कार इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रो फजिक्स द्वारा निर्मित अंग्रेजी फिल्म 'हानले: इंडियाज फस्ट डार्क स्काई रिजर्व' को दिया गया है। यह फिल्म लद्दाख के हानले में भारत के पहले डार्क स्काई रिजर्व के पीछे के वचार को प्रस्तुत करती है। प्रकाश प्रदूषण पर इसका फोकस है।

मलबे के खतरे पर भी फिल्म पुरस्कृत

इस श्रेणी में दूसरा पुरस्कार सत्यजित रे फिल्म एंड टेली वजन इंस्टीट्यूट, कोलकाता द्वारा बांग्ला एवं अंग्रेजी में निर्मित 'बोर्शी-द फश' को मला है। यह फिल्म आधुनिक कोलकाता में वेटलैंड मत्स्यपालन की संभावनाओं तथा अपशष्ट जल प्रबंधन, कैप्टिव मछली उत्पादन और मछुआरों की स्थिति को रेखांकित करती है। इसी श्रेणी में तीसरा पुरस्कार अर्जुन राँय, हर्षवर्धन ओझा एवं अनिमेष पांडेय द्वारा निर्देशित एवं अपरेश मश्रा द्वारा निर्मित 'मलबा-मलबा' फिल्म को मला है। यह फिल्म मलबे के ढेर से पैदा होने वाले आसन्न खतरों को उजागर करती है। 'जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार' नामक दूसरी श्रेणी के अंतर्गत पहला पुरस्कार वपुल कीर्ति शर्मा द्वारा निर्देशित एवं अशोक शर्मा द्वारा निर्मित फिल्म 'स्ट्रगल फॉर सर्वाइवल' को मला है। यह फिल्म जमीन पर घोंसला बनाने वाली गौरैया के आकार की बगेरी (Ashy-crowned sparrow-lark) नामक चड़या और टिटहरी (Lapwing) जैसे पक्षियों पर केंद्रित है। इस श्रेणी में दूसरा पुरस्कार यूके के निर्देशक लओन मशेल एवं निर्माता सनालाइट की फिल्म 'सीक्रेट्स ऑफ द फॉरेस्ट' को मला है। तीसरा पुरस्कार फलीपीन्स की फिल्म 'आई वाज जस्ट ए चाइल्ड' को मला है। इस फिल्म के निर्माता एवं निर्देशक ब्रीच एशेर मर्फल हारानी हैं।

स्पेशल जूरी पुरस्कार बीजू पंकज की फिल्म को

'बेहतर जीवन के लिए वज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार' नामक तीसरी श्रेणी के अंतर्गत पहला पुरस्कार अमेरिकी फिल्मकार टिफेनी डीटर की फिल्म 'बायो फजिकल फील्ड मेथड्स: गोबाबेब' को दिया गया है। इस श्रेणी में दूसरा पुरस्कार भारत के फिल्मकार दीपक कुमार की फिल्म 'एक्स्प्लोरिंग द ग्रेट इंडियन लगेसीस' और तीसरा पुरस्कार वज्ञान प्रसार द्वारा निर्मित एवं राकेश अंदानिया द्वारा निर्देशित फिल्म 'से वंग द हिमालयन याक' को मला है। बीजू पंकज द्वारा निर्देशित एवं मातृभूमि टेली वजन द्वारा निर्मित 'वंडर्स ऑफ हेमलकासा' फिल्म के लिए एक स्पेशल जूरी पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके अलावा, तीन स्पेशल जूरी मेंशन पुरस्कार 'रिक्ले मंग वेस्टलैंड इन भोपाल', 'क्राइसिस' और 'आचार्य पीसी रे: द नेशनलस्ट साइंटिस्ट' को दिया गया है। 'आचार्य पीसी रे: द नेशनलस्ट साइंटिस्ट' के निर्देशक नंदन कुधयादि और निर्माता वज्ञान भारती है। इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान की फिल्म 'क्राइसिस' के निर्माता शवा मोमताहन और निर्माता सीमा मोमताहन हैं। जबकि, 'रिक्ले मंग वेस्टलैंड इन भोपाल' फिल्म के निर्देशक मधुन वजयन और निर्माता जोएल मशेल हैं।

इंडिया साइंस वायर से साभार



“वर्ष 2025 तक 150 बिलियन डॉलर तक पहुँच सकती है भारत की बायोइकनॉमी” - सुधांशु व्रती

Admin Posted on: 2023-01-28 12:57:00 Viewer: 66 Comments: 0 Country: India City: Singrauli



प्रोफेसर सुधांशु व्रती, कार्यकारी निदेशक, क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी), फरीदाबाद (हरियाणा)

Singrauli Mirror News: भारत के हृदय प्रदेश मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 काफी लोकप्रिय हो रहा है। इसके सफल आयोजन के पीछे भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के फरीदाबाद (हरियाणा) में स्थित क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी) की महत्वपूर्ण भूमिका है। देश के प्रख्यात इम्यूनोलॉजिस्ट एवं माइक्रोबायोलॉजिस्ट प्रोफेसर सुधांशु व्रती आरसीबी के कार्यकारी निदेशक हैं। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी के पूर्व वैज्ञानिक सुधांशु व्रती ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस एंड



टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट के पूर्व डीन भी रहे हैं। जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा आपको वर्ष 2003 में सर्वोच्च भारतीय विज्ञान पुरस्कार 'नेशनल बायोसाइंस अवार्ड फॉर करियर डेवलपमेंट' से सम्मानित किया गया। आईआईएसएफ-2022 के दौरान प्रोफेसर सुधांशु व्रती के साथ सुप्रिया पांडेय की बातचीत के प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं।

प्रश्न: देश में साइंस फेस्टिवल जैसे कार्यक्रमों की जरूरत क्यों हैं? इसकी मूल अवधारणा क्या है?

उत्तर: वगत दो दिन से यहाँ के माहौल में साफ देखा जा सकता है क वद्यार्थियों और नौजवानों में साइंस फेस्टिवल को लेकर कतना उत्साह है। कतनी बड़ी संख्या में लोग महोत्सव में शामिल हो रहे हैं। अथवा विज्ञान से जुड़ रहे हैं। विज्ञान को घर घर तक पहुंचाना, विज्ञान को आम जनता से रूबरू कराना ही इसकी मूल अवधारणा है, जिससे क विशेषकर वद्यार्थियों और नौजवानों को रुच इस क्षेत्र में जागे।

प्रश्न: आईआईएसएफ जैसे बड़े अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करते वक़्त आपको कन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? और आप उनका समाधान कैसे करते हैं?

उत्तर: ये बहुत बड़ा फेस्टिवल है, यहां 15 कार्यक्रम समानांतर रूप से चल रहे हैं। इतने बड़े कार्यक्रम को आयोजित करने के लए बहुत बड़ी टीम की जरूरत होती है। अच्छी बात ये है क विज्ञान प्रसार और विभा इस कार्यक्रम को आयोजित करने, रूपरेखा बनाने और इसका प्रचार-प्रसार करने में हमारी मदद कर रहे हैं। सबसे बड़ा चैलेंज, जो हमारे साथ था, वह था समय की कमी। हमें इसका प्रस्ताव नवंबर, 2022 में मला। अगर ज्यादा समय मला होता तो हम कार्यक्रमों को और बेहतर तरीके से आयोजित कर पाते। लेकिन, अभी भी सभी कार्यक्रम बहुत अच्छे तरीके से हो रहे हैं। वद्यार्थी और युवा इसमें बढ-चढकर हिस्सा ले रहे हैं।

प्रश्न: ऐसे भव्य आयोजनों का क्या परिणाम निकल कर आता है? क्या ये अपने निर्धारित लक्ष्य को पूरा कर पाते हैं?

उत्तर: मुझे लगता है क हम अपने लक्ष्य की ओर बढ रहे हैं। जब मैं मुख्य हॉल से होते हुए आ रहा था, तो मुझे करीब-करीब एक हजार बच्चों की लंबी कतार नजर आई और जब मैं अंदर आया तो वहाँ करीब एक हजार बच्चे बैठे हुए थे। प्रतिदिन फेस-टू-फेस कार्यक्रमों में स्कूली बच्चों की ही संख्या तीन हजार तक देखने को मलती है, जिससे साफ जाहिर होता है क उनमें विज्ञान के प्रति रुच है। हम उस रुच को और जागृत करने में सफल हो रहे हैं।

प्रश्न: आपने अपनी पीएचडी 'ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी' से पूरी की है, ऐसे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों एवं तकनीक में भारत की तुलना में आप क्या अन्तर पाते हैं?

उत्तर: मैंने 1981 में पीएचडी की, और मुझे याद है क उस समय हमारे देश में जिस क्षेत्र में मैं पीएचडी करना चाहता था, अर्थात वायरोलॉजी के क्षेत्र में, उसमें न के बराबर काम हुआ था। ले कन, मैं मॉलीक्यूलर लेवल पर वायरोलॉजी के बारे में जानना चाहता था। इस लए, मैंने ऑस्ट्रे लया की एक बड़ी यूनिवर्सिटी को चुना। ले कन, मैं कहना चाहूँगा क पछले करीब 25-30 वर्षों में हमारे देश में बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च के संसाधनों में अभूतपूर्व वृद्ध हुई है।

प्रश्न: भारत 2047 में आजादी के 100 वर्ष पूरे कर रहा है, प्रधानमंत्री जी के लक्ष्य 2047 को पूरा करने के लए बायोटेक्नोलॉजी सेक्टर क्या योगदान दे रहा है?

उत्तर: देश के वकास के लए इकनॉमी को आगे बढ़ाना बहुत जरूरी है। बायोटेक्नोलॉजी सेक्टर, जिसको अब हम बायोइकनॉमी के नाम से जानते हैं, वो पछले छह-सात वर्षों से बहुत तेजी के साथ आगे बढ़ा है। हमारी बायोइकनॉमी तकरीबन 80 बिलियन डॉलर की है। वर्ष 2025 तक हम उम्मीद कर रहे हैं क यह बढ़कर 150 बिलियन डॉलर हो जाए और मुझे लगता है क 2047 ये तक आराम से एक हजार बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगी। देखा जाए तो ये बहुत बड़ा आँकड़ा है और अगर हम इसे हासिल कर पाए तो देश की इकनॉमी में हमारा बहुत बड़ा योगदान होगा।

प्रश्न: स्टार्टअप्स आत्मनिर्भर भारत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, तो आपके अनुसार बायोटेक सेक्टर में स्टार्टअप्स की क्या स्थिति है?

उत्तर: हर क्षेत्र में, खासकर बायोटेक सेक्टर में पछले 3-4 वर्ष में स्टार्टअप्स की एक तरह से बाढ़ आयी हुई है। नये स्टार्टअप्स खुल रहे हैं, उनको मौके मिल रहे हैं, अनुकूल परिस्थितियाँ मिल रही हैं और सपोर्ट मिल रहा है। उदाहरण के तौर पर फरीदाबाद में हमने बायो इनक्यूबेटर रीजनल सेंटर बायोटेक्नोलॉजी के साथ खोला हुआ है और आज से करीब तीन-चार वर्ष पूर्व जब हम उसकी शुरुआत कर रहे थे तब मुझे लगा था शायद इतने स्टार्टअप्स फरीदाबाद क्षेत्र में हमें न मिल पाए। ले कन, आज की तारीख में लगभग 100 स्टार्टअप्स को हम लोग सपोर्ट कर पाए हैं। स्टार्टअप्स ने हमारा 99 प्रतिशत स्थान घेरा हुआ है। नए स्टार्टअप्स को संयोजित करने के लए हमारे पास जगह नहीं बची है, जिससे पता चलता है क स्टार्टअप्स के प्रति लोगों का कतना रुझान बढ़ गया है।

प्रश्न: आईआईएसएफ-2022 की थीम को लेकर आपके क्या वचार हैं?

उत्तर: उत्तर: माननीय प्रधानमंत्री ने अगले 25 साल यानी 2047 तक को अमृतकाल घोषित किया है। उनका मानना है क अगले 25 वर्षों में हमारे देश में जो काम होना है वह देश के लए अमृत के समान सद्घ होना चाहिए। जिससे क हम एडवांस इकनॉमी के रूप में जाने जाए।

प्रश्न: देश के वकास में युवाओं की भूमिका को देखते हुए उनके लए कोई संदेश।

उत्तर: वज्ञान एक साधना है। वज्ञान के क्षेत्र में कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। हमें पता है क वज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिए ही इस देश को आगे बढ़ा सकते हैं। ऐसे में हमें अपनी वैज्ञानिक सोच को बढ़ाना है, हमें वज्ञान के प्रति आम जनता में रुचि बढ़ानी है। जब हम ऐसा कर पाने में सफल होंगे तभी हम देश को आगे बढ़ा पाएंगे।



साक्षात्कार “वर्ष 2025 तक 150 बिलियन डॉलर तक पहुँच सकती है भारत की बायोइकनॉमी” – सुधांशु व्रती

25/01/2023 V3news India



भारत के हृदय प्रदेश मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 काफी लोकप्रिय हो रहा है। इसके सफल आयोजन के पीछे भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के फरीदाबाद (हरियाणा) में स्थित क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी) की महत्वपूर्ण भूमिका है। देश के प्रख्यात इम्यूनोलॉजिस्ट एवं माइक्रोबायोलॉजिस्ट प्रोफेसर सुधांशु व्रती आरसीबी के कार्यकारी निदेशक हैं। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी के पूर्व वैज्ञानिक सुधांशु व्रती ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट के पूर्व डीन भी रहे हैं।

जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा आपको वर्ष 2003 में सर्वोच्च भारतीय विज्ञान पुरस्कार नेशनल बायोसाइंस अवार्ड फॉर करियर डेवलपमेंट' से सम्मानित किया गया। आईआईएसएफ-2022 के दौरान प्रोफेसर सुधांशु व्रती के साथ सुप्रिया पांडेय की बातचीत के प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं।

प्रश्न: देश में साइंस फेस्टिवल जैसे कार्यक्रमों की जरूरत क्यों हैं? इसकी मूल अवधारणा क्या है?

उत्तर: वगत दो दिन से यहाँ के माहौल में साफ देखा जा सकता है कि विद्यार्थियों और नौजवानों में साइंस फेस्टिवल को लेकर कतना उत्साह है। कतनी बड़ी संख्या में लोग महोत्सव में शामिल हो रहे हैं। अथवा विज्ञान से जुड़ रहे हैं। विज्ञान को घर घर तक पहुंचाना, विज्ञान को आम जनता से रूबरू कराना ही इसकी मूल अवधारणा है, जिससे कि विशेषकर विद्यार्थियों और नौजवानों को रुचि इस क्षेत्र में जागे।

प्रश्न: आईआईएसएफ जैसे बड़े अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करते वक़्त आपको कन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? और आप उनका समाधान कैसे करते हैं?

उत्तर: ये बहुत बड़ा फेस्टिवल है, यहां 15 कार्यक्रम समानांतर रूप से चल रहे हैं। इतने बड़े कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए बहुत बड़ी टीम की जरूरत होती है। अच्छी बात ये है कि विज्ञान प्रसार और विभा इस कार्यक्रम को आयोजित करने, रूपरेखा बनाने और इसका प्रचार-प्रसार करने में हमारी मदद कर रहे हैं। सबसे बड़ा चैलेंज, जो हमारे साथ था, वह था समय की कमी। हमें इसका प्रस्ताव नवंबर, 2022 में मिला। अगर ज्यादा समय मिला होता तो हम कार्यक्रमों को और बेहतर तरीके से आयोजित कर पाते। लेकिन, अभी भी सभी कार्यक्रम बहुत अच्छे तरीके से हो रहे हैं। विद्यार्थी और युवा इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

प्रश्न: ऐसे भव्य आयोजनों का क्या परिणाम निकल कर आता है? क्या ये अपने निर्धारित लक्ष्य को पूरा कर पाते हैं?

उत्तर: मुझे लगता है कि हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। जब मैं मुख्य हॉल से होते हुए आ रहा था, तो मुझे करीब करीब एक हजार बच्चों की लंबी कतार नजर आई और जब मैं अंदर आया तो वहाँ करीब एक हजार बच्चे बैठे हुए थे। प्रतिदिन फेस-टू-फेस कार्यक्रमों में स्कूली बच्चों



की ही संख्या तीन हजार तक देखने को मलती हैं, जिससे साफ जाहिर होता है क उनमें वज्ञान के प्रति रु च है। हम उस रु च को और जागृत करने में सफल हो रहे हैं।

प्रश्न: आपने अपनी पीएचडी 'ऑस्ट्रे लयन नेशनल यूनिवर्सिटी से पूरी की है, ऐसे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों एवं तकनीक में भारत की तुलना में आप क्या अन्तर पाते हैं?

उत्तर: मैंने 1981 में पीएचडी की, और मुझे याद है क उस समय हमारे देश में जिस क्षेत्र में मैं पीएचडी करना चाहता था, अर्थात वायरोलॉजी के क्षेत्र में, उसमें न के बराबर काम हुआ था। ले कन, मैं मॉलीक्यूलर लेवल पर वायरोलॉजी के बारे में जानना चाहता था। इस लए, मैंने ऑस्ट्रे लया की एक बड़ी यूनिवर्सिटी को चुना। ले कन, मैं कहना चाहूंगा क पछले करीब 25-30 वर्षों में हमारे देश में बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च के संसाधनों में अभूतपूर्व वृद्ध हुई है।

प्रश्न: भारत 2047 में आजादी के 100 वर्ष पूरे कर रहा है, प्रधानमंत्री जी के लक्ष्य 2047 को पूरा करने के लए बायोटेक्नोलॉजी सेक्टर क्या योगदान दे रहा है?

उत्तर: देश के वकास के लए इकनॉमी को आगे बढ़ाना बहुत जरूरी है। बायोटेक्नोलॉजी सेक्टर, जिसको अब हम बायोइकनॉमी के नाम से जानते हैं, वो पछले छह-सात वर्षों से बहुत तेजी के साथ आगे बढ़ा है। हमारी बायोइकनॉमी तकरीबन 80 बि लयन डॉलर की है। वर्ष 2025 तक हम उम्मीद कर रहे हैं क यह बढ़कर 150 बि लयन डॉलर हो जाए और मुझे लगता है क 2047 ये तक आराम से एक हजार बि लयन डॉलर तक पहुँच जाएगी। देखा जाए तो ये बहुत बड़ा आँकड़ा है और अगर हम इसे हासल कर पाए तो देश की इकनॉमी में हमारा बहुत बड़ा योगदान होगा।

प्रश्न: स्टार्टअप्स आत्मनिर्भर भारत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, तो आपके अनुसार बायोटेक सेक्टर में स्टार्टअप्स की क्या स्थिति है?

उत्तर: हर क्षेत्र में, खासकर बायोटेक सेक्टर में पछले 3-4 वर्ष में स्टार्टअप्स की एक तरह से बाढ़ आयी हुई है। नये स्टार्टअप्स खुल रहे हैं, उनको मौके मल रहे हैं, अनुकूल परिस्थितियां मल रहीं हैं और सपोर्ट मल रहा है। उदाहरण के तौर पर फरीदाबाद में हमने बायो इनक्यूबेटर रीजनल सेंटर बायोटेक्नोलॉजी के साथ खोला हुआ है और आज से करीब तीन-चार वर्ष पूर्व जब हम उसकी शुरुआत कर रहे थे तब मुझे लगा था शायद इतने स्टार्टअप्स फरीदाबाद क्षेत्र में हमें न मल पाए। ले कन, आज की तारीख में लगभग 100 स्टार्टअप्स को हम लोग सपोर्ट कर पाए



हैं। स्टार्टअप्स ने हमारा 99 प्रतिशत स्थान घेरा हुआ है। नए स्टार्टअप्स को संयोजित करने के लिए हमारे पास जगह नहीं बची है, जिससे पता चलता है कि स्टार्टअप्स के प्रति लोगों का कतना रुझान बढ़ गया है।

प्रश्न: आईआईएसएफ-2022 की थीम को लेकर आपके क्या विचार हैं?

उत्तर: माननीय प्रधानमंत्री ने अगले 25 साल यानी 2047 तक को अमृतकाल घोषित किया है। उनका मानना है कि अगले 25 वर्षों में हमारे देश में जो काम होना है वह देश के लिए अमृत के समान सद्घ होना चाहिए। जिससे कि हम एडवांस इकनॉमी के रूप में जाने जाए।

प्रश्न: देश के विकास में युवाओं की भूमिका को देखते हुए उनके लिए कोई संदेश।

उत्तर: विज्ञान एक साधना है। विज्ञान के क्षेत्र में कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। हमें पता है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के जरिए ही इस देश को आगे बढ़ा सकते हैं। ऐसे में हमें अपनी वैज्ञानिक सोच को बढ़ाना है, हमें विज्ञान के प्रति आम जनता में रुचि बढ़ानी है। जब हम ऐसा कर पाने में सफल होंगे तभी हम देश को आगे बढ़ा पाएंगे। “आज की तारीख में मैं बता सकता हूँ कि हमारे देश में लगभग दस से पंद्रह प्रयोगशाला ऐसी हैं, जिनमें संसाधन और हमारे वैज्ञानिकों की विशेषज्ञता दुनिया की किसी भी अच्छी लैब के बराबर है। मैं तो यहाँ तक कहना चाहूँगा कि कुछ लैब में हम दुनिया से अग्रणी हैं। अब हमारे देश में वैज्ञानिक शोध के लिए संसाधनों की कोई कमी नहीं है। और हम अच्छे से अच्छा शोध प्रस्तुत करने में समर्थ हैं।”



साक्षात्कार “वर्ष 2025 तक 150 बिलियन डॉलर तक पहुँच सकती है भारत की बायोइकनॉमी” - सुधांशु व्रती

News जनवरी 24, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

वशेष: भारत के हृदय प्रदेश मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 काफी लोकप्रिय हो रहा है। इसके सफल आयोजन के पीछे भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के फरीदाबाद (हरियाणा) में स्थित क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी) की महत्वपूर्ण भूमिका है। देश के प्रख्यात इम्यूनोलॉजिस्ट एवं माइक्रोबायोलॉजिस्ट प्रोफेसर सुधांशु व्रती आरसीबी के कार्यकारी निदेशक हैं। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी के पूर्व वैज्ञानिक सुधांशु व्रती ट्रांसलेशनल हेल्थ साइंस एंड टेक्नोलॉजी इंस्टीट्यूट के पूर्व डीन भी रहे हैं। जैव प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा आपको वर्ष 2003 में सर्वोच्च भारतीय विज्ञान पुरस्कार "नेशनल बायोसाइंस अवार्ड फॉर करियर डेवलपमेंट" से सम्मानित किया गया। आईआईएसएफ-2022 के दौरान प्रोफेसर सुधांशु व्रती के साथ सुप्रिया पांडेय की बातचीत के प्रमुख अंश प्रस्तुत हैं।

प्रश्न: देश में साइंस फेस्टिवल जैसे कार्यक्रमों की जरूरत क्यों है? इसकी मूल अवधारणा क्या है?

उत्तर: वगत दो दिन से यहाँ के माहौल में साफ देखा जा सकता है कि विद्यार्थियों और नौजवानों में साइंस फेस्टिवल को लेकर कतना उत्साह है। कतनी बड़ी संख्या में लोग महोत्सव में शामिल हो रहे हैं। अथवा विज्ञान से जुड़े रहे हैं। विज्ञान को घर घर तक पहुंचाना, विज्ञान को आम जनता से रूबरू कराना ही इसकी मूल अवधारणा है, जिससे कि विशेषकर विद्यार्थियों और नौजवानों को रुचि इस क्षेत्र में जागे।





प्रोफेसर सुधांशु ब्रती, कार्यकारी निदेशक, क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी), फरीदाबाद (हरियाणा)

प्रश्न: आईआईएसएफ जैसे बड़े अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करते वक़्त आपको कन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है? और आप उनका समाधान कैसे करते हैं?

उत्तर: ये बहुत बड़ा फेस्टिवल है, यहां 15 कार्यक्रम समानांतर रूप से चल रहे हैं। इतने बड़े कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए बहुत बड़ी टीम की जरूरत होती है। अच्छी बात ये है कि विज्ञान प्रसार और विभा इस कार्यक्रम को आयोजित करने, रूपरेखा बनाने और इसका प्रचार-प्रसार करने में हमारी मदद कर रहे हैं। सबसे बड़ा चैलेंज, जो हमारे साथ था, वह था समय की कमी। हमें इसका प्रस्ताव नवंबर, 2022 में मिला। अगर ज्यादा समय मिला होता तो हम कार्यक्रमों को और बेहतर तरीके से आयोजित कर पाते। लेकिन, अभी भी सभी कार्यक्रम बहुत अच्छे तरीके से हो रहे हैं। विद्यार्थी और युवा इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं।

प्रश्न: ऐसे भव्य आयोजनों का क्या परिणाम निकल कर आता है? क्या ये अपने निर्धारित लक्ष्य को पूरा कर पाते हैं?

उत्तर: मुझे लगता है कि हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं। जब मैं मुख्य हॉल से होते हुए आ रहा था, तो मुझे करीब-करीब एक हजार बच्चों की लंबी कतार नजर आई और जब मैं अंदर आया तो वहाँ करीब एक हजार बच्चे बैठे हुए थे। प्रतिदिन फेस-टू-फेस कार्यक्रमों में स्कूली बच्चों की ही संख्या तीन हजार तक देखने को मिलती है, जिससे साफ जाहिर होता है कि उनमें विज्ञान के प्रति रुचि है। हम उस रुचि को और जागृत करने में सफल हो रहे हैं।

प्रश्न: आपने अपनी पीएचडी 'ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी' से पूरी की है, ऐसे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों एवं तकनीक में भारत की तुलना में आप क्या अंतर पाते हैं?

उत्तर: मैंने 1981 में पीएचडी की, और मुझे याद है कि उस समय हमारे देश में जिस क्षेत्र में मैं पीएचडी करना चाहता था, अर्थात् वायरोलॉजी के क्षेत्र में, उसमें न के बराबर काम हुआ था। लेकिन, मैं मॉलीक्यूलर लेवल पर वायरोलॉजी के बारे में जानना चाहता था। इस लिए, मैंने ऑस्ट्रेलिया की एक बड़ी यूनिवर्सिटी को चुना। लेकिन, मैं कहना चाहूँगा कि पहले करीब 25-30 वर्षों में हमारे देश में बायोटेक्नोलॉजी रिसर्च के संसाधनों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

प्रश्न: भारत 2047 में आजादी के 100 वर्ष पूरे कर रहा है, प्रधानमंत्री जी के लक्ष्य 2047 को पूरा करने के लिए बायोटेक्नोलॉजी सेक्टर क्या योगदान दे रहा है?

उत्तर: देश के विकास के लिए इकनॉमी को आगे बढ़ाना बहुत जरूरी है। बायोटेक्नोलॉजी सेक्टर, जिसको अब हम बायोइकनॉमी के नाम से जानते हैं, वो पहले छह-सात वर्षों से बहुत तेजी के साथ आगे बढ़ा है। हमारी बायोइकनॉमी तकरीबन 80 बिलियन डॉलर की है। वर्ष 2025 तक हम उम्मीद कर रहे हैं कि यह बढ़कर 150 बिलियन डॉलर हो जाए और मुझे लगता है कि 2047 तक आराम से एक हजार बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगी। देखा जाए तो ये बहुत बड़ा आँकड़ा है और अगर हम इसे हासिल कर पाए तो देश की इकनॉमी में हमारा बहुत बड़ा योगदान होगा।

प्रश्न: स्टार्टअप्स आत्मनिर्भर भारत में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, तो आपके अनुसार बायोटेक सेक्टर में स्टार्टअप्स की क्या स्थिति है?

उत्तर: हर क्षेत्र में, खासकर बायोटेक सेक्टर में पहले 3-4 वर्षों में स्टार्टअप्स की एक तरह से बाढ़ आयी हुई है। नये स्टार्टअप्स खुल रहे हैं, उनको मौके मिल रहे हैं, अनुकूल परिस्थितियाँ



मल रहीं हैं और सपोर्ट मल रहा है। उदाहरण के तौर पर फरीदाबाद में हमने बायो इनक्यूबेटर रीजनल सेंटर बायोटेक्नोलॉजी के साथ खोला हुआ है और आज से करीब तीन-चार वर्ष पूर्व जब हम उसकी शुरुआत कर रहे थे तब मुझे लगा था शायद इतने स्टार्टअप्स फरीदाबाद क्षेत्र में हमें न मल पाए। ले कन, आज की तारीख में लगभग 100 स्टार्टअप्स को हम लोग सपोर्ट कर पाए हैं। स्टार्टअप्स ने हमारा 99 प्रतिशत स्थान घेरा हुआ है। नए स्टार्टअप्स को संयोजित करने के लए हमारे पास जगह नहीं बची है, जिससे पता चलता है क स्टार्टअप्स के प्रति लोगों का कतना रुझान बढ़ गया है।

प्रश्न: आईआईएसएफ-2022 की थीम को लेकर आपके क्या वचार हैं?

उत्तर: माननीय प्रधानमंत्री ने अगले 25 साल यानी 2047 तक को अमृतकाल घो षत कया है। उनका मानना है क अगले 25 वर्षों में हमारे देश में जो काम होना है वह देश के लए अमृत के समान सद्ध होना चाहिए। जिससे क हम एडवांस इकनॉमी के रूप में जाने जाए।

प्रश्न: देश के वकास में युवाओं की भूमका को देखते हुए उनके लए कोई संदेश।

उत्तर: वज्ञान एक साधना है। वज्ञान के क्षेत्र में कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। हमें पता है क वज्ञान और प्रौद्योगकी के जरिए ही इस देश को आगे बढ़ा सकते हैं। ऐसे में हमें अपनी वैज्ञानिक सोच को बढ़ाना है, हमें वज्ञान के प्रति आम जनता में रुच बढ़ानी है। जब हम ऐसा कर पाने में सफल होंगे तभी हम देश को आगे बढ़ा पाएंगे।

“आज की तारीख में मैं बता सकता हूँ क हमारे देश में लगभग दस से पंद्रह प्रयोगशाला ऐसी हैं, जिनमें संसाधन और हमारे वैज्ञानिकों की वशेषज्ञता दुनिया की कसी भी अच्छी लैब के बराबर है। मैं तो यहाँ तक कहना चाहूंगा क कुछ लैब मे हम दुनिया से अग्रणी हैं। अब हमारे देश में वैज्ञानिक शोध के लए संसाधनों की कोई कमी नहीं है। और हम अच्छे से अच्छा शोध प्रस्तुत करने में समर्थ हैं।”



Government's particular focus on strengthening S&T ecosystems: Agriculture Minister

by [India Science Wire](#) [January 25, 2023](#) in [Science](#)



Union Minister of Agriculture and Farmers Welfare, Narendra Singh Tomar, said that the science and technology sector's development has made rapid progress under the leadership of Prime Minister Narendra Modi. Science and technology have touched and influenced every field of life and are one of the priorities of the Government of India. He was speaking during the closing ceremony of India International Science Festival (IISF)-2022, on Tuesday, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, Madhya Pradesh.

The Union Minister said that Vigyan Bharti, State Government and Central Government together provided an efficient platform for students, scientists, and



start-ups from across the country through this event. A large number of students and youth were invited to the festival. He said that our country is young and youth energy is its' biggest strength. 'Amritkaal', as envisioned by Prime Minister Narendra Modi, is a period when the country can fulfill its biggest expectations and goals, drawing on the strength of the young population. For this, the Government of India is promoting science and technology extensively.

“Government’s priority can also be understood from the fact that the former Prime Minister Lal Bahadur Shastri had given the slogan of ‘Jai Jawan-Jai Kisan’. Later, Prime Minister Atal Bihari Vajpayee added ‘Science’ to make it ‘Jai Jawan-Jai Kisan-Jai Vigyan’. Prime Minister Modi has completed it by adding ‘Anusandhan’. Now it is ‘Jai Jawan-Jai Kisan-Jai Vigyan and Jai Anusandhan,” said Narendra Singh Tomar.

“When we came into Government, the budget for science & technology was around Rs 2,000 crore, which was increased by our Prime Minister to more than Rs 6,000 crore,” he added.

Shri Tomar said that today no field was untouched by science and technology. In the agriculture sector too, due to technology, work has become easier, losses are being reduced and time is being saved. The use of drone technology is being made accessible to farmers. Farmers will get huge benefits through Digital Agriculture Mission, he said. Based on the way research is being done in the agriculture sector, we can say that in the coming days, India will increase its production and productivity by using technology. Along with fulfilling the country’s needs, we will also be successful in discharging our responsibilities toward the world.

Addressing the function, the science and technology minister of Madhya Pradesh, Om Prakash Sakhlecha said, that the IISF2022 was a complete success as a large number of students and youth participated in it, and now



they will be filled with curiosity and new zeal to do something big. He said, apart from Mega Start-up Expo, 1500 young scientists brainstormed on emerging technology in all areas of S&T including Biotechnology.

Secretary, Ministry of Science and Technology, Dr S. Chandrasekhar in his address said that we will come up with better agenda next time. He said, Science has no boundaries and the India International Science Festival (IISF) is fast emerging as a platform to deliberate on global challenges. Shri Chandrasekhar said that IISF is happening at a time, when India has assumed the G-20 Presidency under Prime Minister Shri Narendra Modi, where we will be showcasing India's power, not only in science and technology, but in every sector to the World.

Chairman, ISRO, Dr S. Somanath told the gathering that we are celebrating science to give light and way to the future generation for making pioneering contributions in 'Amritkaal'. Shri Somanath said, we have to be creative, and innovative and do many firsts in the world to become a scientific power. He expressed hope that India will become such a country by navigating the great scientific ecosystem that everyone in the world will aspire to come and live here.

Dr Sudhir Bhaduria, Secretary General, Vigyan Bharati said that the Vigyan Bharati is working with the Science Ministries and Science Department of universities and colleges in India to promote the modern scientific outlook and thinking for the benefit of the country and the entire humanity.

Nikunj Srivastava, S&T Secretary, Govt. of Madhya Pradesh; Dr. Sudhanshu Vрати, Executive Director, Regional Centre for Biotechnology (Faridabad); and Dr Anil Kothari were among other dignitaries of the programme.



IISF Bhopal deliberated on 15 important events in a four-day science festival like the 'Student Science Village' where 2500 students participated and get exposed to new technologies and innovations.

IISF-2022 with the theme of 'Moving towards Amritkal with Science, Technology and Innovation', was organized from 21 to 24 January 2023 at Bhopal, the city of lakes. The event was jointly organized in collaboration with the Ministry of Science and Technology, Ministry of Earth Sciences, Department of Atomic Energy, Department of Space, Madhya Pradesh Council of Science and Technology and Government of Madhya Pradesh and Vijnana Bharti.

The Department of Biotechnology under the Ministry of Science and Technology was the nodal department for organizing this mega event. Regional Center for Biotechnology (RCB), Faridabad was the Nodal agency for the IISF-2022. (India Science Wire)



Govt's particular focus on strengthening S&T ecosystems: Agriculture Minister

Narendra Singh Tomar was speaking during the closing ceremony of India International Science Festival (IISF)-2022 on January 24, 2023

By **BioVoice News Desk** - January 25, 2023



New Delhi: The science and technology sector's development has made rapid progress under the leadership of Prime Minister Narendra Modi. Science and technology have touched and influenced every field of life and are one of the priorities of the Government of India. This was stated by the Union Minister of Agriculture and Farmers Welfare, Narendra Singh Tomar.

He was speaking during the closing ceremony of India International Science Festival (IISF)-2022 on January 24, 2023, at Maulana Azad National Institute of Technology (MANIT), Bhopal, Madhya Pradesh.

The Union Minister said that Vigyan Bharti, State Government and Central Government together provided an efficient platform for students, scientists, and start-ups from across the country through this event. A large number of students and youth were invited to the festival.

He said that our country is young and youth energy is its' biggest strength. 'Amritkaal', as envisioned by Prime Minister Narendra Modi, is a period when the country can fulfill its biggest expectations and goals, drawing on the strength of the young population. For this, the Government of India is promoting science and technology extensively.

"Government's priority can also be understood from the fact that the former Prime Minister Lal Bahadur Shastri had given the slogan of 'Jai Jawan-Jai Kisan'. Later, Prime Minister Atal Bihari Vajpayee added 'Science' to make it 'Jai Jawan-Jai Kisan-Jai Vigyan'. Prime Minister Modi has completed it by adding 'Anusandhan'. Now it is 'Jai Jawan-Jai Kisan-Jai Vigyan and Jai Anusandhan," said Narendra Singh Tomar.

"When we came into Government, the budget for science & technology was around Rs 2,000 crore, which was increased by our Prime Minister to more than Rs 6,000 crore," he added.



Mr. Tomar said that today no field was untouched by science and technology. In the agriculture sector too, due to technology, work has become easier, losses are being reduced and time is being saved. The use of drone technology is being made accessible to farmers. Farmers will get huge benefits through Digital Agriculture Mission, he said. Based on the way research is being done in the agriculture sector, we can say that in the coming days, India will increase its production and productivity by using technology. Along with fulfilling the country's needs, we will also be successful in discharging our responsibilities toward the world.

Addressing the function, the science and technology minister of Madhya Pradesh, Om Prakash Sakhlecha said, that the IISF2022 was a complete success as a large number of students and youth participated in it, and now they will be filled with curiosity and new zeal to do something big. He said, apart from Mega Start-up Expo, 1500 young scientists brainstormed on emerging technology in all areas of S&T including Biotechnology.

Secretary, Ministry of Science and Technology, Dr S. Chandrasekhar in his address said that we will come up with better agenda next time. He said, Science has no boundaries and the India International Science Festival (IISF) is fast emerging as a platform to deliberate on global challenges. Shri Chandrasekhar said that IISF is happening at a time, when India has assumed the G-20 Presidency under Prime Minister Shri Narendra Modi, where we will be showcasing India's power, not only in science and technology, but in every sector to the World.

Chairman, ISRO, Dr S. Somanath told the gathering that we are celebrating science to give light and way to the future generation for making pioneering contributions in 'Amritkaal'.



Dr. Somanath said, we have to be creative, and innovative and do many firsts in the world to become a scientific power. He expressed hope that India will become such a country by navigating the great scientific ecosystem that everyone in the world will aspire to come and live here.

Dr Sudhir Bhaduria, Secretary General, Vigyan Bharati said that the Vigyan Bharati is working with the Science Ministries and Science Department of universities and colleges in India to promote the modern scientific outlook and thinking for the benefit of the country and the entire humanity.

Nikunj Srivastava, S&T Secretary, Govt. of Madhya Pradesh; Dr. Sudhanshu Vrati, Executive Director, Regional Centre for Biotechnology (Faridabad); and Dr Anil Kothari were among other dignitaries of the programme.

IISF Bhopal deliberated on 15 important events in a four-day science festival like the 'Student Science Village' where 2500 students participated and get exposed to new technologies and innovations.

IISF-2022 with the theme of 'Moving towards Amritkal with Science, Technology and Innovation', was organized from 21 to 24 January 2023 at Bhopal, the city of lakes. The event was jointly organized in collaboration with the Ministry of Science and Technology, Ministry of Earth Sciences, Department of Atomic Energy, Department of Space, Madhya Pradesh Council of Science and Technology and Government of Madhya Pradesh and Vijnana Bharti.

The Department of Biotechnology under the Ministry of Science and Technology was the nodal department for organizing this mega event. Regional Center for Biotechnology (RCB), Faridabad was the Nodal agency for the IISF-2022.

(India Science Wire)



साक्षात्कार : अभी हम परिपक्व हुए हैं, बाकी है हमारी

उड़ान -सु प्रया

पांडेय

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की नगरी झांसी से जिनेवा में स्थित कण भौतिकी की वश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला 'सर्न' तक का सफर तय करने वाली भारतीय वैज्ञानिक डॉ अर्चना शर्मा का सफर उपलब्धियों से भरा हुआ है।

वह यूरोपियन ऑर्गेनाइज़ेशन फॉर न्यूक्लियर रिसर्च (सर्न) में बतौर वरिष्ठ वैज्ञानिक शामिल रही हैं। हाल में प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से उन्हें 'प्रवासी भारतीय सम्मान' प्राप्त हुआ है। भोपाल में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 के दौरान डॉ अर्चना शर्मा के साथ सु प्रया पांडेय की बातचीत के प्रमुख अंश यहां प्रस्तुत हैं।

प्रश्न : वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की नगरी झांसी से पार्टिकल फीजिक्स के मक्का कहे जाने वाले जिनेवा में स्थित कण भौतिकी की वश्व की प्रमुख वैज्ञानिक प्रयोगशाला तक आपका सफर कैसा रहा है?

उत्तर : एक छोटे शहर के आम बच्चे की तरह मेरी पढ़ाई हुई। माता-पता ने प्रोत्साहित किया। टीचर्स बहुत अच्छे मले। उनके प्रोत्साहन से पीएचडी की। मुझे सर्न में जाने के लिए इंटरनल शप मली और इस तरह सर्न के साथ मेरी यात्रा शुरू हुई।

सवाल : विज्ञान जगत में महिलाओं की सहभागिता कैसी स्थिति देखने को मिलती है?

जवाब : महिलाओं के लिए संघर्ष तो है। मेरी पढ़ाई के वक्त मज़ाक तक उड़ाया जाता था। हमारे वक्त में हम दो लड़कियां थीं और पच्चीस लड़के थे। अधिक अंक लाने का दबाव उस समय भी रहता था। खल्लू उड़ने का डर रहता था। पर अब बदलाव आ रहा है। महिलाओं को समाज में



प्रोत्साहन मलेगा तो वो जरूर आगे आएंगी, बढ़ आगे पाएंगी। यदि आपने सोच लया क आगे बढ़ना ही है तो संघर्ष आपके जीवन का एक हिस्सा बन जाता है।

सवाल : आपके अनुसार युवा वैज्ञानिकों को कैसे आगे बढ़ना चाहिए?
जवाब : मैं सोचती हूं क उनमें महत्वकांक्षा होनी चाहिए क कहीं न कहीं हम कुछ अच्छा कर पायें। अपनी छाप छोड़ जाएं। अपनी ज़िन्दगी या कसी अन्य की ज़िन्दगी में बदलाव ला पायें। यह बदलाव चाहे तकनीक के क्षेत्र में हो या वज्ञान पर आधारित हो। युवाओं को जागरूक होने की जरूरत है क वज्ञान के बारे में वो जानें और अपनी स्किल में निरंतर सुधार करते रहें, उसे वक सत करते रहें। भारत के युवाओं में भरपूर क्षमता है। उन्हें दिशा मलने की देर है। मैंने सर्फ मेहनत की है। मैं आज भी अपने आप को एक मध्यवर्गीय व्यक्ति मानती हूं। अपनी मेहनत करते हुए इस मुकाम पर पहुंच गई। युवा भी अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहें तो सफलता मलनी तय है।

सवाल : आप कई वर्षों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही है। उस परिप्रेक्ष्य में भारत मे कन तकनीकों, साधनों एवं संसाधनों की आवश्यकता दिखाई देती है?
जवाब : अनुसंधान के लए इंफ्रास्ट्रक्चर एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत बहुत आगे बढ़ा है हर क्षेत्र में। हमारी युवा पीढ़ी में जुनून है। हमारे उद्यमी यूनीकॉन्स बना रहे हैं। इसी तरह, जब वज्ञान में इनपुट आएगा, तब बड़ा बदलाव देखने मलेगा। अभी हम परिपक्व हुए हैं। अभी हमारी उड़ान बाकी है।

सवाल : वज्ञान के क्षेत्र में निरंतर खोजें होती रहती हैं। को वड-19 के वक्त का रिसर्च पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

जवाब : को वड के वक्त पूरी दुनिया ही रुक गई थी। ऐसे में सवाल उठा क अब क्या करेंगे। व ध का वधान है क आपदा आती है तो उसका समाधान भी आता है। हमारे देश में जिस तरह से वैक्सीन पर काम हुआ, जिस तरह से को वड मैनेजमेंट हुआ, सारे को वड सर्टि फेक्ट्स बने, ये सब दुनिया के लए उदाहरण है। हमने सी मत समय में बहुत कुछ कर दिखाया। जो काम दुनिया में सालों में होता है, वो हमने महीनों में कर दिखाया। हमको कसी नई आपदा का इंतजार नहीं करना चाहिए, बस हमें आगे बढ़ते जाना चाहिए।



सवाल : वज्ञान में महारत हा सल करने के बाद आपने लेखन के क्षेत्र में भी प्रवेश क्या है। अपनी नई पुस्तक के बारे में कुछ बताइए।
जवाब : बच्चा जो बचपन में सीखता है, उसे कतना आगे बढ़ना है, यह तय हो जाता है। जो मैंने सर्न में सीखा, वो मैं अपने देश में आकर बच्चों को सरल भाषा में बताती हूं। भारतीय युवा अपने देश में बहुत काम कर रहे हैं। मैं भले सर्न में अकेली थी, पर देश में कई संस्थाओं से सम्बद्ध होकर काम कर रही हूं। मैंने 'नोबेल ड्रीम्स ऑफ इंडिया' नाम से कताब लखी है। इसमें वज्ञान की व भन्न शाखाओं में बीते बीस साल में नोबल पुरस्कार के बारे में लखा गया है।

(इंडिया साइंस वायर)



स्वस्थ भारत

स्वास्थ्य समाचार एवं विचार का राष्ट्रीय मंच

अभी हम परिपक्व हुए हैं, बाकी है हमारी उड़ान : डॉ.
अर्चना शर्मा

by [admin](#) January 26, 2023



झाँसी से जिनेवा स्थित कण भौतिकी की विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला 'सर्न' तक का सफर तय करने वाली भारतीय वैज्ञानिक डॉ. अर्चना शर्मा का सफर उपलब्धियों से भरा हुआ है। वह यूरोपियन ऑर्गेनाइजेशन फॉर न्यूक्लियर रिसर्च (CERN) में बतौर वरिष्ठ वैज्ञानिक शामिल रही हैं। हाल में प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से उन्हें 'प्रवासी भारतीय सम्मान' प्राप्त हुआ है। भोपाल में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (IISF)-2022 के दौरान उनके साथ सुप्रिया पांडेय की बातचीत के प्रमुख अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।
प्रश्न : वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की नगरी झाँसी से पार्टिकल फिजिक्स के मक्का कहे जाने वाले जिनेवा में स्थित कण भौतिकी की विश्व की प्रमुख वैज्ञानिक प्रयोगशाला तक आपका सफर कैसा

रहा

है?

उत्तर : एक छोटे शहर के आम बच्चे की तरह मेरी पढ़ाई हुई। माता-पिता ने प्रोत्साहित किया। टीचर्स बहुत अच्छे मले। उनके प्रोत्साहन से पीएचडी की। मुझे सर्न में जाने के लिए इंटरनल शप मली और इस तरह सर्न के साथ मेरी यात्रा शुरू हुई।

प्रश्न : वज्ञान जगत में महिलाओं की सहभागिता कैसी स्थिति देखने को मलती है?

उत्तर : महिलाओं के लिए संघर्ष तो है। मेरी पढ़ाई के वक्त मजाक तक उड़ाया जाता था। हमारे वक्त में हम दो लड़कियां थीं और पच्चीस लड़के। अधिक अंक लाने का दबाव उस समय भी रहता था। खल्ली उड़ने का डर रहता था। पर अब बदलाव आ रहा है। महिलाओं को समाज में प्रोत्साहन मलेगा तो वो जरूर आगे आएंगी, बढ़ पाएंगी। यदि आपने सोच लिया कि आगे बढ़ना ही है तो संघर्ष आपके जीवन का एक हिस्सा बन जाता है।

प्रश्न : आपके अनुसार युवा वैज्ञानिकों को कैसे आगे बढ़ना चाहिए?

जवाब : मैं सोचती हूँ कि उनमें महत्वकांक्षा होनी चाहिए कि कहीं न कहीं हम कुछ अच्छा कर पायें। अपनी छाप छोड़ जाएं। अपनी जिन्दगी या किसी अन्य की जिन्दगी में बदलाव ला पायें। यह बदलाव चाहे तकनीक के क्षेत्र में हो या वज्ञान पर आधारित हो। युवाओं को जागरूक होने की जरूरत है कि वज्ञान के बारे में वो जानें और अपनी स्किल में निरंतर सुधार कर चक सत करते रहें। भारत के युवाओं में भरपूर क्षमता है। उन्हें दिशा मिलने की देर है। मैंने सिर्फ मेहनत की है। मैं आज भी अपने आप को एक मध्यवर्गीय व्यक्ति मानती हूँ। अपनी मेहनत करते हुए इस मुकाम पर पहुँच गई। युवा भी अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहें तो सफलता मिलनी तय है।

प्रश्न : आप कई वर्षों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही हैं। उस परिप्रेक्ष्य में भारत में कन तकनीकों, साधनों एवं संसाधनों की आवश्यकता दिखाई देती है?

उत्तर : अनुसंधान के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत बहुत आगे बढ़ा है हर क्षेत्र में। हमारी युवा पीढ़ी में जुनून है। हमारे उद्यमी यूनीकॉर्न्स बना रहे हैं। इसी तरह, जब वज्ञान में इनपुट आएगा, तब बड़ा बदलाव देखने मलेगा। अभी हम परिपक्व हुए हैं। अभी हमारी उड़ान बाकी है।

प्रश्न : वज्ञान के क्षेत्र में निरंतर खोजें होती रहती हैं। कोवड-19 के वक्त का रिसर्च पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर : कोवड के वक्त पूरी दुनिया ही रुक गई थी। ऐसे में सवाल उठा कि अब क्या करेंगे। वध का वधान है कि आपदा आती है तो उसका समाधान भी आता है। हमारे देश में जिस तरह से वैक्सीन पर काम हुआ, जिस तरह से कोवड मैनेजमेंट हुआ, सारे कोवड सर्टिफिकेट्स बने, ये सब दुनिया के लिए उदाहरण है। हमने सीमत समय में बहुत कुछ कर दिखाया। जो



काम दुनिया में सालों में होता है, वो हमने महीनों में कर दिखाया। हमको कसी नई आपदा का इंतजार नहीं करना चाहिए, बस हमें आगे बढ़ते जाना चाहिए।

प्रश्न : वज्ञान में महारत हा सल करने के बाद आपने लेखन के क्षेत्र में भी प्रवेश किया है। अपनी नई पुस्तक के बारे में कुछ बताइए।

उत्तर : बच्चा जो बचपन में सीखता है, उसे कतना आगे बढ़ना है, यह तय हो जाता है। जो मैंने सर्न में सीखा, वो मैं अपने देश में आकर बच्चों को सरल भाषा में बताती हूँ। भारतीय युवा अपने देश में बहुत काम कर रहे हैं। मैं भले सर्न में अकेली थी, पर देश में कई संस्थाओं से सम्बद्ध होकर काम कर रही हूँ। मैंने 'नोबेल ड्रीम्स ऑफ इंडिया' नाम से कताब लखी है। इसमें वज्ञान की व भन्न शाखाओं में बीते बीस साल में नोबल पुरस्कार के बारे में लखा गया है।

इंडिया साइंस वायर से साभार



साक्षात्कार “अभी हम परिपक्व हुए हैं, बाकी है हमारी उड़ान”

25/01/2023 V3news India



वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की नगरी झांसी से जिनेवा में स्थित कण भौतिकी की विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला ‘सर्न’ तक का सफर तय करने वाली भारतीय वैज्ञानिक डॉ अर्चना शर्मा का सफर उपलब्धियों से भरा हुआ है। वह यूरोपियन ऑर्गेनाइज़ेशन फॉर न्यूक्लियर रिसर्च (सर्न) में बतौर वरिष्ठ वैज्ञानिक शामिल रही हैं। हाल में प्रवासी भारतीय दिवस के अवसर भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से उन्हें ‘प्रवासी भारतीय सम्मान’ प्राप्त हुआ है। भोपाल में आयोजित इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल (आईआईएसएफ)-2022 के दौरान डॉ अर्चना शर्मा के साथ सुप्रिया पांडेय की बातचीत के प्रमुख अंश यहाँ प्रस्तुत हैं।



प्रश्न: वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की नगरी झाँसी से पार्टिकल फीजिक्स के मक्का कहे जाने वाले जिनेवा में स्थित कण भौतिकी की वश्व की प्रमुख वैज्ञानिक प्रयोगशाला तक आपका सफर कैसा रहा है?

उत्तर: एक छोटे शहर के आम बच्चे की तरह मेरी पढ़ाई हुई। माता-पता ने प्रोत्साहित किया। टीचर्स बहुत अच्छे मले। उनके प्रोत्साहन से पीएचडी की। मुझे सर्न में जाने के लिए इंटरनल शप मली और इस तरह सर्न के साथ मेरी यात्रा शुरू हुई।

प्रश्न: वज्ञान जगत में महिलाओं की सहभागिता कैसी स्थिति देखने को मलती है?

उत्तर: महिलाओं के लिए संघर्ष तो है। मेरी पढ़ाई के वक्त मज़ाक तक उड़ाया जाता था। हमारे वक्त में हम दो लड़कियां थीं और पच्चीस लड़के थे। अधिक अंक लाने का दबाव उस समय भी रहता था। खल्ली उड़ने का डर रहता था। पर अब बदलाव आ रहा है। महिलाओं को समाज में प्रोत्साहन मलेगा तो वो जरूर आगे आएंगी, बढ़ आगे पाएंगी। यदि आपने सोच लया क आगे बढ़ना ही है तो संघर्ष आपके जीवन का एक हिस्सा बन जाता है।

प्रश्न: आपके अनुसार युवा वैज्ञानिकों को कैसे आगे बढ़ना चाहिए?

उत्तर: मैं सोचती हूँ क उनमें महत्वकांक्षा होनी चाहिए क कहीं न कहीं हम कुछ अच्छा कर पायें। अपनी छाप छोड़ जाएं। अपनी ज़िन्दगी या कसी अन्य की ज़िन्दगी में बदलाव ला पायें। यह बदलाव चाहे तकनीक के क्षेत्र में हो या वज्ञान पर आधारित हो। युवाओं को जागरूक होने की जरूरत है क वज्ञान के बारे में वो जानें और अपनी स्किल में निरंतर सुधार करते रहें, उसे वकसत करते रहें। भारत के युवाओं में भरपूर क्षमता है। उन्हें दिशा मलने की देर है। मैंने सर्फ मेहनत की है। मैं आज भी अपने आप को एक मध्यवर्गीय व्यक्ति मानती हूँ। अपनी मेहनत करते हुए इस मुकाम पर पहुँच गई। युवा भी अपने लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहें तो सफलता मलनी तय है।

प्रश्न: आप कई वर्षों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही हैं। उस परिप्रेक्ष्य में भारत में कन तकनीकों, साधनों एवं संसाधनों की आवश्यकता दिखाई देती है?



उत्तर: अनुसंधान के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारत बहुत आगे बढ़ा है हर क्षेत्र में। हमारी युवा पीढ़ी में जुनून है। हमारे उद्यमी यूनीकॉर्न्स बना रहे हैं। इसी तरह, जब वज्ञान में इनपुट आएगा, तब बड़ा बदलाव देखने मलेगा। अभी हम परिपक्व हुए हैं। अभी हमारी उड़ान बाकी है।

प्रश्न: वज्ञान के क्षेत्र में निरंतर खोजें होती रहती हैं। को वड-19 के वक्त का रिसर्च पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर: को वड के वक्त पूरी दुनिया ही रुक गई थी। ऐसे में सवाल उठा क अब क्या करेंगे। व ध का वधान है क आपदा आती है तो उसका समाधान भी आता है। हमारे देश में जिस तरह से वैक्सीन पर काम हुआ, जिस तरह से को वड मैनेजमेंट हुआ, सारे को वड सर्टि फकेट्स बने, ये सब दुनिया के लिए उदाहरण है। हमने सी मत समय में बहुत कुछ कर दिखाया। जो काम दुनिया में सालों में होता है, वो हमने महीनों में कर दिखाया। हमको कसी नई आपदा का इंतजार नहीं करना चाहिए, बस हमें आगे बढ़ते जाना चाहिए।

प्रश्न: वज्ञान में महारत हा सल करने के बाद आपने लेखन के क्षेत्र में भी प्रवेश किया है। अपनी नई पुस्तक के बारे में कुछ बताइए।

उत्तर: बच्चा जो बचपन में सीखता है, उसे कतना आगे बढ़ना है, यह तय हो जाता है। जो मैंने सर्न में सीखा, वो मैं अपने देश में आकर बच्चों को सरल भाषा में बताती हूँ। भारतीय युवा अपने देश में बहुत काम कर रहे हैं। मैं भले सर्न में अकेली थी, पर देश में कई संस्थाओं से सम्बद्ध होकर काम कर रही हूँ। मैंने नोबेल ड्रीम्स ऑफ इंडिया नाम से कताब लखी है। इसमें वज्ञान की व भन्न शाखाओं में बीते बीस साल में नोबल पुरस्कार के बारे में लखा गया है।



भारत का गगनयान मशन 2024 में हो सकता है लॉन्च



(वशेष साक्षात्कार)

Last Updated: बुधवार, 25 जनवरी 2023

भारत अंतरिक्ष में अपना पहला मानव मशन गगनयान-3 अगले साल 2024 में लॉन्च कर सकता है। इसे लेकर हर स्तर पर बारीकी से परीक्षण कए जा रहे हैं। एस्ट्रोनॉट्स की सुरक्षा की दृष्टि से इसरो पहले मानव रहित तरीके से गगनयान की लॉन्चिंग करेगा।



यह बात भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (ISRO) के चेयरमैन डॉ एस. सोमनाथ ने विशेष साक्षात्कार में कही है। वे मंगलवार को 8वें भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ)-2022 के समापन सत्र में शामिल होने के लिए भोपाल पहुंचे थे। इसरो प्रमुख डॉ एस. सोमनाथ से हितेश कुशवाहा / राहुल चौकसे की विशेष बातचीत के प्रमुख अंश यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

सवाल : भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव में छात्रों एवं प्रतिभागियों का उत्साह देखकर कैसा लग रहा है

जवाब : सब मुझे उत्साह से लबरेज नजर आए। युवाओं की जबरदस्त सहभागिता दिखी है। इस आयोजन में अभूतपूर्व प्रतिसाद देखने को मिला।

सवाल : केंद्र सरकार ने हाल ही में स्पेस सेक्टर को निजी क्षेत्रों के लिए खोला है। इसरो के नजरिये से भविष्य में इसके क्या लाभ होंगे?

जवाब : सरकार ने दो साल पहले स्पेस सेक्टर रिफॉर्मर्स-2020 जारी किया था। यह इसका तीसरा साल है। हमने बहुत से काम किए हैं। पहला, हमने 'इन-स्पेस' का गठन किया, जो अधिकृत करने, बढ़ावा देने व सहयोग देने वाली एजेंसी के रूप में कार्य कर रही है। इसकी मदद से स्पेस सेक्टर में 100 से अधिक स्टार्टअप और कंपनियों को मदद मिली है। दूसरा, हमने न्यू स्पेस इंडिया लमटेड (एनएसआईएल) पब्लिक सेक्टर यूनिट बनायी है, जो मांग के अनुरूप काम करेगी। तीसरा, इसरो स्टार्टअप्स को भी मदद कर रहा है ताक वो आगे आ सकें।

सवाल : चंद्रमा पर भारत का पहला मानव मशन गगनयान-3 कब तक लॉन्च होगा। आप इसरो की इस उपलब्धि को कस ऊंचाई पर देखते हैं?

जवाब : चंद्रमा की यात्रा पर हम एक बार चन्द्रयान मशन-2 में जा चुके हैं। बस वहां लैंडिंग नहीं हो सकी थी। ओरबिटर वहां है और उससे काफी वैज्ञानिक शोध हो रहे हैं। चन्द्रयान-3 को हम जून 2023 में लान्च कर रहे हैं। उसके बाद गगनयान अभियान शुरू होगा। हमारा 2024 का लक्ष्य है। हम काफी परीक्षण कर रहे हैं। हमारे एस्ट्रोनॉट्स की सुरक्षा की दृष्टि से यह बहुत जरूरी है। इसके बाद हम मानव रहित तरीके से टेस्टिंग के बारे में सोच सकते हैं। हमारे साइंटिस्ट की जान को खतरा नहीं होना चाहिए।

सवाल : मंगल मशन के बाद गगनयान-3 मशन सबसे कम खर्च में होने जा रहा है। यह



उपलब्धि हमने कैसे हासिल की है?

जवाब : हमारा अप्रोच अलग है। इसी लिए, यह कफायती है। हम बारीकी से विश्लेषण करते हैं। हम निर्माण लागत पर गहनता से अध्ययन करते हैं। हार्डवेयर निर्माण कैसे होगा। उन्हें रीसाइकल कैसे किया जा सकता है। हम लागत को कम रखने के लिए निरंतर नवोन्मेषी प्रयास करते रहते हैं। यह हमारी खासियत है।

सवाल : स्कूली स्तर पर 10वीं और 12वीं के बच्चों के मन में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति काफी जिज्ञासा होती है। क्या इसरो के कार्यों और अंतरिक्ष से जुड़े विषय को सिलेबस में शामिल किया जाना चाहिए?

जवाब : बिल्कुल, पाठ्यक्रम में शामिल कर सकते हैं। यूजीसी सहित हम अन्य मान्य संस्थाओं के साथ चर्चा में हैं। स्पेस कोर्स हम आईआईटी में शुरू करा रहे हैं। स्कूल में भी हम पांचवीं और सातवीं कक्षा के विषयों में इसे जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।
(इंडिया साइंस वायर)



भारत का गगनयान मशन 2024 में:इसरो प्रमुख

by [admin](#) January 25, 20230



भारत अंतरिक्ष में अपना पहला मानव मशन गगनयान-3 अगले साल 2024 में लॉन्च कर सकता है। इसे लेकर हर स्तर पर बारीकी से परीक्षण कए जा रहे हैं। एस्ट्रोनॉट्स की सुरक्षा की दृष्टि से इसरो पहले मानव रहित तरीके से गगनयान की लॉन्चिंग होगी। यह बात भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (ISRO) के चेयरमैन डॉ. एस. सोमनाथ ने विशेष साक्षात्कार में कही है। वे भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव (IISF)-2022 के समापन सत्र में शामिल होने के लिए भोपाल पहुँचे थे। इसरो प्रमुख डॉ. एस. सोमनाथ से हितेश कुशवाहा व राहुल राहुल चौकसे की विशेष बातचीत के प्रमुख अंश यहाँ प्रस्तुत कये जा रहे हैं।

प्रश्न : भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव में छात्रों एवं प्रतिभा गयों का उत्साह देखकर कैसा लग रहा है?



उत्तर : सब मुझे उत्साह से लबरेज नजर आए। युवाओं की जबरदस्त सहभागिता दिखी है। इस आयोजन में अभूतपूर्व प्रतिसाद देखने को मिला।

प्रश्न : केंद्र सरकार ने हाल ही में स्पेस सेक्टर को निजी क्षेत्र के लिए खोला है। इसरो के नजरिये से भविष्य में इसके क्या लाभ होंगे?

उत्तर : सरकार ने दो साल पहले स्पेस सेक्टर रिफॉर्मस-2020 जारी किया था। यह इसका तीसरा साल है। हमने बहुत से काम किए हैं। पहला, हमने 'इन-स्पेस' का गठन किया, जो अधिकृत करने, बढ़ावा देने व सहयोग देने वाली एजेंसी के रूप में कार्य कर रही है। इसकी मदद से स्पेस सेक्टर में 100 से अधिक स्टार्टअप और कंपनियों को मदद मिली है। दूसरा, हमने न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL) पब्लिक सेक्टर यूनिट बनायी है, जो मांग के अनुरूप काम करेगी। तीसरा, इसरो स्टार्टअप्स को भी मदद कर रहा है ताकि वो आगे आ सकें।

प्रश्न : चंद्रमा पर भारत का पहला मानव मशन गगनयान-3 कब तक लॉन्च होगा। आप इसरो की इस उपलब्धि को कस ऊंचाई पर देखते हैं?

उत्तर : चंद्रमा की यात्रा पर हम एक बार चन्द्रयान मशन-2 में जा चुके हैं। बस वहां लैंडिंग नहीं हो सकी थी। ओरबिटर वहाँ है और उससे काफी वैज्ञानिक शोध हो रहे हैं। चन्द्रयान-3 को हम जून 2023 में लॉन्च कर रहे हैं। उसके बाद गगनयान अभियान शुरू होगा। हमारा 2024 का लक्ष्य है। हम काफी परीक्षण कर रहे हैं। एस्ट्रोनॉट्स की सुरक्षा की दृष्टि से यह बहुत जरूरी है। इसके बाद हम मानव रहित तरीके से टेस्टिंग के बारे में सोच सकते हैं। हमारे साइंटिस्ट की जान को खतरा नहीं होना चाहिए।

प्रश्न : मंगल मशन के बाद गगनयान-3 मशन सबसे कम खर्च में होने जा रहा है। यह उपलब्धि हमने कैसे हासिल की है?

उत्तर : हमारा अप्रोच अलग है इसी लिए, यह कफायती है। हम बारीकी से विश्लेषण करते हैं। हम निर्माण लागत पर गहनता से अध्ययन करते हैं। हार्डवेयर निर्माण कैसे होगा, उन्हें रीसाइकल कैसे किया जा सकता है। हम लागत को कम रखने के लिए निरंतर नवोन्मेषी प्रयास करते रहते हैं। यह हमारी खासियत है।

प्रश्न : स्कूली स्तर पर 10वीं और 12वीं के बच्चों के मन में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति काफी जिज्ञासा होती है। क्या इसरो के कार्यों और अंतरिक्ष से जुड़े विषय को सलेबस में शामिल किया जाना चाहिए?

उत्तर : बिल्कुल, पाठ्यक्रम में शामिल कर सकते हैं। UGC सहित हम अन्य मान्य संस्थाओं के साथ चर्चा में हैं। स्पेस कोर्स हम IIT में शुरू करा रहे हैं। स्कूल में भी हम पांचवीं और सातवीं कक्षा के विषयों में इसे जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।

इंडिया साइंस वायर से साभार



भारत का गगनयान मशन 2024 में: इसरो प्रमुख

January 25, 2023 by Dialogue India

भारत अंतरिक्ष में अपना पहला मानव मशन गगनयान-3 अगले साल 2024 में लॉन्च कर सकता है। इसे लेकर हर स्तर पर बारीकी से परीक्षण कए जा रहे हैं। एस्ट्रोनॉट्स की सुरक्षा की दृष्टि से इसरो पहले मानव रहित तरीके से गगनयान की लॉन्चिंग करेगा। यह बात भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान (ISRO) के चेयरमैन डॉ एस. सोमनाथ ने वशेष साक्षात्कार में कही है। वे मंगलवार को 8वें भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव (आईआईएसएफ)-2022 के समापन सत्र में शामिल होने के लए भोपाल पहुँचे थे। इसरो प्रमुख डॉ एस. सोमनाथ से हितेश कुशवाहा / राहुल चौकसे की वशेष बातचीत के प्रमुख अंश यहाँ प्रस्तुत कये जा रहे हैं।
प्रश्न: भारत अंतरराष्ट्रीय वज्ञान महोत्सव में छात्रों एवं प्रतिभा गर्यों का उत्साह देखकर कैसा लग रहा है?

उत्तर: सब मुझे उत्साह से लबरेज नज़र आए। युवाओं की जबरदस्त सहभागता दिखी है। इस आयोजन में अभूतपूर्व प्रतिसाद देखने को मला।

प्रश्न: केंद्र सरकार ने हाल ही में स्पेस सेक्टर को निजी क्षेत्रों के लए खोला है। इसरो के नजरिये से भवष्य में इसके क्या लाभ होंगे?

उत्तर: सरकार ने दो साल पहले स्पेस सेक्टर रिफॉर्मर्स-2020 जारी कया था। यह इसका तीसरा साल है। हमने बहुत से काम कए हैं। पहला, हमने 'इन-स्पेस' का गठन कया, जो अ धकृत करने, बढ़ावा देने व सहयोग देने वाली एजेंसी के रूप में कार्य कर रही है। इसकी मदद से स्पेस सेक्टर में 100 से अ धक स्टार्टअप और कम्पनियों को मदद मली है। दूसरा, हमने न्यू स्पेस इंडिया ल मटेड (एनएसआईएल) पब्लिक सेक्टर यूनिट बनायी है, जो मांग के अनुरूप काम करेगी। तीसरा, इसरो स्टार्टअप्स को भी मदद कर रहा है ताक वो आगे आ सकें।

प्रश्न: चंद्रमा पर भारत का पहला मानव मशन गगनयान-3 कब तक लॉन्च होगा। आप इसरो की इस उपलब्धि को कस ऊंचाई पर देखते हैं?

उत्तर: चन्द्रमा की यात्रा पर हम एक बार चन्द्रयान मशन-2 में जा चुके हैं। बस वहां लें डंग नहीं हो सकी थी। ओरबिटर वहाँ है और उससे काफी वैज्ञानिक शोध हो रहे हैं। चन्द्रयान-3 को हम जून 2023 में लान्च कर रहे हैं। उसके बाद गगनयान अभियान शुरू होगा। हमारा 2024 का लक्ष्य है। हम काफी परीक्षण कर रहे हैं। हमारे एस्ट्रोनॉट्स की सुरक्षा की दृष्टि से यह बहुत



जरूरी है। इसके बाद हम मानव रहित तरीके से टेस्टिंग के बारे में सोच सकते हैं। हमारे साइंटिस्ट की जान को खतरा नहीं होना चाहिए।
प्रश्न: मंगल मशन के बाद गगनयान-3 मशन सबसे कम खर्च में होने जा रहा है। यह उपलब्धि हमने कैसे हासिल की है?

उत्तर: हमारा अप्रोच अलग है। इसी लिए, यह कफायती है। हम बारीकी से विश्लेषण करते हैं। हम निर्माण लागत पर गहनता से अध्ययन करते हैं। हार्डवेयर निर्माण कैसे होगा। उन्हें रीसाइकल कैसे किया जा सकता है। हम लागत को कम रखने के लिए निरंतर नवोन्मेषी प्रयास करते रहते हैं। यह हमारी खासियत है।

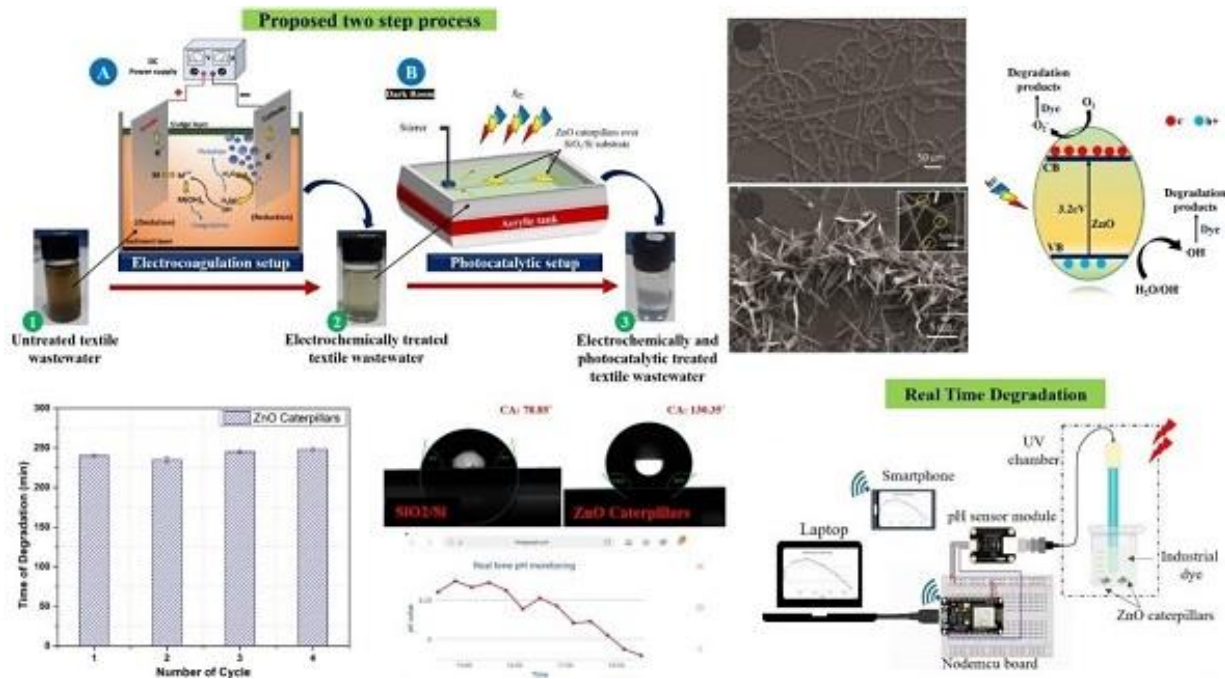
प्रश्न: स्कूली स्तर पर 10वीं और 12वीं के बच्चों के मन में अंतरिक्ष विज्ञान के प्रति काफी जिज्ञासा होती है। क्या इसरो के कार्यों और अंतरिक्ष से जुड़े विषय को सिलेबस में शामिल किया जाना चाहिए?

उत्तर: बिल्कुल, पाठ्यक्रम में शामिल कर सकते हैं। यूजीसी सहित हम अन्य मान्य संस्थाओं के साथ चर्चा में हैं। स्पेस कोर्स हम आईआईटी में शुरू करा रहे हैं। स्कूल में भी हम पांचवीं और सातवीं कक्षा के विषयों में इसे जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं।



कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन की नई पद्धति

[Admin](#) Posted on: 2023-01-30 15:23:00 Viewer: 71 Comments: 0 Country: India City: Singrauli



Singrauli Mirro News: कपड़ा उद्योग से उत्सर्जित कृत्रिम रंगों की वस्तुतः श्रृंखला मानव और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकती है। इसी लिए, कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन के लिए नवीन उपचार तकनीकों की आवश्यकता है, जिससे अप शष्ट जल में डाई अणुओं को पूरी तरह नष्ट किया जा सके। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर के शोधकर्ताओं ने अप शष्ट जल-शोधन की दो-चरणीय नई पद्धति विकसित की है, जिससे कपड़ा उद्योग से निकले रंगीन अप शष्ट जल का शोधन कर सकते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस तरह उपचारित जल का अन्य उद्देश्यों के लिए पुनः उपयोग किया जा सकता है।

अप शष्ट जल-शोधन के पहले चरण में दूषित जल का इलेक्ट्रोकेमिकल पद्धति से प्रसंस्करण किया जाता है। जल-शोधन के दूसरे चरण में कार्बन नैनोफाइबर पर नये ZnO कैटर पलर के उपयोग से वास्तवक समय में फोटोकैटलिटिक निम्नीकरण किया जाता है। आईआईटी जोधपुर के अध्ययन में यह पद्धति प्रदूषकों का पूर्ण रूप से क्षरण करने में सक्षम पायी गई है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अप शष्ट जल को दो चरणों में उपचारित करने से प्रक्रिया की जटिलताएं कम हो जाती हैं, और कोई द्वितीयक प्रदूषण नहीं होता।

आईआईटी जोधपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के शोधकर्ता डॉ अंकुर गुप्ता ने अपने शोध छात्र गुलशन वर्मा एवं प्रंस कुमार राय के साथ-साथ कार्लजूए इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जर्मनी के प्रोफेसर जॉन गेरिट कोर वंक तथा डॉ मौसुर इस्लाम के सहयोग से यह अध्ययन किया है। उन्होंने कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल को प्राकृतिक जल निकायों में छोड़ने से पहले उपचार के लिए इस दो-चरणीय प्रक्रिया का पता लगाया है। उनके द्वारा किया गया यह अध्ययन शोध-पत्रिका मैटेरियल साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रकाशित किया गया है।

डॉ अंकुर गुप्ता ने कहते हैं, "दूषित जल से जुड़ी समस्या को दूर करने की आवश्यकता बढ़ रही है, जो मुख्य रूप से स्टील और कपड़ा उद्योगों से होने वाले उत्सर्जन का परिणाम है। वस्त्र उद्योगों से निकलने वाले अप शष्ट में पाये जाने वाले दूषित पदार्थों में अपघटनीय जैविक तत्व, भारी धातुएं, रंजक, रासायनिक एजेंट और पीएच-नियंत्रित रसायन शामिल रहते हैं। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर अप शष्ट जल के दुष्प्रभावों को देखते हुए, हमें इसको पुनर्चक्रित करने; और जहाँ तक संभव हो परिशोधित जल के पुनः उपयोग को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।"

कपड़ा उद्योग, जल संसाधनों के प्रमुख उपभोक्ताओं में से एक है, जो वर्षाकाल में, मैलेपन, रंगों की प्रचुरता, अकार्बनिक एवं कार्बनिक तत्वों से युक्त अप शष्ट जल का उत्पादन करते हैं। कपड़ा उद्योगों से निकले अप शष्ट जल की संरचना में व्यापक भिन्नता के कारण अधिकांश पारंपरिक प्रक्रियाएं (वर्षा, आयन एक्सचेंज, झल्ली फ़ल्टरिंग आदि) अप्रभावी साबित हो रही हैं। इस लिए, इस समस्या से निजात पाने के लिए वैकल्पिक समाधान की जरूरत है।

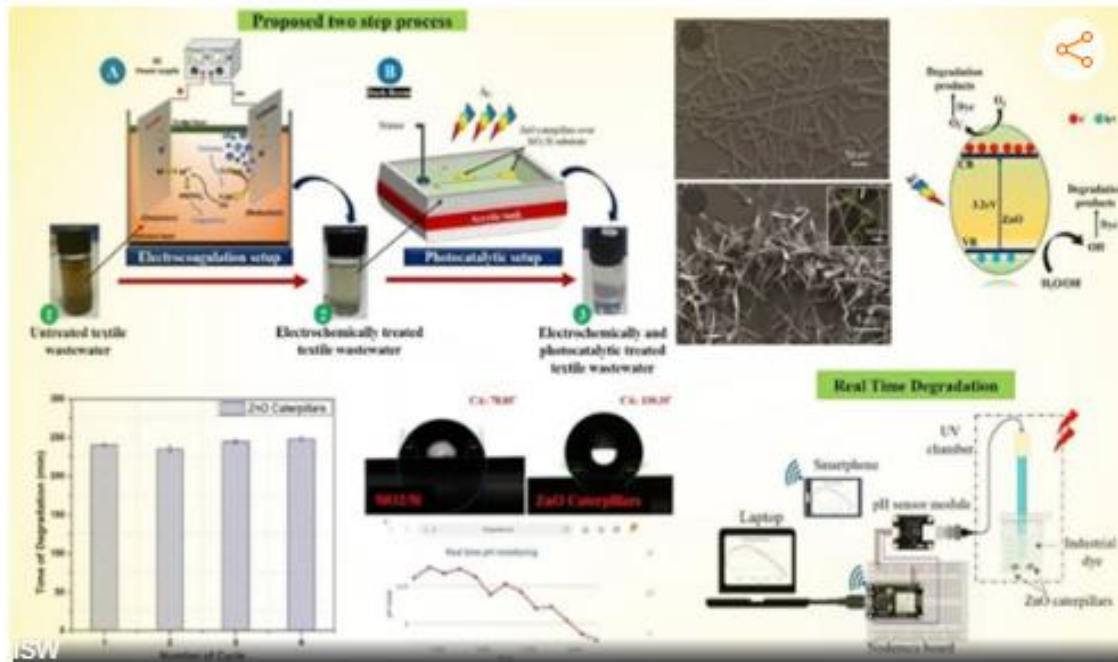
नई एकीकृत प्रक्रिया वास्तविक वस्त्र नमूनों में मौजूद कठोर रंगों के प्रभावी निम्नीकरण के साथ-साथ उच्च कार्बनिक पदार्थों को हटाने की दक्षता प्रदान करती है। कुशल निर्माण प्रक्रिया के उपयोग से ZnO कैटर पलर पैदा किया जाता है, जो वाष्प-तरल-ठोस बंधन से सलकॉन सबस्ट्रेट पर कार्बन नैनोफाइबर पर बसते होते हैं। आईओटी तकनीक से वस्त्र उद्योग के अप शष्ट जल निम्नीकरण की रियल टाइम निगरानी की जाती है। एक नोड एमसीयू माइक्रो-कंट्रोलर बोर्ड और पीएच सेंसर को एकीकृत करके इस प्रक्रिया को अंजाम दिया जाता है।

फोटो-कैटे लटिक डकलराइजेशन की प्रक्रिया से हरापन लए पीले रंग को रंगहीन (99 प्रतिशत) करने में लगभग 240 मिनट लगते हैं। इसके अतिरिक्त, वस्त्र उद्योग के अपशुद्ध जल से काफी मात्रा में टीएसएस (लगभग 75 प्रतिशत) और टीडीएस (लगभग 80 प्रतिशत) भी निकाल दिए जाते हैं। इसके लए इलेक्ट्रोकेमिकल और फोटोकैटलिटिक डिग्रेडेशन प्रक्रिया का एकीकरण किया गया है।





कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन की नई पद्धति



इंडिया साइंस वायर | Jan 28, 2023 5:09PM

अप शष्ट जल-शोधन के पहले चरण में दूषित जल का इलेक्ट्रोकेमिकल पद्धति से प्रसंस्करण किया जाता है। जल-शोधन के दूसरे चरण में कार्बन नैनोफाइबर पर नये ZnO कैटर पलर के उपयोग से वास्तविक समय में फोटोकैटलिटिक निम्नीकरण किया जाता है।

कपड़ा उद्योग से उत्सर्जित कृत्रिम रंगों की वस्तुतः श्रृंखला मानव और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकती है। इसी लिए, कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन के लिए नवीन उपचार तकनीकों की आवश्यकता है, जिससे अप शष्ट जल में डाई अणुओं को पूरी तरह नष्ट किया जा सके। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर के शोधकर्ताओं ने अप शष्ट जल-शोधन की दो-चरणीय नई पद्धति विकसित की है, जिससे कपड़ा उद्योग से

निकले रंगीन अप शष्ट जल का शोधन कर सकते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है क इस तरह उपचारित जल का अन्य उद्देश्यों के लए पुनः उपयोग कया जा सकता है।

अप शष्ट जल-शोधन के पहले चरण में दूषत जल का इलेक्ट्रोकेमकल पद्धति से प्रसंस्करण कया जाता है। जल-शोधन के दूसरे चरण में कार्बन नैनोफाइबर पर नये ZnO कैटर पलर के उपयोग से वास्तवक समय में फोटोकैटलिटिक निम्नीकरण कया जाता है। आईआईटी जोधपुर के अध्ययन में यह पद्धति प्रदूषकों का पूर्ण रूप से क्षरण करने में सक्षम पायी गई है। शोधकर्ताओं का कहना है क अप शष्ट जल को दो चरणों में उपचारित करने से प्रक्रया की जटिलताएं कम हो जाती हैं, और कोई द्वितीयक प्रदूषण नहीं होता।

आईआईटी जोधपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग वभाग के शोधकर्ता डॉ अंकुर गुप्ता ने अपने शोध छात्र गुलशन वर्मा एवं प्रंस कुमार राय के साथ-साथ कार्लजूए इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जर्मनी के प्रोफेसर जॉन गेरिट कोर वंक तथा डॉ मॉसुर इस्लाम के सहयोग से यह अध्ययन कया है। उन्होंने कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल को प्राकृतिक जल निकायों में छोड़ने से पहले उपचार के लए इस दो-चरणीय प्रक्रया का पता लगाया है। उनके द्वारा कया गया यह अध्ययन शोध-पत्रिका मैटेरियल साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रकाशित कया गया है।

डॉ अंकुर गुप्ता ने कहते हैं, "दूषत जल से जुडी समस्या को दूर करने की आवश्यकता बढ़ रही है, जो मुख्य रूप से स्टील और कपड़ा उद्योगों से होने वाले उत्सर्जन का परिणाम है। वस्त्र उद्योगों से निकलने वाले अप शष्ट में पाये जाने वाले दूषत पदार्थों में अपघटनीय जैवक तत्व, भारी धातुएं, रंजक, रासायनिक एजेंट और पीएच-नियंत्रित रसायन शामिल रहते हैं। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर अप शष्ट जल के दुष्प्रभावों को देखते हुए, हमें इसको पुनर्चक्रित करने; और जहाँ तक संभव हो परिशोधित जल के पुनः उपयोग को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।"

कपड़ा उद्योग, जल संसाधनों के प्रमुख उपभोक्ताओं में से एक है, जो वषाक्त यौगकों, मैलेपन, रंगों की प्रचुरता, अकार्बनिक एवं कार्बनिक तत्वों से युक्त अप शष्ट जल का उत्पादन करते हैं। कपड़ा उद्योगों से निकले अप शष्ट जल की संरचना में व्यापक भन्नता के कारण अधिकांश पारंपरिक प्रक्रयाएं (वर्षा, आयन एक्सचेंज, झल्ली फ़ल्टरिंग आदि) अप्रभावी साबित हो रही हैं। इस लए, इस समस्या से निजात पाने के लए वैकल्पिक समाधान की जरूरत है।

नई एकीकृत प्रक्रया वास्तवक वस्त्र नमूनों में मौजूद कठोर रंगों के प्रभावी निम्नीकरण के साथ-साथ उच्च कार्बनिक पदार्थों को हटाने की दक्षता प्रदान करती है। कुशल निर्माण प्रक्रया के



उपयोग से ZnO कैटर पलर पैदा किया जाता है, जो वाष्प-तरल-ठोस व ध से स लकॉन सबस्ट्रेट पर कार्बन नैनोफाइबर पर वक सत होते हैं। आईओटी तकनीक से वस्त्र उद्योग के अप शष्ट जल निम्नीकरण की रियल टाइम निगरानी की जाती है। एक नोड एमसीयू माइक्रो-कंट्रोलर बोर्ड और पीएच सेंसर को एकीकृत करके इस प्र क्रया को अंजाम दिया जाता है।

फोटो-कैटे लटिक डकलराइजेशन की प्र क्रया से हरापन लए पीले रंग को रंगहीन (99 प्रतिशत) करने में लगभग 240 मनट लगते हैं। इसके अतिरिक्त, वस्त्र उद्योग के अप शष्ट जल से काफी मात्रा में टीएसएस (लगभग 75 प्रतिशत) और टीडीएस (लगभग 80 प्रतिशत) भी निकाल दिए जाते हैं। इसके लए इलेक्ट्रोके मकल और फोटोकैट लटिक डग्रेडेशन प्र क्रया का एकीकरण किया गया है।

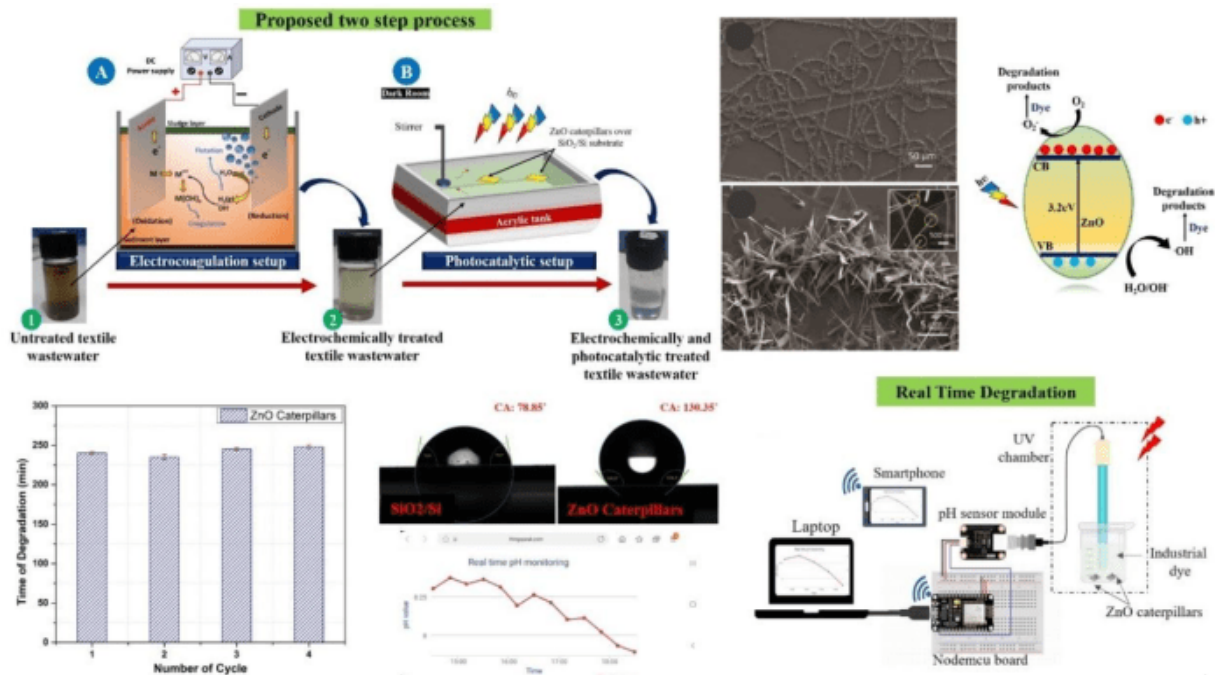
(इं डया साइंस वायर)





कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन की नई पद्धति

By Navyug Sandesh -27/01/2023



नई दिल्ली, 27 जनवरी (इंडिया साइंस वायर): कपड़ा उद्योग से उत्सर्जित कृत्रिम रंगों की वस्तुतः श्रृंखला मानव और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकती है। इसी लिए, कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन के लिए नवीन उपचार तकनीकों की आवश्यकता है, जिससे अप शष्ट जल में डाई अणुओं को पूरी तरह नष्ट किया जा सके। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर के शोधकर्ताओं ने अप शष्ट जल-शोधन की दो-चरणीय नई पद्धति विकसित की है, जिससे कपड़ा उद्योग से निकले रंगीन अप शष्ट जल का शोधन कर सकते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस तरह उपचारित जल का अन्य उद्देश्यों के लिए पुनः उपयोग किया जा सकता है।

अप शष्ट जल-शोधन के पहले चरण में दूषित जल का इलेक्ट्रोकेमिकल पद्धति से प्रसंस्करण किया जाता है। जल-शोधन के दूसरे चरण में कार्बन नैनोफाइबर पर नये ZnO कैटर पलर के उपयोग से वास्तविक समय में फोटोकैटलिटिक निम्नीकरण किया जाता है। आईआईटी जोधपुर के अध्ययन में यह पद्धति प्रदूषकों का पूर्ण रूप से क्षरण करने में सक्षम पायी गई है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अप शष्ट जल को दो चरणों में उपचारित करने से प्रक्रिया की जटिलताएं कम हो जाती हैं, और कोई द्वितीयक प्रदूषण नहीं होता।

आईआईटी जोधपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के शोधकर्ता डॉ अंकुर गुप्ता ने अपने शोध छात्र गुलशन वर्मा एवं प्रंस कुमार राय के साथ-साथ कार्लजूए इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जर्मनी के प्रोफेसर जॉन गेरिट कोर वंक तथा डॉ मौसुर इस्लाम के सहयोग से यह अध्ययन किया है। उन्होंने कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल को प्राकृतिक जल निकायों में छोड़ने से पहले उपचार के लिए इस दो-चरणीय प्रक्रिया का पता लगाया है। उनके द्वारा किया गया यह अध्ययन शोध-पत्रिका मैटेरियल साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रकाशित किया गया है।

डॉ अंकुर गुप्ता ने कहते हैं, “दूषित जल से जुड़ी समस्या को दूर करने की आवश्यकता बढ़ रही है, जो मुख्य रूप से स्टील और कपड़ा उद्योगों से होने वाले उत्सर्जन का परिणाम है। वस्त्र उद्योगों से निकलने वाले अप शष्ट में पाये जाने वाले दूषित पदार्थों में अपघटनीय जैविक तत्व, भारी धातुएं, रंजक, रासायनिक एजेंट और पीएच-नियंत्रित रसायन शामिल रहते हैं। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर अप शष्ट जल के दुष्प्रभावों को देखते हुए, हमें इसको पुनर्चक्रित करने; और जहाँ तक संभव हो परिशोधित जल के पुनः उपयोग को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।”

कपड़ा उद्योग, जल संसाधनों के प्रमुख उपभोक्ताओं में से एक है, जो वर्षाकाल में गकों, मैलेपन, रंगों की प्रचुरता, अकार्बनिक एवं कार्बनिक तत्वों से युक्त अप शष्ट जल का उत्पादन करते हैं। कपड़ा उद्योगों से निकले अप शष्ट जल की संरचना में व्यापक भिन्नता के कारण अधिकांश पारंपरिक प्रक्रियाएं (वर्षा, आयन एक्सचेंज, झल्ली फ़ल्टरिंग आदि) अप्रभावी साबित हो रही हैं। इस लिए, इस समस्या से निजात पाने के लिए वैकल्पिक समाधान की जरूरत है।

नई एकीकृत प्रक्रिया वास्तविक वस्त्र नमूनों में मौजूद कठोर रंगों के प्रभावी निम्नीकरण के साथ-साथ उच्च कार्बनिक पदार्थों को हटाने की दक्षता प्रदान करती है। कुशल निर्माण प्रक्रिया के उपयोग से ZnO कैटर पलर पैदा किया जाता है, जो वाष्प-तरल-ठोस बंधन से सलकॉन सबस्ट्रेट



पर कार्बन नैनोफाइबर पर वक सत होते हैं। आईओटी तकनीक से वस्त्र उद्योग के अप शष्ट जल निम्नीकरण की रियल टाइम निगरानी की जाती है। एक नोड एमसीयू माइक्रो-कंट्रोलर बोर्ड और पीएच सेंसर को एकीकृत करके इस प्रक्रिया को अंजाम दिया जाता है।

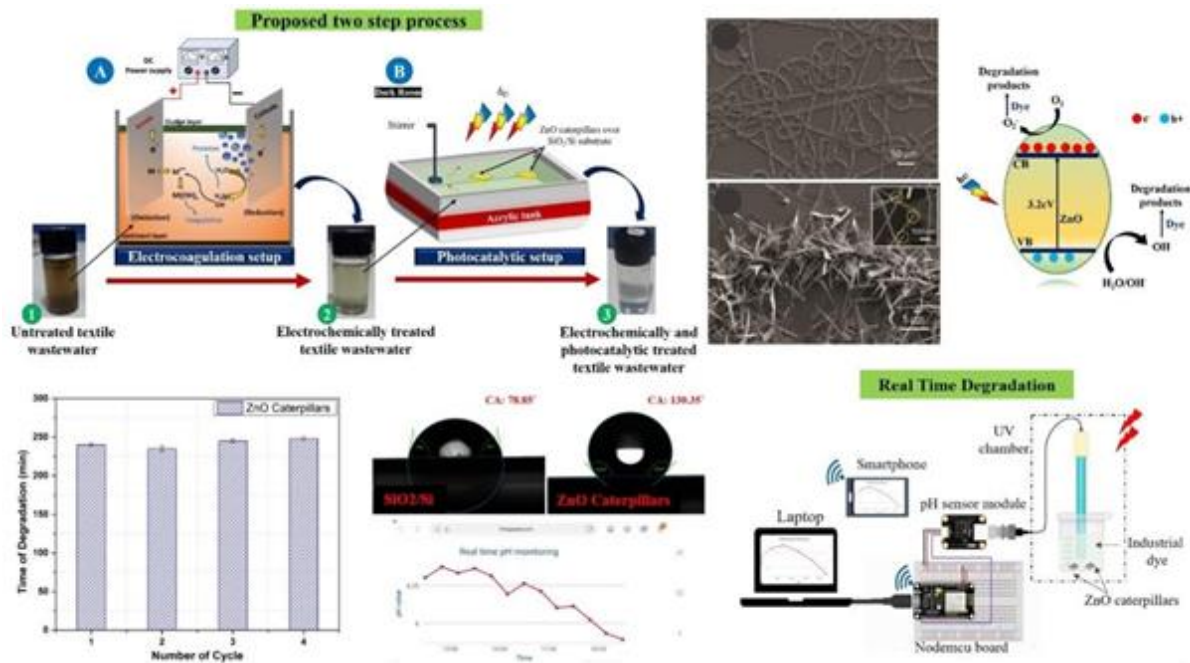
फोटो-कैटे लटिक डकलराइजेशन की प्रक्रिया से हरापन लए पीले रंग को रंगहीन (99 प्रतिशत) करने में लगभग 240 मिनट लगते हैं। इसके अतिरिक्त, वस्त्र उद्योग के अप शष्ट जल से काफी मात्रा में टीएसएस (लगभग 75 प्रतिशत) और टीडीएस (लगभग 80 प्रतिशत) भी निकाल दिए जाते हैं। इसके लए इलेक्ट्रोके मकल और फोटोकैट लटिक डग्रेडेशन प्रक्रिया का एकीकरण कया गया है।

- इं डया साइंस वायर



कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन की नई पद्धति

28/01/2023 V3news India



नई दिल्ली, 28 जनवरी (इंडिया साइंस वायर): कपड़ा उद्योग से उत्सर्जित कृत्रिम रंगों की वस्तुतः श्रृंखला मानव और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकती है। इसी लए, कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन के लए नवीन उपचार तकनीकों की आवश्यकता है, जिससे अप शष्ट जल में डाई अणुओं को पूरी तरह नष्ट किया जा सके। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर के शोधकर्ताओं ने अप शष्ट जल-शोधन की दो-चरणीय नई पद्धति विकसित की है, जिससे कपड़ा उद्योग से निकले रंगीन अप शष्ट जल का शोधन कर सकते हैं।

शोधकर्ताओं का कहना है कि इस तरह उपचारित जल का अन्य उद्देश्यों के लए पुनः उपयोग किया जा सकता है। अप शष्ट जल-शोधन के पहले चरण में दूषित जल का इलेक्ट्रोकेमिकल पद्धति से प्रसंस्करण किया जाता है। जल-शोधन के दूसरे चरण में कार्बन नैनोफाइबर पर नये

ZnO कैटर पलर के उपयोग से वास्तवक समय में फोटोकैट लटिक निम्नीकरण किया जाता है। आईआईटी जोधपुर के अध्ययन में यह पद्धति प्रदूषकों का पूर्ण रूप से क्षरण करने में सक्षम पायी गई है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अपशुद्ध जल को दो चरणों में उपचारित करने से प्रक्रिया की जटिलताएं कम हो जाती हैं, और कोई द्वितीयक प्रदूषण नहीं होता।

आईआईटी जोधपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के शोधकर्ता डॉ अंकुर गुप्ता ने अपने शोध छात्र गुलशन वर्मा एवं प्रंस कुमार राय के साथ-साथ कार्लजूए इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जर्मनी के प्रोफेसर जॉन गेरिट कोर वंक तथा डॉ मॉसुर इस्लाम के सहयोग से यह अध्ययन किया है। उन्होंने कपड़ा उद्योग से निकले अपशुद्ध जल को प्राकृतिक जल निकायों में छोड़ने से पहले उपचार के लिए इस दो-चरणीय प्रक्रिया का पता लगाया है। उनके द्वारा किया गया यह अध्ययन शोध पत्रिका मैटेरियल साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रकाशित किया गया है।

डॉ अंकुर गुप्ता ने कहते हैं, दूषित जल से जुड़ी समस्या को दूर करने की आवश्यकता बढ़ रही है, जो मुख्य रूप से स्टील और कपड़ा उद्योगों से होने वाले उत्सर्जन का परिणाम है। वस्त्र उद्योगों से निकलने वाले अपशुद्ध में पाये जाने वाले दूषित पदार्थों में अपघटनीय जैविक तत्व, भारी धातुएं, रंजक, रासायनिक एजेंट और पीएच-नियंत्रित रसायन शामिल रहते हैं। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर अपशुद्ध जल के दुष्प्रभावों को देखते हुए, हमें इसको पुनर्चक्रित करने; और जहाँ तक संभव हो परिशोधित जल के पुनः उपयोग को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।

कपड़ा उद्योग, जल संसाधनों के प्रमुख उपभोक्ताओं में से एक है, जो वषाक्त यौगकों, मैलेपन, रंगों की प्रचुरता, अकार्बनिक एवं कार्बनिक तत्वों से युक्त अपशुद्ध जल का उत्पादन करते हैं। कपड़ा उद्योगों से निकले अपशुद्ध जल की संरचना में व्यापक भिन्नता के कारण अधिकांश पारंपरिक प्रक्रियाएं (वर्षा, आयन एक्सचेंज, झल्ली फ़ल्टरिंग आदि) अप्रभावी साबित हो रही हैं। इस लिए, इस समस्या से निजात पाने के लिए वैकल्पिक समाधान की जरूरत है।

नई एकीकृत प्रक्रिया वास्तविक वस्त्र नमूनों में मौजूद कठोर रंगों के प्रभावी निम्नीकरण के साथ-साथ उच्च कार्बनिक पदार्थों को हटाने की क्षमता प्रदान करती है। कुशल निर्माण प्रक्रिया के उपयोग से ZnO कैटर पलर पैदा किया जाता है, जो वाष्प-तरल-ठोस बंध से सलकॉन सबस्ट्रेट पर कार्बन नैनोफाइबर पर बसते होते हैं। आईआईटी तकनीक से वस्त्र उद्योग कअपशुद्ध जल



निम्नीकरण की रियल टाइम निगरानी की जाती है। एक नोड एमसीयू माइक्रो- कंट्रोलर बोर्ड और पीएच सेंसर को एकीकृत करके इस प्रक्रिया को अंजाम दिया जाता है।

फोटो-कैटे लटिक डकलराइजेशन की प्रक्रिया से हरापन लए पीले रंग को रंगहीन (99 प्रतिशत) करने में लगभग 240 मिनट लगते हैं। इसके अतिरिक्त, वस्त्र उद्योग के अप शष्ट जल से काफी मात्रा में टीएसएस (लगभग 75 प्रतिशत) और टीडीएस (लगभग 80 प्रतिशत) भी निकाल दिए जाते हैं। इसके लए इलेक्ट्रोकेमिकल और फोटोकैट लटिक डग्रेडेशन प्रक्रिया का एकीकरण किया गया है।



कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन की नई पद्धति

January 28, 2023 by Dialogue India

नई दिल्ली, 27 जनवरी (इंडिया साइंस वायर): कपड़ा उद्योग से उत्सर्जित कृत्रिम रंगों की वस्तुतः श्रृंखला मानव और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को खतरे में डाल सकती है। इसी लिए, कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल के शोधन के लिए नवीन उपचार तकनीकों की आवश्यकता है, जिससे अप शष्ट जल में डाई अणुओं को पूरी तरह नष्ट किया जा सके। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) जोधपुर के शोधकर्ताओं ने अप शष्ट जल-शोधन की दो-चरणीय नई पद्धति विकसित की है, जिससे कपड़ा उद्योग से निकले रंगीन अप शष्ट जल का शोधन कर सकते हैं। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस तरह उपचारित जल का अन्य उद्देश्यों के लिए पुनः उपयोग किया जा सकता है। अप शष्ट जल-शोधन के पहले चरण में दूषित जल का इलेक्ट्रोकेमिकल पद्धति से प्रसंस्करण किया जाता है। जल-शोधन के दूसरे चरण में कार्बन नैनोफाइबर पर नये ZnO कैटर पलर के उपयोग से वास्तविक समय में फोटोकैटलिटिक निम्नीकरण किया जाता है। आईआईटी जोधपुर के अध्ययन में यह पद्धति प्रदूषकों का पूर्ण रूप से क्षरण करने में सक्षम पायी गई है। शोधकर्ताओं का कहना है कि अप शष्ट जल को दो चरणों में उपचारित करने से प्रक्रिया की जटिलताएं कम हो जाती हैं, और कोई द्वितीयक प्रदूषण नहीं होता। आईआईटी जोधपुर के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के शोधकर्ता डॉ अंकुर गुप्ता ने अपने शोध छात्र गुलशन वर्मा एवं प्रंस कुमार राय के साथ-साथ कार्लज़ूए इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, जर्मनी के प्रोफेसर जॉन गेरिट कोर वंक तथा डॉ मोंसुर इस्लाम के सहयोग से यह अध्ययन किया है। उन्होंने कपड़ा उद्योग से निकले अप शष्ट जल को प्राकृतिक जल निकायों में छोड़ने से पहले उपचार के लिए इस दो-चरणीय प्रक्रिया का पता लगाया है। उनके द्वारा किया गया यह अध्ययन शोध-पत्रिका मैटेरियल साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रकाशित किया गया है।

डॉ अंकुर गुप्ता ने कहते हैं, “दूषित जल से जुड़ी समस्या को दूर करने की आवश्यकता बढ़ रही है, जो मुख्य रूप से स्टील और कपड़ा उद्योगों से होने वाले उत्सर्जन का परिणाम है। वस्त्र



उद्योगों से निकलने वाले अपशुष्क में पाये जाने वाले दूषित पदार्थों में अपघटनीय जैविक तत्व, भारी धातुएं, रंजक, रासायनिक एजेंट और पीएच-नियंत्रित रसायन शामिल रहते हैं। मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर अपशुष्क जल के दुष्प्रभावों को देखते हुए, हमें इसको पुनर्चक्रित करने; और जहाँ तक संभव हो परिशोधित जल के पुनः उपयोग को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है।”

कपड़ा उद्योग, जल संसाधनों के प्रमुख उपभोक्ताओं में से एक है, जो वर्षाकृत यौगकों, मैलेपन, रंगों की प्रचुरता, अकार्बनिक एवं कार्बनिक तत्वों से युक्त अपशुष्क जल का उत्पादन करते हैं। कपड़ा उद्योगों से निकले अपशुष्क जल की संरचना में व्यापक भिन्नता के कारण अधिकांश पारंपरिक प्रक्रियाएं (वर्षा, आयन एक्सचेंज, झल्ली फ़ल्टरिंग आदि) अप्रभावी

साबित हो रही हैं। इसलिए, इस समस्या से निजात पाने के लिए वैकल्पिक समाधान की जरूरत है। नई एकीकृत प्रक्रिया वास्तविक वस्त्र नमूनों में मौजूद कठोर रंगों के प्रभावी निम्नीकरण के साथ-साथ उच्च कार्बनिक पदार्थों को हटाने की दक्षता प्रदान करती है। कुशल निर्माण प्रक्रिया के उपयोग से ZnO कैटर पलर पैदा किया जाता है, जो वाष्प-तरल-ठोस बंधन से सलफोन सबस्ट्रेट पर कार्बन नैनोफाइबर पर बसते होते हैं। आईओटी तकनीक से वस्त्र उद्योग के अपशुष्क जल निम्नीकरण की रियल टाइम निगरानी की जाती है। एक नोड एमसीयू माइक्रो-कंट्रोलर बोर्ड और पीएच सेंसर को एकीकृत करके इस प्रक्रिया को अंजाम दिया जाता है। फोटो-कैटेलिटिक डिकलराइजेशन की प्रक्रिया से हरापन लिए पीले रंग को रंगहीन (99 प्रतिशत) करने में लगभग 240 मिनट लगते हैं। इसके अतिरिक्त, वस्त्र उद्योग के अपशुष्क जल से काफी मात्रा में टीएसएस (लगभग 75 प्रतिशत) और टीडीएस (लगभग 80 प्रतिशत) भी निकाल दिए जाते हैं। इसके लिए इलेक्ट्रोकेमिकल और फोटोकैटलिटिक डेग्रेडेशन प्रक्रिया का एकीकरण किया गया है।





देसी नस्ल की गायों के ड्राफ्ट जीनोम का खुलासा



इंडिया साइंस वायर | Jan 31, 2023 5:57PM

देसी भारतीय गायों में विशेष क्षमताएं होती हैं, जो उन्हें कठिन परिस्थितियों से अनुकूलन स्थापित करने में मदद करती हैं, इनमें खराब गुणवत्ता वाले भोजन को पचाने की क्षमता और बीमारियों के प्रति प्रतिरोधी गुण शामिल हैं।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (आईआईएसईआर), भोपाल के शोधकर्ताओं ने भारतीय गाय की चार देसी नस्लों- कासरगोड बौना, कासरगोड कपला, वेचुर और ऑंगोल के आनुवंशिक गठन का सफलतापूर्वक खुलासा किया है। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस अध्ययन की सहायता से गायों के प्रजनन और प्रबंधन में सुधार के लिए जीनोम संरचना का उपयोग किया जा सकता है, जिससे भारतीय मवेशी उद्योग में उत्पादकता और स्थिरता में वृद्धि हो सकती है।

देसी भारतीय गायों में विशेष क्षमताएं होती हैं, जो उन्हें कठिन परिस्थितियों से अनुकूलन स्थापित करने में मदद करती हैं, इनमें खराब गुणवत्ता वाले भोजन को पचाने की क्षमता और बीमारियों के प्रति प्रतिरोधी गुण शामिल हैं। भारतीय गाय की देसी नस्लों के जीनोम को अनुक्रमित करने से उनके और अन्य नस्लों के बीच आनुवंशिक अंतर को समझने में मदद मिल सकती है, जो भविष्य के अध्ययनों और आनुवंशिक सुधार के लिए एक मूल्यवान संसाधन साबित हो सकता है।

पछले अध्ययनों ने भारतीय गायों के कई लक्षणों को रेखांकित किया है, और पता लगाने का प्रयास किया है कि देसी गायें गर्म मौसम में अपने आकार और दूध की गुणवत्ता को कैसे बनाये रखती हैं। इस अध्ययन में शामिल भारतीय गाय की नस्लों का पूरा जीनोम पहले ज्ञात नहीं था, इसलिए यह समझना मुश्किल था कि उनमें कौन-सी आनुवंशिक विशेषताएं होती हैं।

आईआईएसईआर, भोपाल के शोधकर्ताओं ने भारतीय देसी गाय नस्लों- कासरगोड बौना, कासरगोड कपला, वेचूर और ऑंगोल के जीनोम को पढ़ने और समझने के लिए उच्च-थ्रूपुट अनुक्रमण तकनीकों का उपयोग किया है। ऐसा करने का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि ये गायें भारतीय जलवायु परिस्थितियों के साथ कैसे अनुकूलन स्थापित करती हैं। इस अध्ययन के लिए नमूने कासरगोड इवार्फ कंजर्वेशन सोसाइटी की मदद से केरल स्थित कपला गौशाला से संग्रह किये गए हैं।

आईआईएसईआर, भोपाल के जैविक विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वनीत के. शर्मा कहते हैं, "हमने भारतीय गाय की देसी नस्लों में जीन के एक विशेष सेट की पहचान की है, जिनमें पश्चिमी मवेशी प्रजातियों के जीन्स की तुलना में अनुक्रमिक और संरचनात्मक भिन्नता देखी गई है। यह जानकारी इस बात की बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है कि भारतीय नस्ल की गाय उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों के साथ अनुकूलन कैसे स्थापित करती है।"

इसके अलावा, डॉ. वनीत शर्मा ने कहा है कि "जीनोम अनुक्रमण; इन देसी नस्लों की आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करने में मदद कर सकता है, जो गायों की स्वस्थ और लचीली आबादी को बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण है।"

इस अध्ययन की एक और उल्लेखनीय उपलब्धि दुनिया की सबसे छोटी गाय की नस्ल वेचूर का ड्राफ्ट जीनोम असंबली है। शोधकर्ताओं ने उन जीन्स की भी पहचान की है, जो बौने और गैर-बौने बॉस इंडिकस (*Bos indicus*) मवेशियों की नस्लों में अनुक्रमिक भिन्नता के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। बॉस इंडिकस एक घरेलू मवेशी प्रजाति है, जिसकी भारत में कई स्वदेशी नस्लें



पायी जाती हैं। यह डेयरी, भारवहन और अन्य घरेलू गति व धर्यों के लए महत्वपूर्ण है। ले कन, इस प्रजाति की नस्लों के गठन में व शष्ट अंतर पाये जाते हैं। इन गाय नस्लों के जीनोम अनुक्रम उपलब्ध नहीं थे। इस लए, शोधकर्ताओं ने बोस इंडकस नस्ल की इन चार गाय प्रजातियों के ड्राफ्ट जीनोम असेंबली के निर्माण के लए पूरे जीनोम अनुक्रमण का खुलासा कया है।

जीन नामक छोटी इकाइयों से बनी संरचना जीनोम कहलाती है, जिसमें जीवों के बढ़ने, उनके वक सत होने और ठीक से काम करने के लए आवश्यक जानकारी दर्ज रहती है। जिस तरह एक इमारत के लए एक ब्लू प्रिंट में यह जानकारी होती है क इसे कैसे बनाया जाए, जीनोम में वह सभी जानकारी होती है, जो कसी जीव को जी वत रहने के लए आवश्यक है। जीनोम को समझकर, वैज्ञानिक जीवों अथवा पौधों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकारीयां बीमारियों से लड़ने और पौधों तथा मवेश्यों की नस्लों में सुधार में भूमिका निभाती हैं।

यह अध्ययन प्री प्रिंट सर्वर बायोआरएक्सआईवी में प्रकाशत कया गया है। अध्ययन के शोधकर्ताओं में डॉ वनीत के. शर्मा, अ भषेक चक्रवर्ती, मनोहर एस. बिष्ट, डॉ रितुजा सक्सेना, श्रुति महाजन और डॉ जॉबी पु लकन शा मल हैं। आईआईएसईआर, भोपाल के वक्तव्य में दावा कया गया है क यह पहली बार है क इन चार भारतीय गायों के जीनोम को अनुक्रमत कया गया है।

(इंडया साइंस वायर)



देसी नस्ल की गायों के ड्राफ्ट जीनोम का भारतीय वैज्ञानिकों ने क्या खुलासा

जनवरी 30, 2023 इंडिया साइंस वायर (आईएसडब्ल्यू)

आईआईएसईआर भोपाल के शोधकर्ताओं ने देसी नस्ल की गायों के ड्राफ्ट जीनोम का क्या खुलासा

नई दिल्ली, 30 जनवरी (इंडिया साइंस वायर): इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (Indian Institute of Science Education and Research आईआईएसईआर), भोपाल के शोधकर्ताओं ने भारतीय गाय की चार देसी नस्लों - कासरगोड बौना, कासरगोड क पला, वेचुर और ऑंगोल के आनुवंशिक गठन का सफलतापूर्वक खुलासा किया है।

गायों के प्रजनन और प्रबंधन में सुधार में हो सकता है नए शोध का उपयोग

IISER Bhopal के शोधकर्ताओं का कहना है कि इस अध्ययन की सहायता से गायों के प्रजनन और प्रबंधन में सुधार के लिए जीनोम संरचना (Draft genome) का उपयोग किया जा सकता है, जिससे भारतीय मवेशी उद्योग में उत्पादकता और स्थिरता में वृद्धि हो सकती है।

देसी नस्ल की भारतीय गायों की विशेष क्षमताएं क्या हैं?

देसी भारतीय गायों (cow breeds) में विशेष क्षमताएं होती हैं, जो उन्हें कठिन परिस्थितियों से अनुकूलन स्थापित करने में मदद करती हैं, इनमें खराब गुणवत्ता वाले भोजन को पचाने की क्षमता और बीमारियों के प्रति प्रतिरोधी गुण शामिल हैं।

भारतीय गाय की देसी नस्लों के जीनोम को अनुक्रमित करने से उनके और अन्य नस्लों के बीच आनुवंशिक अंतर को समझने में मदद मिल सकती है, जो भविष्य के अध्ययनों और आनुवंशिक सुधार के लिए एक मूल्यवान संसाधन साबित हो सकता है।



पछले अध्ययनों ने भारतीय गायों के कई लक्षणों को रेखांकित किया है, और पता लगाने का प्रयास किया है कि देसी गायें गर्म मौसम में अपने आकार और दूध की गुणवत्ता को कैसे बनाये रखती हैं।

इस अध्ययन में शामिल भारतीय गाय की नस्लों का पूरा जीनोम पहले ज्ञात नहीं था, इसलिए यह समझना मुश्किल था कि उनमें कौन-सी आनुवंशिक विशेषताएँ होती हैं।

आईआईएसईआर, भोपाल के शोधकर्ताओं ने भारतीय देसी गाय नस्लों - कासरगोड बौना, कासरगोड कपला, वेचूर और ऑंगोल के जीनोम को पढ़ने और समझने के लिए उच्च-श्रुट अनुक्रमण तकनीकों का उपयोग किया है। ऐसा करने का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि ये गायें भारतीय जलवायु परिस्थितियों के साथ कैसे अनुकूलन स्थापित करती हैं। इस अध्ययन के लिए नमूने कासरगोड इवार्फ कंजर्वेशन सोसाइटी की मदद से केरल स्थित कपला गौशाला से संग्रह किये गए हैं।

आईआईएसईआर, भोपाल के जैविक विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वनीत के. शर्मा कहते हैं, “हमने भारतीय गाय की देसी नस्लों में जीन के एक विशेष सेट की पहचान की है, जिनमें पश्चिमी मवेशी प्रजातियों के जीन्स की तुलना में अनुक्रमिक और संरचनात्मक भिन्नता देखी गई है। यह जानकारी इस बात की बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है कि भारतीय नस्ल की गाय उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों के साथ अनुकूलन कैसे स्थापित करती है।”

इसके अलावा, डॉ. वनीत शर्मा ने कहा है कि “जीनोम अनुक्रमण; इन देसी नस्लों की आनुवंशिक विशेषता को संरक्षित करने में मदद कर सकता है, जो गायों की स्वस्थ और लचीली आबादी को बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण है।”

इस अध्ययन की एक और उल्लेखनीय उपलब्धि दुनिया की सबसे छोटी गाय की नस्ल वेचूर का ड्राफ्ट जीनोम असंबली है। शोधकर्ताओं ने उन जीन्स की भी पहचान की है, जो बौने और गैर-बौने बस इंडिकस (*Bos indicus*) मवेशियों की नस्लों में अनुक्रमिक भिन्नता के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। बस इंडिकस एक घरेलू मवेशी प्रजाति है, जिसकी भारत में कई स्वदेशी नस्लें पायी जाती हैं। यह डेयरी, भारवहन और अन्य घरेलू गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण है। लेकिन, इस प्रजाति की नस्लों के गठन में विशेष अंतर पाये जाते हैं। इन गाय नस्लों के जीनोम अनुक्रम उपलब्ध नहीं थे। इसलिए, शोधकर्ताओं ने बस इंडिकस नस्ल की इन चार गाय



प्रजातियों के ड्राफ्ट जीनोम असेंबली के निर्माण के लिए पूरे जीनोम अनुक्रमण का खुलासा किया है।

जीनोम क्या होता है?

जीन नामक छोटी इकाइयों से बनी संरचना जीनोम कहलाती है, जिसमें जीवों के बढ़ने, उनके विकास होने और ठीक से काम करने के लिए आवश्यक जानकारी दर्ज रहती है। जिस तरह एक इमारत के लिए एक ब्लू प्रिंट में यह जानकारी होती है कि इसे कैसे बनाया जाए, जीनोम में वह सभी जानकारी होती है, जो किसी जीव को जीवित रहने के लिए आवश्यक है। जीनोम को समझकर, वैज्ञानिक जीवों अथवा पौधों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकारियां बीमारियों से लड़ने और पौधों तथा मवेशियों की नस्लों में सुधार में भूमिका निभाती हैं।

यह अध्ययन प्री प्रिंट सर्वर बायोआरएक्सआईवी में प्रकाशित किया गया है। अध्ययन के शोधकर्ताओं में डॉ. वनीत के. शर्मा, अभिषेक चक्रवर्ती, मनोहर एस. बिष्ट, डॉ. रितुजा सक्सेना, श्रुति महाजन और डॉ. जॉबी पुलकन शामिल हैं। आईआईएसईआर, भोपाल के वक्तव्य में दावा किया गया है कि यह पहली बार है कि इन चार भारतीय गायों के जीनोम को अनुक्रमित किया गया है। (इंडिया साइंस वायर)





देसी नस्ल की गायों के ड्राफ्ट जीनोम का खुलासा

By Navvug Sandesh -30/01/2023



नई दिल्ली, 30 जनवरी (इंडिया साइंस वायर): इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (आईआईएसईआर), भोपाल के शोधकर्ताओं ने भारतीय गाय की चार देसी नस्लों - कासरगोड बौना, कासरगोड क पला, वेचुर और ऑंगोल के आनुवंशिक गठन का सफलतापूर्वक खुलासा किया है। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस अध्ययन की सहायता से गायों के प्रजनन और प्रबंधन में सुधार के लिए जीनोम संरचना का उपयोग किया जा सकता है, जिससे भारतीय मवेशी उद्योग में उत्पादकता और स्थिरता में वृद्धि हो सकती है।

देसी भारतीय गायों में विशेष क्षमताएं होती हैं, जो उन्हें कठिन परिस्थितियों से अनुकूलन स्थापित करने में मदद करती हैं, इनमें खराब गुणवत्ता वाले भोजन को पचाने की क्षमता और



बीमारियों के प्रति प्रतिरोधी गुण शामिल हैं। भारतीय गाय की देसी नस्लों के जीनोम को अनुक्रमित करने से उनके और अन्य नस्लों के बीच आनुवंशिक अंतर को समझने में मदद मिल सकती है, जो भविष्य के अध्ययनों और आनुवंशिक सुधार के लिए एक मूल्यवान संसाधन साबित हो सकता है।

पछले अध्ययनों ने भारतीय गायों के कई लक्षणों को रेखांकित किया है, और पता लगाने का प्रयास किया है कि देसी गायें गर्म मौसम में अपने आकार और दूध की गुणवत्ता को कैसे बनाये रखती हैं। इस अध्ययन में शामिल भारतीय गाय की नस्लों का पूरा जीनोम पहले ज्ञात नहीं था, इसलिए यह समझना मुश्किल था कि उनमें कौन-सी आनुवंशिक विशेषताएं होती हैं।

आईआईएसईआर, भोपाल के शोधकर्ताओं ने भारतीय देसी गाय नस्लों - कासरगोड बौना, कासरगोड कपला, वेचुर और ऑंगोल के जीनोम को पढ़ने और समझने के लिए उच्च-थ्रूपुट अनुक्रमण तकनीकों का उपयोग किया है। ऐसा करने का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि ये गायें भारतीय जलवायु परिस्थितियों के साथ कैसे अनुकूलन स्थापित करती हैं। इस अध्ययन के लिए नमूने कासरगोड इवार्फ कंजर्वेशन सोसाइटी की मदद से केरल स्थित कपला गौशाला से संग्रह किये गए हैं।

आईआईएसईआर, भोपाल के जैविक विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वनीत के. शर्मा कहते हैं, “हमने भारतीय गाय की देसी नस्लों में जीन के एक विशेष सेट की पहचान की है, जिनमें पश्चिमी मवेशी प्रजातियों के जीन्स की तुलना में अनुक्रमिक और संरचनात्मक भिन्नता देखी गई है। यह जानकारी इस बात की बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है कि भारतीय नस्ल की गाय उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों के साथ अनुकूलन कैसे स्थापित करती है।”

इसके अलावा, डॉ. वनीत शर्मा ने कहा है कि “जीनोम अनुक्रमण; इन देसी नस्लों की आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करने में मदद कर सकता है, जो गायों की स्वस्थ और लचीली आबादी को बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण है।” इस अध्ययन की एक और उल्लेखनीय उपलब्धि दुनिया की सबसे छोटी गाय की नस्ल वेचुर का ड्राफ्ट जीनोम असंबली है। शोधकर्ताओं ने उन जीन्स की भी पहचान की है, जो बौने और गैर-बौने बस इंडिकस (*Bos indicus*) मवेशियों की नस्लों में अनुक्रमिक भिन्नता के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। बस इंडिकस एक घरेलू मवेशी प्रजाति है, जिसकी भारत में कई स्वदेशी नस्लें पायी जाती हैं। यह डेयरी, भारवहन और अन्य घरेलू गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण है। लेकिन,



इस प्रजाति की नस्लों के गठन में व शष्ट अंतर पाये जाते हैं। इन गाय नस्लों के जीनोम अनुक्रम उपलब्ध नहीं थे। इस लए, शोधकर्ताओं ने बोस इंडकस नस्ल की इन चार गाय प्रजातियों के ड्राफ्ट जीनोम असेंबली के निर्माण के लए पूरे जीनोम अनुक्रमण का खुलासा कया है।

जीन नामक छोटी इकाइयों से बनी संरचना जीनोम कहलाती है, जिसमें जीवों के बढ़ने, उनके वक सत होने और ठीक से काम करने के लए आवश्यक जानकारी दर्ज रहती है। जिस तरह एक इमारत के लए एक ब्लू प्रिंट में यह जानकारी होती है क इसे कैसे बनाया जाए, जीनोम में वह सभी जानकारी होती है, जो कसी जीव को जी वत रहने के लए आवश्यक है। जीनोम को समझकर, वैज्ञानिक जीवों अथवा पौधों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकारियां बीमारियों से लड़ने और पौधों तथा मवेशयों की नस्लों में सुधार में भूमका निभाती हैं।

यह अध्ययन प्री प्रिंट सर्वर बायोआरएक्सआईवी में प्रका शत कया गया है। अध्ययन के शोधकर्ताओं में डॉ वनीत के. शर्मा, अभषेक चक्रवर्ती, मनोहर एस. बिष्ट, डॉ रितुजा सक्सेना, श्रुति महाजन और डॉ जॉबी पु लकन शा मल हैं। आईआईएसईआर, भोपाल के वक्तव्य में दावा कया गया है क यह पहली बार है क इन चार भारतीय गायों के जीनोम को अनुक्रम त कया गया है। (इंडया साइंस वायर)



नई दिल्ली। देसी नस्ल की गायों के ड्राफ्ट जीनोम का खुलासा।

News जनवरी 31, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली। (इंडिया साइंस वायर): इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (आईआईएसईआर), भोपाल के शोधकर्ताओं ने भारतीय गाय की चार देसी नस्लों - कासरगोड बौना, कासरगोड क पला, वेचुर और ओंगोल के आनुवंशिक गठन का सफलतापूर्वक खुलासा किया है। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस अध्ययन की सहायता से गायों के प्रजनन और प्रबंधन में सुधार के लिए जीनोम संरचना का उपयोग किया जा सकता है, जिससे भारतीय मवेशी उद्योग में उत्पादकता और स्थिरता में वृद्धि हो सकती है।

देसी भारतीय गायों में विशेष क्षमताएं होती हैं, जो उन्हें कठिन परिस्थितियों से अनुकूलन स्थापित करने में मदद करती हैं, इनमें खराब गुणवत्ता वाले भोजन को पचाने की क्षमता और बीमारियों के प्रति प्रतिरोधी गुण शामिल हैं। भारतीय गाय की देसी नस्लों के जीनोम को अनुक्रमित करने से उनके और अन्य नस्लों के बीच आनुवंशिक अंतर को समझने में मदद मिल सकती है, जो भविष्य के अध्ययनों और आनुवंशिक सुधार के लिए एक मूल्यवान संसाधन साबित हो सकता है।





आईआईएसईआर, भोपाल के शोधकर्ताओं की टीम

पछले अध्ययनों ने भारतीय गायों के कई लक्षणों को रेखांकित किया है, और पता लगाने का प्रयास किया है कि देसी गायें गर्म मौसम में अपने आकार और दूध की गुणवत्ता को कैसे बनाये रखती हैं। इस अध्ययन में शामिल भारतीय गाय की नस्लों का पूरा जीनोम पहले ज्ञात नहीं था, इसलिए यह समझना मुश्किल था कि उनमें कौन-सी आनुवंशिक विशेषताएं होती हैं।

आईआईएसईआर, भोपाल के शोधकर्ताओं ने भारतीय देसी गाय नस्लों - कासरगोड बौना, कासरगोड कपला, वेचुर और आंगोल के जीनोम को पढ़ने और समझने के लिए उच्च-थ्रूपुट अनुक्रमण तकनीकों का उपयोग किया है। ऐसा करने का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना था कि ये गायें भारतीय जलवायु परिस्थितियों के साथ कैसे अनुकूलन स्थापित करती हैं। इस अध्ययन के लिए नमूने कासरगोड इवार्फ कंजर्वेशन सोसाइटी की मदद से केरल स्थित कपला गौशाला से संग्रह किये गए हैं।

आईआईएसईआर, भोपाल के जैविक विज्ञान विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वनीत के. शर्मा कहते हैं, "हमने भारतीय गाय की देसी नस्लों में जीन के एक विशेष सेट की पहचान की है, जिनमें पश्चिमी मवेशी प्रजातियों के जीन्स की तुलना में अनुक्रमिक और संरचनात्मक भिन्नता

देखी गई है। यह जानकारी इस बात की बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है क भारतीय नस्ल की गाय उष्णकटिबंधीय परिस्थितियों के साथ अनुकूलन कैसे स्थापित करती है।”

इसके अलावा, डॉ. वनीत शर्मा ने कहा है क "जीनोम अनुक्रमण; इन देसी नस्लों की आनुवंशिक विविधता को संरक्षित करने में मदद कर सकता है, जो गायों की स्वस्थ और लचीली आबादी को बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण है।"

इस अध्ययन की एक और उल्लेखनीय उपलब्धि दुनिया की सबसे छोटी गाय की नस्ल वेचूर का ड्राफ्ट जीनोम असंबली है। शोधकर्ताओं ने उन जीन्स की भी पहचान की है, जो बौने और गैर-बौने बोकस इंडिकस (*Bos indicus*) मवेशियों की नस्लों में अनुक्रमिक भिन्नता के लिए जिम्मेदार माने जाते हैं। बोकस इंडिकस एक घरेलू मवेशी प्रजाति है, जिसकी भारत में कई स्वदेशी नस्लें पायी जाती हैं। यह डेयरी, भारवहन और अन्य घरेलू गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण है। लेकिन, इस प्रजाति की नस्लों के गठन में विशिष्ट अंतर पाये जाते हैं। इन गाय नस्लों के जीनोम अनुक्रम उपलब्ध नहीं थे। इस लिए, शोधकर्ताओं ने बोकस इंडिकस नस्ल की इन चार गाय प्रजातियों के ड्राफ्ट जीनोम असंबली के निर्माण के लिए पूरे जीनोम अनुक्रमण का खुलासा किया है।

जीन नामक छोटी इकाइयों से बनी संरचना जीनोम कहलाती है, जिसमें जीवों के बढ़ने, उनके विकास होने और ठीक से काम करने के लिए आवश्यक जानकारी दर्ज रहती है। जिस तरह एक इमारत के लिए एक ब्लूप्रिंट में यह जानकारी होती है क इसे कैसे बनाया जाए, जीनोम में वह सभी जानकारी होती है, जो किसी जीव को जीवित रहने के लिए आवश्यक है। जीनोम को समझकर, वैज्ञानिक जीवों अथवा पौधों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकारी बीमारियों से लड़ने और पौधों तथा मवेशियों की नस्लों में सुधार में भूमिका निभाती है।

यह अध्ययन प्री प्रिंट सर्वर बायोआरएक्सआईवी में प्रकाशित किया गया है। अध्ययन के शोधकर्ताओं में डॉ वनीत के. शर्मा, अभिषेक चक्रवर्ती, मनोहर एस. बिष्ट, डॉ रितुजा सक्सेना, श्रुति महाजन और डॉ जॉबी पुलकन शामिल हैं। आईआईएसईआर, भोपाल के वक्तव्य में दावा किया गया है क यह पहली बार है क इन चार भारतीय गायों के जीनोम को अनुक्रमित किया गया है।

(इंडिया साइंस वायर)



दो वर्षों में भारत ने वक सत कए चार स्वदेशी कोराना वैक्सीन

by [admin](#) February 1, 20230



नयी दिल्ली।:भारतीय वैज्ञानिकों को दो वर्षों के बीच में को वड-19 के चार स्वदेशी टीके वक सत करने में सफलता मली है। इनमें वश्व का पहला व भारत का स्वदेशी रूप से वक सत डीएनए टीका-जायकोव-डी, भारत का पहला प्रोटीन सबयूनिट टीका-कॉर्बेवैक्स, वश्व का पहला एवं भारत का स्वदेशी रूप से वक सत एमआरएनए टीका-जेमकोवैक-19 और वश्व का पहला तथा भारत में स्वदेशी रूप से वक सत इंटरनेजल टीका इन्कोवैक शा मल है।

वैक्सीन के विकास के लिए ढांचा तैयार

यह जानकारी देते हुए केंद्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सक्षम मार्गदर्शन और नेतृत्व में जैव प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) ने 'मशन को वड सुरक्षा' के माध्यम से चार टीके वितरित किए हैं और कोवैक्सिन के निर्माण को बढ़ाने की पहल की है। इन टीकों को विभिन्न पक्षों के सहयोग से विकसित किया गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भविष्य में टीकों के सुचारु विकास के लिए डीबीटी ने जरूरी बुनियादी ढाँचे का निर्माण किया है, जिससे महामारी की स्थिति का सामना करने में मदद मिलेगी। भारत बायोटेक द्वारा निर्मित इंटरनेशनल टीका इन्कोवैक को हाल में लॉन्च किया गया है।

900 करोड़ से 'मशन को वड सुरक्षा'

डॉ. जितेंद्र सिंह ने बताया कि सरकार ने आत्मनिर्भर भारत 3.0 पैकेज के तहत कुल 900 रुपये की लागत से "मशन को वड सुरक्षा" की घोषणा की थी। मशन को वड सुरक्षा ने भारत बायोटेक के मालूर केंद्र और हैदराबाद में कोवैक्सिन के उत्पादन को बढ़ाने के लिए वनिर्माण सुविधाओं के विस्तार को लेकर भी सहायता की। DBT के सचिव डॉ. राजेश गोखले ने कहा है कि मशन को वड सुरक्षा के तहत समर्थित चिकित्सीय परीक्षण स्थलों ने जायकोव-डी, कोवोवैक्स, जेमकोवैक-19, कॉर्बोवैक्स, कोवैक्सिन बूस्टर, आरबीसीजी (सीरम इंस्टीट्यूट) और जेएंडजे के को वड टीकों के चिकित्सीय परीक्षणों की सुविधा प्रदान की है। लगभग 1.5 लाख लोगों के एक इलेक्ट्रॉनिक स्वयंसेवी डेटाबेस को भी तैयार किया गया है।

इंडिया साइंस वायर से साभार



दो वर्षों में भारत ने वक सत कए चार स्वदेशी को वड- **19** टीके

01/02/2023 [V3news India](#)



नई दिल्ली, 01 फ़रवरी (इं डया साइंस वायर): भारत के वैज्ञानिकों को दो वर्षों के कालखंड में को वड-19 के चार स्वदेशी टीके वक सत करने में सफलता मली है। इनमें, वश्व का पहला व भारत का स्वदेशी रूप से वक सत डीएनए टीका - जायकोव-डी, भारत का पहला प्रोटीन सबयूनिट टीका- कॉर्बेवैक्स, वश्व का पहला एवं भारत का स्वदेशी रूप से वक सत एमआरएनए टीका - जेमकोवैक-19 और वश्व का पहला तथा भारत में स्वदेशी रूप से वक सत इंट्रानेजल (नाक के माध्यम से) को वड-19 टीका - इन्कोवैक शा मल है।

यह जानकारी प्रदान करते हुए केंद्रीय वज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सक्षम मार्गदर्शन और नेतृत्व में जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) ने 'मशन को वड सुरक्षा' के माध्यम से चार टीके वतरित किए हैं, और कोवैक्सिन के निर्माण को बढ़ाने की पहल की है। इन टीकों को व भन्न पक्षों के सहयोग से वक सत किया गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि व वष्य में टीकों के सुचारु विकास के लिए डीबीटी ने जरूरी बुनियादी ढाँचे का निर्माण किया है, जिससे महामारी की स्थिति का सामना करने में मदद मलेगी।

भारत बायोटेक द्वारा निर्मित इंटरनेजल को वड-19 टीका - इन्कोवैक को हाल में लॉन्च किया गया है। इस इंटरनेजल टीके की खुराक बूँदों के रूप में नाक के माध्यम से दी जाती है। यह ऊतकों में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह टीका श्वसानली के ऊपरी हिस्से में अतिरिक्त प्रतिरक्षा प्रदान कर सकते हैं, जहाँ से होकर को वड वायरस आमतौर पर शरीर में प्रवेश करता है। इंटरनेजल को वड टीके को औपचारिक रूप से जारी किए जाने के बाद मंत्री ने जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सचिव श्री राजेश गोखले और विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक की।

इस बैठक के बाद उन्होंने कहा कि इस मशन के तहत टीके के विकास के साथ-साथ व भन्न को वड-19 टीका विकास गति व ध्यों के लिए वशेषज्ञ वैज्ञानिक और तकनीकी निरीक्षण व निगरानी के लिए वतीय सहायता प्रदान की गई थी। डॉ जितेंद्र सिंह ने रेखांकित किया है कि महामारी संकट को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने को वड-19 टीके के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और इसके इसके अनुरूप भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत 3.0 पैकेज के तहत कुल 900 रुपये की लागत से मशन को वड सुरक्षा की घोषणा की थी। मंत्री ने कहा कि इसका उद्देश्य त्वरित तरीके से सुरक्षित, प्रभावी, सस्ते और स्वदेशी को वड-19 टीकों के विकास को सक्षम बनाना है।

डॉ जितेंद्र सिंह ने जोर दिया कि मशन को वड सुरक्षा ने भारत बायोटेक के मालूर केंद्र और हैदराबाद स्थित इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स ल मटेड में कोवैक्सिन के उत्पादन को बढ़ाने के लिए वनिर्माण सुवधाओं के वस्तार को लेकर भी सहायता की। वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वक्तव्य में यह जानकारी प्रदान की गई है। डॉ सिंह ने बताया कि बिना देरी किए टीका वतरण के लिए मशन को वड सुरक्षा को एक मजबूत सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल की जरूरत है।

उन्होंने कहा क इस तरह के मॉडल को वक सत करने और वैज्ञानिक समुदाय के साथ काम करने सहित टीका निर्माताओं को कम समय में टीके के निर्माण, जिसकी हमारे देश और वैश्विक समुदाय को भी जरूरत थी, के लए डीबीटी के पास आवश्यक क्षमता और बुनियादी ढाँचा उपलब्ध है। केंद्रीय मंत्री ने कहा क टीका अनुसंधान और वकास में तीन दशक से अ धक के अनुभव के साथ डीबीटी के पास पहले से ही अपने स्वायत्त संस्थानों और एक उद्योग-अकाद मक इंटरफेस एजेंसी -जैव प्रौद्यो गकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बाइरैक) के माध्यम से त्वरित टीका वकास के लए बुनियादी वैज्ञानिक क्षमता है।

इसे देखते हुए ही बाइरैक के माध्यम से इस मशन के कार्यान्वयन का नेतृत्व डीबीटी को सौंपा गया। डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा क को वड-19 महामारी ने संक्रमण के प्रबंधन और इसे रोकने के मामले में वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय के सामने गंभीर चुनौतियां उत्पन्न की हैं। वहीं, अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने वैश्विक स्तर पर बेहतर नेतृत्व करने और महामारी के प्रबंधन की सोच के लए भारत सरकार की प्रशंसा की है। डीबीटी के सचव डॉ राजेश गोखले ने कहा है क 'मशन को वड सुरक्षा' के तहत सम र्थत च कत्सीय परीक्षण स्थलों ने जायकोव-डी, कोवोवैक्स, जेमकोवैक-19, कॉर्बोवैक्स, कोवैक्सिन बूस्टर, आरबीसीजी (सीरम इंस्टीट्यूट) और जेएंडजे के को वड टीकों के च कत्सीय परीक्षणों की सु वधा प्रदान की है।

लगभग 1.5 लाख लोगों के एक इलेक्ट्रॉनिक स्वयंसेवी डेटाबेस को भी तैयार कया गया है। डीबीटी के अधीन स्वायत्त संस्थानों जैसे क एनिमल चैलेंज केंद्र और प्रतिरक्षा प्रयोगशालाओं ने टीका निर्माताओं को महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की हैं। नई दिल्ली स्थित डीबीटी से सम्बद्ध एक अन्य संस्थान - राष्ट्रीय प्रतिरक्षा वज्ञान संस्थान (एनआईआई) ने इन्कोवैक चरण-III के च कत्सीय नैदानिक परीक्षणों के लए इम्यूनोजेने सटी (प्रतिरक्षाजनकता) परीक्षण सेवाएं प्रदान की हैं।

हरियाणा के फरीदाबाद में स्थित डीबीटी से सम्बद्ध संस्थान ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य वज्ञान और प्रौद्यो गकी संस्थान (टीएचएसटीआई) ने जायकोव-डी और कॉर्बोवैक्स के लए हैम्स्टर मॉडल और न्यूट्रलाइजेशन परीक्षण की पेशकश की है। उल्लेखनीय है क टीएचएसटीआई जैव परीक्षण प्रयोगशाला को महामारी संबंधी तैयारियों से जुड़े नवाचारों के लए वैश्विक गठबंधन (सीईपीआई) नेटवर्क की सात प्रयोगशालाओं में से एक के रूप में मान्यता दी गई है।





नवयुग संदेश

दो वर्षों में भारत ने वक सत कए चार स्वदेशी को वड-19 टीके

By Navyug Sandesh -31/01/2023



नई दिल्ली, 31 जनवरी (इंडिया साइंस वायर): भारत के वैज्ञानिकों को दो वर्षों के कालखंड में को वड-19 के चार स्वदेशी टीके वक सत करने में सफलता मली है। इनमें, वश्व का पहला व भारत का स्वदेशी रूप से वक सत डीएनए टीका - जायकोव-डी, भारत का पहला प्रोटीन सबयूनिट टीका- कॉर्बेवैक्स, वश्व का पहला एवं भारत का स्वदेशी रूप से वक सत एमआरएनए टीका - जेमकोवैक-19 और वश्व का पहला तथा भारत में स्वदेशी रूप से वक सत इंटरानेजल (नाक के माध्यम से) को वड-19 टीका - इन्कोवैक शा मल है।

यह जानकारी प्रदान करते हुए केंद्रीय वज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सक्षम मार्गदर्शन और नेतृत्व में जैव

प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) ने 'मशन को वड सुरक्षा' के माध्यम से चार टीके वितरित किए हैं, और कोवैक्सिन के निर्माण को बढ़ाने की पहल की है। इन टीकों को व भन्न पक्षों के सहयोग से वक सत किया गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा क भ वष्य में टीकों के सुचारु विकास के लए डीबीटी ने जरूरी बुनियादी ढाँचे का निर्माण किया है, जिससे महामारी की स्थिति का सामना करने में मदद मलेगी। भारत बायोटेक द्वारा निर्मत इंटरनेजल को वड-19 टीका - इन्कोवैक को हाल में लॉन्च किया गया है। इस इंटरनेजल टीके की खुराक बूँदों के रूप में नाक के माध्यम से दी जाती है। यह ऊतकों में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करता है। वैज्ञानिकों का कहना है क यह टीका श्वसानली के ऊपरी हिस्से में अतिरिक्त प्रतिरक्षा प्रदान कर सकते हैं, जहाँ से होकर को वड वायरस आमतौर पर शरीर में प्रवेश करता है।

इंटरनेजल को वड टीके को औपचारिक रूप से जारी किए जाने के बाद मंत्री ने जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सचिव श्री राजेश गोखले और विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक की। इस बैठक के बाद उन्होंने कहा क इस मशन के तहत टीके के विकास के साथ-साथ व भन्न को वड-19 टीका विकास गति व धर्यों के लए विशेषज्ञ वैज्ञानिक और तकनीकी निरीक्षण व निगरानी के लए वतीय सहायता प्रदान की गई थी। डॉ जितेंद्र सिंह ने रेखांकित किया है क महामारी संकट को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने को वड-19 टीके के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और इसके इसके अनुरूप भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत 3.0 पैकेज के तहत कुल 900 रुपये की लागत से "मशन को वड सुरक्षा" की घोषणा की थी। मंत्री ने कहा क इसका उद्देश्य त्वरित तरीके से सुरक्षित, प्रभावी, सस्ते और स्वदेशी को वड-19 टीकों के विकास को सक्षम बनाना है।

डॉ जितेंद्र सिंह ने जोर दिया क "मशन को वड सुरक्षा" ने भारत बायोटेक के मालूर केंद्र और हैदराबाद स्थित इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स ल मटेड में कोवैक्सिन के उत्पादन को बढ़ाने के लए वनिर्माण सुवधाओं के वस्तार को लेकर भी सहायता की। वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वक्तव्य में यह जानकारी प्रदान की गई है। डॉ सिंह ने बताया क बिना देरी किए टीका वतरण के लए "मशन को वड सुरक्षा" को एक मजबूत सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल की जरूरत है। उन्होंने कहा क इस तरह के मॉडल को वक सत करने और वैज्ञानिक समुदाय के साथ काम करने सहित टीका निर्माताओं को कम समय में टीके के निर्माण, जिसकी हमारे देश और वैश्विक समुदाय को भी जरूरत थी, के लए डीबीटी के पास आवश्यक क्षमता और बुनियादी ढाँचा उपलब्ध है।



केंद्रीय मंत्री ने कहा क टीका अनुसंधान और वकास में तीन दशक से अ धक के अनुभव के साथ डीबीटी के पास पहले से ही अपने स्वायत्त संस्थानों और एक उद्योग-अकाद मक इंटरफेस एजेंसी - जैव प्रौद्यो गकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बाइरैक) के माध्यम से त्वरित टीका वकास के लए बुनियादी वैज्ञानिक क्षमता है। इसे देखते हुए ही बाइरैक के माध्यम से इस मशन के कार्यान्वयन का नेतृत्व डीबीटी को सौंपा गया। डॉ जितेंद्र संह ने कहा क को वड-19 महामारी ने संक्रमण के प्रबंधन और इसे रोकने के मामले में वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय के सामने गंभीर चुनौतियां उत्पन्न की हैं। वहीं, अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने वैश्विक स्तर पर बेहतर नेतृत्व करने और महामारी के प्रबंधन की सोच के लए भारत सरकार की प्रशंसा की है।

डीबीटी के सचव डॉ राजेश गोखले ने कहा है क 'मशन को वड सुरक्षा' के तहत सम र्थत च कत्सीय परीक्षण स्थलों ने जायकोव-डी, कोवोवैक्स, जेमकोवैक-19, कॉर्बोवैक्स, कोवैक्सिन बूस्टर, आरबीसीजी (सीरम इंस्टीट्यूट) और जेएंडजे के को वड टीकों के च कत्सीय परीक्षणों की सु वधा प्रदान की है। लगभग 1.5 लाख लोगों के एक इलेक्ट्रॉनिक स्वयंसेवी डेटाबेस को भी तैयार कया गया है।

डीबीटी के अधीन स्वायत्त संस्थानों जैसे क एनिमल चैलेंज केंद्र और प्रतिरक्षा प्रयोगशालाओं ने टीका निर्माताओं को महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की हैं। नई दिल्ली स्थित डीबीटी से सम्बद्ध एक अन्य संस्थान - राष्ट्रीय प्रतिरक्षा वज्ञान संस्थान (एनआईआई) ने इन्कोवैक चरण- III के च कत्सीय नैदानिक परीक्षणों के लए इम्यूनोजेने सटी (प्रतिरक्षाजनकता) परीक्षण सेवाएं प्रदान की हैं।

हरियाणा के फरीदाबाद में स्थित डीबीटी से सम्बद्ध संस्थान ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य वज्ञान और प्रौद्यो गकी संस्थान (टीएचएसटीआई) ने जायकोव-डी और कॉर्बोवैक्स के लए हैम्स्टर मॉडल और न्यूट्रलाइजेशन परीक्षण की पेशकश की है। उल्लेखनीय है क टीएचएसटीआई जैव परीक्षण प्रयोगशाला को महामारी संबंधी तैयारियों से जुड़े नवाचारों के लए वैश्विक गठबंधन (सीईपीआई) नेटवर्क की सात प्रयोगशालाओं में से एक के रूप में मान्यता दी गई है।

(इं डया साइंस वायर)



नई दिल्ली। दो वर्षों में भारत ने वक सत कए चार स्वदेशी को वड-19 टीके।

News जनवरी 31, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

नई दिल्ली। (इंडिया साइंस वायर): भारत के वैज्ञानिकों को दो वर्षों के कालखंड में को वड-19 के चार स्वदेशी टीके वक सत करने में सफलता मली है। इनमें, वश्व का पहला व भारत का स्वदेशी रूप से वक सत डीएनए टीका - जायकोव-डी, भारत का पहला प्रोटीन सबयूनिट टीका - कॉर्बेवैक्स, वश्व का पहला एवं भारत का स्वदेशी रूप से वक सत एमआरएनए टीका - जेमकोवैक-19 और वश्व का पहला तथा भारत में स्वदेशी रूप से वक सत इंटरनेजल (नाक के माध्यम से) को वड-19 टीका - इन्कोवैक शा मल है।

यह जानकारी प्रदान करते हुए केंद्रीय वज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सक्षम मार्गदर्शन और नेतृत्व में जैव प्रौद्योगिकी वभाग (डीबीटी) ने 'मशन को वड सुरक्षा' के माध्यम से चार टीके वतरित कए हैं, और कोवैक्सिन के निर्माण को बढ़ाने की पहल की है। इन टीकों को व भन्न पक्षों के सहयोग से वक सत कया गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा क भ वष्य में टीकों के सुचारु वकास के लए डीबीटी ने जरूरी बुनियादी ढाँचे का निर्माण कया है, जिससे महामारी की स्थिति का सामना करने में मदद मलेगी।





भारत बायोटेक द्वारा निर्मित इंट्रानेजल कोवड-19 टीका - इन्कोवैक को हाल में लॉन्च किया गया है। इस इंट्रानेजल टीके की खुराक बूंदों के रूप में नाक के माध्यम से दी जाती है। यह ऊतकों में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह टीका श्वसनली के ऊपरी हिस्से में अतिरिक्त प्रतिरक्षा प्रदान कर सकते हैं, जहाँ से होकर कोवड वायरस आमतौर पर शरीर में प्रवेश करता है।

इंट्रानेजल कोवड टीके को औपचारिक रूप से जारी किए जाने के बाद मंत्री ने जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सचिव श्री राजेश गोखले और विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक की। इस बैठक के बाद उन्होंने कहा कि इस मशन के तहत टीके के विकास के साथ-साथ विभिन्न कोवड-19 टीका विकास गतिविधियों के लिए विशेषज्ञ वैज्ञानिक और तकनीकी निरीक्षण व निगरानी के लिए वृत्तीय सहायता प्रदान की गई थी।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने रेखांकित किया है कि महामारी संकट को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने कोवड-19 टीके के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और इसके अनुरूप भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत 3.0 पैकेज के तहत कुल 900 रुपये की लागत से "मशन कोवड सुरक्षा" की घोषणा की थी। मंत्री ने कहा कि इसका उद्देश्य त्वरित तरीके से सुरक्षित, प्रभावी, सस्ते और स्वदेशी कोवड-19 टीकों के विकास को सक्षम बनाना है।

डॉ जितेंद्र सिंह ने जोर दिया क "मशन को वड सुरक्षा" ने भारत बायोटेक के मालूर केंद्र और हैदराबाद स्थित इं डयन इम्यूनोलॉजिकल्स ल मटेड में कोवैक्सिन के उत्पादन को बढ़ाने के लए वनिर्माण सु वधाओं के वस्तार को लेकर भी सहायता की। वज्ञान और प्रौद्यो गकी मंत्रालय के वक्तव्य में यह जानकारी प्रदान की गई है।

डॉ सिंह ने बताया क बिना देरी कए टीका वतरण के लए "मशन को वड सुरक्षा" को एक मजबूत सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल की जरूरत है। उन्होंने कहा क इस तरह के मॉडल को वक सत करने और वैज्ञानिक समुदाय के साथ काम करने सहित टीका निर्माताओं को कम समय में टीके के निर्माण, जिसकी हमारे देश और वैश्विक समुदाय को भी जरूरत थी, के लए डीबीटी के पास आवश्यक क्षमता और बुनियादी ढाँचा उपलब्ध है।

केंद्रीय मंत्री ने कहा क टीका अनुसंधान और वकास में तीन दशक से अ धक के अनुभव के साथ डीबीटी के पास पहले से ही अपने स्वायत्त संस्थानों और एक उद्योग-अकाद मक इंटरफेस एजेंसी - जैव प्रौद्यो गकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बाइरैक) के माध्यम से त्वरित टीका वकास के लए बुनियादी वैज्ञानिक क्षमता है। इसे देखते हुए ही बाइरैक के माध्यम से इस मशन के कार्यान्वयन का नेतृत्व डीबीटी को सौंपा गया।

डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा क को वड-19 महामारी ने संक्रमण के प्रबंधन और इसे रोकने के मामले में वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय के सामने गंभीर चुनौतियां उत्पन्न की हैं। वहीं, अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने वैश्विक स्तर पर बेहतर नेतृत्व करने और महामारी के प्रबंधन की सोच के लए भारत सरकार की प्रशंसा की है।

डीबीटी के स चव डॉ राजेश गोखले ने कहा है क 'मशन को वड सुरक्षा' के तहत सम र्थत च कत्सीय परीक्षण स्थलों ने जायकोव-डी, कोवोवैक्स, जेमकोवैक-19, कॉर्बोवैक्स, कोवैक्सिन बूस्टर, आरबीसीजी (सीरम इंस्टीट्यूट) और जेएंडजे के को वड टीकों के च कत्सीय परीक्षणों की सु वधा प्रदान की है। लगभग 1.5 लाख लोगों के एक इलेक्ट्रॉनिक स्वयंसेवी डेटाबेस को भी तैयार कया गया है।

डीबीटी के अधीन स्वायत्त संस्थानों जैसे क एनिमल चैलेंज केंद्र और प्रतिरक्षा प्रयोगशालाओं ने टीका निर्माताओं को महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की हैं। नई दिल्ली स्थित डीबीटी से सम्बद्ध एक अन्य संस्थान - राष्ट्रीय प्रतिरक्षा वज्ञान संस्थान (एनआईआई) ने इन्कोवैक चरण- III के च कत्सीय नैदानिक परीक्षणों के लए इम्यूनोजेने सटी (प्रतिरक्षाजनकता) परीक्षण सेवाएं प्रदान की हैं।



हरियाणा के फरीदाबाद में स्थित डीबीटी से सम्बद्ध संस्थान ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य वज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (टीएचएसटीआई) ने जायकोव-डी और कॉर्बोवैक्स के लिए हैम्स्टर मॉडल और न्यूट्रलाइजेशन परीक्षण की पेशकश की है। उल्लेखनीय है कि टीएचएसटीआई जैव परीक्षण प्रयोगशाला को महामारी संबंधी तैयारियों से जुड़े नवाचारों के लिए वैश्विक गठबंधन (सीईपीआई) नेटवर्क की सात प्रयोगशालाओं में से एक के रूप में मान्यता दी गई है।

(इं डया साइंस वायर)



दो वर्षों में भारत ने वक सत कए चार स्वदेशी को वड-19 टीके

Admin Posted on: 2023-02-02 11:53:00 Viewer: 62 Comments: 0 Country: India City: Singrauli



Singrauli Mirror News: भारत के वैज्ञानिकों को दो वर्षों के कालखंड में को वड-19 के चार स्वदेशी टीके वक सत करने में सफलता मली है। इनमें, वश्व का पहला व भारत का स्वदेशी रूप से वक सत डीएनए टीका - जायकोव-डी, भारत का पहला प्रोटीन सबयूनिट टीका- कॉर्बेवैक्स, वश्व का पहला एवं भारत का स्वदेशी रूप से वक सत एमआरएनए टीका - जेमकोवैक-19 और वश्व का पहला तथा भारत में स्वदेशी रूप से वक सत इंट्रानेजल (नाक के माध्यम से) को वड-19 टीका - इन्कोवैक शामिल है। यह जानकारी प्रदान करते हुए केंद्रीय वज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा है क प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सक्षम मार्गदर्शन और नेतृत्व में जैव

प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) ने 'मशन को वड सुरक्षा' के माध्यम से चार टीके वतरित किए हैं, और कोवैक्सिन के निर्माण को बढ़ाने की पहल की है। इन टीकों को व भन्न पक्षों के सहयोग से वक सत किया गया है। केंद्रीय मंत्री ने कहा क भ वष्य में टीकों के सुचारु विकास के लिए डीबीटी ने जरूरी बुनियादी ढाँचे का निर्माण किया है, जिससे महामारी की स्थिति का सामना करने में मदद मलेगी।

भारत बायोटेक द्वारा निर्मित इंटरनेजल को वड-19 टीका - इन्कोवैक को हाल में लॉन्च किया गया है। इस इंटरनेजल टीके की खुराक बूँदों के रूप में नाक के माध्यम से दी जाती है। यह ऊतकों में प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को उत्तेजित करता है। वैज्ञानिकों का कहना है क यह टीका श्वसानली के ऊपरी हिस्से में अतिरिक्त प्रतिरक्षा प्रदान कर सकते हैं, जहाँ से होकर को वड वायरस आमतौर पर शरीर में प्रवेश करता है। इंटरनेजल को वड टीके को औपचारिक रूप से जारी किए जाने के बाद मंत्री ने जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सचिव श्री राजेश गोखले और विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक की। इस बैठक के बाद उन्होंने कहा क इस मशन के तहत टीके के विकास के साथ-साथ व भन्न को वड-19 टीका विकास गति व धियों के लिए वशेषज्ञ वैज्ञानिक और तकनीकी निरीक्षण व निगरानी के लिए वतीय सहायता प्रदान की गई थी। डॉ जितेंद्र सिंह ने रेखांकित किया है क महामारी संकट को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने को वड-19 टीके के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और इसके इसके अनुरूप भारत सरकार ने आत्मनिर्भर भारत 3.0 पैकेज के तहत कुल 900 रुपये की लागत से "मशन को वड सुरक्षा" की घोषणा की थी। मंत्री ने कहा क इसका उद्देश्य त्वरित तरीके से सुरक्षित, प्रभावी, सस्ते और स्वदेशी को वड-19 टीकों के विकास को सक्षम बनाना है। डॉ जितेंद्र सिंह ने जोर दिया क "मशन को वड सुरक्षा" ने भारत बायोटेक के मालूर केंद्र और हैदराबाद स्थित इंडियन इम्यूनोलॉजिकल्स ल मटेड में कोवैक्सिन के उत्पादन को बढ़ाने के लिए वनिर्माण सुवधाओं के वस्तार को लेकर भी सहायता की। वज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के वक्तव्य में यह जानकारी प्रदान की गई है। डॉ सिंह ने बताया क बिना देरी किए टीका वतरण के लिए "मशन को वड सुरक्षा" को एक मजबूत सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) मॉडल की जरूरत है। उन्होंने कहा क इस तरह के मॉडल को वक सत करने और वैज्ञानिक समुदाय के साथ काम करने सहित टीका निर्माताओं को कम समय में टीके के निर्माण, जिसकी हमारे देश और वैश्विक समुदाय को भी जरूरत थी, के लिए डीबीटी के पास आवश्यक क्षमता और बुनियादी ढाँचा उपलब्ध है। केंद्रीय मंत्री ने कहा क टीका अनुसंधान और विकास में तीन दशक से अधिक के अनुभव के साथ डीबीटी के पास पहले से ही अपने स्वायत्त संस्थानों और एक उद्योग-अकादमिक इंटरफेस



एजेंसी - जैव प्रौद्योगिकी उद्योग अनुसंधान सहायता परिषद (बाइरैक) के माध्यम से त्वरित टीका विकास के लिए बुनियादी वैज्ञानिक क्षमता है। इसे देखते हुए ही बाइरैक के माध्यम से इस मशन के कार्यान्वयन का नेतृत्व डीबीटी को सौंपा गया। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि कोवड-19 महामारी ने संक्रमण के प्रबंधन और इसे रोकने के मामले में वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय के सामने गंभीर चुनौतियां उत्पन्न की हैं। वहीं, अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने वैश्विक स्तर पर बेहतर नेतृत्व करने और महामारी के प्रबंधन की सोच के लिए भारत सरकार की प्रशंसा की है। डीबीटी के सचिव डॉ. राजेश गोखले ने कहा है कि 'मशन कोवड सुरक्षा' के तहत समर्थित चकत्सीय परीक्षण स्थलों ने जायकोव-डी, कोवोवैक्स, जेमकोवैक-19, कॉर्बोवैक्स, कोवैक्सिन बूस्टर, आरबीसीजी (सीरम इंस्टीट्यूट) और जेएंडजे के कोवड टीकों के चकत्सीय परीक्षणों की सुविधा प्रदान की है। लगभग 1.5 लाख लोगों के एक इलेक्ट्रॉनिक स्वयंसेवी डेटाबेस को भी तैयार किया गया है। डीबीटी के अधीन स्वायत्त संस्थानों जैसे कि एनिमल चैलेंज केंद्र और प्रतिरक्षा प्रयोगशालाओं ने टीका निर्माताओं को महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की हैं। नई दिल्ली स्थित डीबीटी से सम्बद्ध एक अन्य संस्थान - राष्ट्रीय प्रतिरक्षा विज्ञान संस्थान (एनआईआई) ने इन्कोवैक चरण- III के चकत्सीय नैदानिक परीक्षणों के लिए इम्यूनोजेनेसिटी (प्रतिरक्षाजनकता) परीक्षण सेवाएं प्रदान की हैं। हरियाणा के फरीदाबाद में स्थित डीबीटी से सम्बद्ध संस्थान ट्रांसलेशनल स्वास्थ्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान (टीएचएसटीआई) ने जायकोव-डी और कॉर्बोवैक्स के लिए हैम्स्टर मॉडल और न्यूट्रलाइजेशन परीक्षण की पेशकश की है। उल्लेखनीय है कि टीएचएसटीआई जैव परीक्षण प्रयोगशाला को महामारी संबंधी तैयारियों से जुड़े नवाचारों के लिए वैश्विक गठबंधन (सीईपीआई) नेटवर्क की सात प्रयोगशालाओं में से एक के रूप में मान्यता दी गई है।



New Delhi: Biopolymer-based scaffold to treat limbal deficiency

News जनवरी 31, 2023

[Facebook](#) [Twitter](#) [Google+](#)

New Delhi: (India Science Wire): Limbal deficiency is a general terminology used for eye diseases characterised by the deterioration of limbus, limbal stem cells, and their capacity to refill the corneal epithelium by proliferation and differentiation. The consequences experienced by the patients include chronic pain and progressive blindness.

A team of researchers led by Prof. Ashwini Agrawal and Prof. Manjeet Jassal, SMITA (Smart and Innovative Textile Materials) Research Lab, Department of Textile & Fibre Engineering, IIT Delhi, in collaboration with the team from AIIMS Delhi, led by Prof. Radhika Tandon, Department of Ophthalmology, have developed a biopolymer-based scaffold, PCL, as a substitute to HAM (Human Amniotic Membrane) for patients with limbal deficiency.





Team of researchers

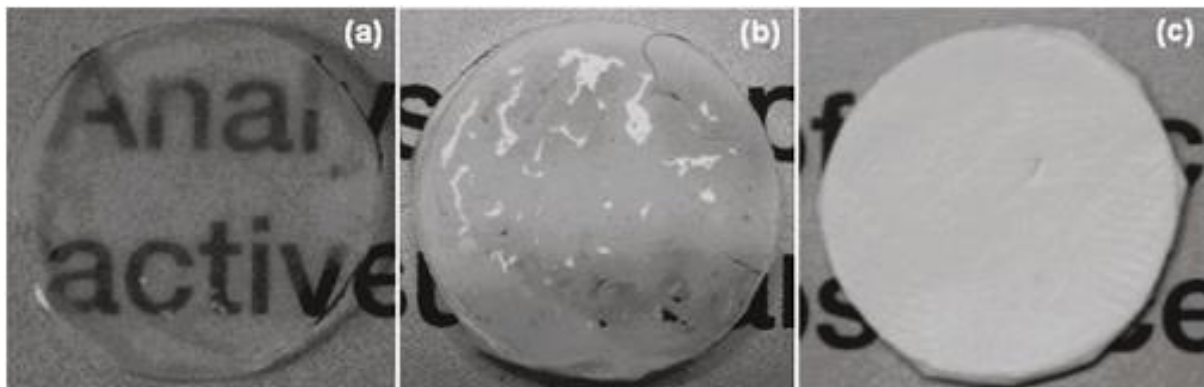
Human Amniotic Membrane (HAM) transplant is widely used to stimulate epithelial healing in damaged situations. Due to certain limitations in HAM, a cheaper non-biologic substrate was needed to help overcome the constraints. For this, many synthetic substrates have been explored. Polycaprolactone (PCL) has stood out as the best among them. It has a biodegradable aliphatic ester, established drug-delivery models, and is approved by the U.S. Food and Drug Administration. It is used as a bio-engineering scaffold or bone graft substitute.

Polycaprolactone (PCL) scaffolds prepared in IIT Delhi, and modified with plasma treatment, are found efficient. The surface engineering of PCL surface via plasma treatment increased the transparency and biocompatibility. The transparency of the plasma-treated PCL is tested through a water droplet test. The scaffold conversion from hydrophobic to hydrophilic post- plasma treatment providing better cell adhesion is another interesting attribute.



Initially, the scaffolds are prepared through an indigenously designed electrospinning setup. The product, electrospun nanofiber, is in the form of thin sheets called a “mat”, ready for plasma treatment. The nano-engineered PCL holds promise to be used as an artificial substrate for ocular surface healing compared to HAM as they require cryopreservation (freezing at a very low temperature), which is not available everywhere.

According to the researchers, the safety and efficacy tests of the plasma-treated PCL (pPCL) scaffolds have shown effective and better healing than HAM, considered the gold standard in scaffolds for tissue engineering.



transparency of PCL nanofiber membrane and HAM

Limbal epithelial cells (LEC) grown on PCL films showed similar characteristics to those cultured on the glass coverslips and HAM. Tests have confirmed that the plasma-treated poly- ϵ -caprolactone membrane is safe, biocompatible, and effective in the healing of corneal epithelial defects in rabbits. Pilot clinical trials on humans are underway at AIIMS, New Delhi.

Surface modification of electrospun PCL scaffolds by plasma discharge is an efficient method to make them optically transparent under wet conditions. These highly porous nanofibrous scaffolds with excellent architecture, biocompatibility, and transparency can mimic the natural extracellular matrix. They also assist in maintaining a normal LEC composition.



Consistent efforts and research in the field of tissue engineering will gradually pave a pathway for solving some of the critical health issues in our country and worldwide. It could also help in organ transplantation, one of the significant health challenges due to the increasing wait times.

(India Science Wire)

Biopolymer-based scaffold to treat limbal deficiency

According to the researchers, the safety and efficacy tests of the plasma-treated PCL (pPCL) scaffolds have shown effective and better healing than HAM

By **BioVoice News Desk** - February 1, 2023

New Delhi: Limbal deficiency is a general terminology used for eye diseases characterised by the deterioration of limbus, limbal stem cells, and their capacity to refill the corneal epithelium by proliferation and differentiation. The consequences experienced by the patients include chronic pain and progressive blindness. A team of researchers led by Prof. Ashwini Agrawal and Prof. Manjeet Jassal, SMITA (Smart and Innovative Textile Materials) Research Lab, Department of Textile & Fibre Engineering, IIT Delhi, in collaboration with the team from AIIMS Delhi, led by Prof. Radhika Tandon, Department of Ophthalmology, have developed a biopolymer-based scaffold, PCL, as a substitute to HAM (Human Amniotic Membrane) for patients with limbal deficiency. Human Amniotic Membrane (HAM) transplant is widely used to stimulate epithelial healing in damaged situations. Due to certain limitations in HAM, a cheaper non-biologic substrate was needed to help overcome the constraints. For this, many synthetic substrates have been explored. Polycaprolactone (PCL) has stood out as the best among them. It has a biodegradable aliphatic ester, established drug-delivery models, and is approved by the U.S. Food and Drug Administration. It is used as a bio-engineering scaffold or bone graft substitute.



Polycaprolactone (PCL) scaffolds prepared in IIT Delhi, and modified with plasma treatment, are found efficient. The surface engineering of PCL surface via plasma treatment increased the transparency and biocompatibility. The transparency of the plasma-treated PCL is tested through a water droplet test. The scaffold conversion from hydrophobic to hydrophilic post- plasma treatment providing better cell adhesion is another interesting attribute.

Initially, the scaffolds are prepared through an indigenously designed electrospinning setup. The product, electrospun nanofiber, is in the form of thin sheets called a “mat”, ready for plasma treatment. The nano-engineered PCL holds promise to be used as an artificial substrate for ocular surface healing compared to HAM as they require cryopreservation (freezing at a very low temperature), which is not available everywhere.



According to the researchers, the safety and efficacy tests of the plasma-treated PCL (pPCL) scaffolds have shown effective and better healing than HAM, considered the gold standard in scaffolds for tissue engineering.



Limbal epithelial cells (LEC) grown on PCL films showed similar characteristics to those cultured on the glass coverslips and HAM. Tests have confirmed that the plasma-treated poly- ϵ -caprolactone membrane is safe, biocompatible, and effective in the healing of corneal epithelial defects in rabbits. Pilot clinical trials on humans are underway at AIIMS, New Delhi.

Surface modification of electrospun PCL scaffolds by plasma discharge is an efficient method to make them optically transparent under wet conditions. These highly porous nanofibrous scaffolds with excellent architecture, biocompatibility, and transparency can mimic the natural extracellular matrix. They also assist in maintaining a normal LEC composition.

Consistent efforts and research in the field of tissue engineering will gradually pave a pathway for solving some of the critical health issues in our country and worldwide. It could also help in organ transplantation, one of the significant health challenges due to the increasing wait times.

(India Science Wire)



Biopolymer-based scaffold to treat limbal deficiency

Admin Posted on: 2023-02-02 11:53:00 Viewer: 90 Comments: 0 Country: India City: Singrauli



Limbal deficiency is a general terminology used for eye diseases characterised by the deterioration of limbus, limbal stem cells, and their capacity to refill the corneal epithelium by proliferation and differentiation.

The consequences experienced by the patients include chronic pain and progressive blindness.

A team of researchers led by Prof. Ashwini Agrawal and Prof. Manjeet Jassal, SMITA (Smart and Innovative Textile Materials) Research Lab, Department of Textile & Fibre Engineering, IIT Delhi, in collaboration with the team from AIIMS Delhi, led by Prof. Radhika Tandon, Department of Ophthalmology, have developed a biopolymer-based scaffold, PCL, as a substitute to HAM (Human Amniotic Membrane) for patients with limbal deficiency.



Human Amniotic Membrane (HAM) transplant is widely used to stimulate epithelial healing in damaged situations. Due to certain limitations in HAM, a cheaper non-biologic substrate was needed to help overcome the constraints. For this, many synthetic substrates have been explored.

Polycaprolactone (PCL) has stood out as the best among them. It has a biodegradable aliphatic ester, established drug-delivery models, and is approved by the U.S. Food and Drug Administration. It is used as a bio-engineering scaffold or bone graft substitute. Polycaprolactone (PCL) scaffolds prepared in IIT Delhi, and modified with plasma treatment, are found efficient. The surface engineering of PCL surface via plasma treatment increased the transparency and biocompatibility.

The transparency of the plasma-treated PCL is tested through a water droplet test. The scaffold conversion from hydrophobic to hydrophilic post-plasma treatment providing better cell adhesion is another interesting attribute. Initially, the scaffolds are prepared through an indigenously designed electrospinning setup. The product, electrospun nanofiber, is in the form of thin sheets called a “mat”, ready for plasma treatment.

The nano-engineered PCL holds promise to be used as an artificial substrate for ocular surface healing compared to HAM as they require cryopreservation (freezing at a very low temperature), which is not available everywhere. According to the researchers, the safety and efficacy tests of the plasma-treated PCL (pPCL) scaffolds have shown effective and better healing than HAM, considered the gold standard in scaffolds for tissue engineering. Limbal epithelial cells (LEC) grown on PCL films showed similar characteristics to those cultured on the glass coverslips and HAM. Tests have confirmed that the plasma-treated poly- ϵ -caprolactone membrane is safe, biocompatible, and effective in the healing of corneal epithelial defects in rabbits. Pilot clinical trials on humans are underway at AIIMS, New Delhi. Surface modification of electrospun PCL scaffolds by plasma discharge is an efficient method to make them optically transparent under wet conditions. These



highly porous nanofibrous scaffolds with excellent architecture, biocompatibility, and transparency can mimic the natural extracellular matrix. They also assist in maintaining a normal LEC composition. Consistent efforts and research in the field of tissue engineering will gradually pave a pathway for solving some of the critical health issues in our country and worldwide. It could also help in organ transplantation, one of the significant health challenges due to the increasing wait times.



Biopolymer-based scaffold to treat limbal deficiency

SCIENCE

By Online Editor On Feb 1, 2023



New Delhi, Jan 31st (India Science Wire): Limbal deficiency is a general terminology used for eye diseases characterised by the deterioration of limbus, limbal stem cells, and their capacity to refill the corneal epithelium by proliferation and differentiation. The consequences experienced by the patients include chronic pain and progressive blindness.

A team of researchers led by Prof. Ashwini Agrawal and Prof. Manjeet Jassal, SMITA (Smart and Innovative Textile Materials) Research Lab, Department of Textile & Fibre Engineering, IIT Delhi, in collaboration with the team from



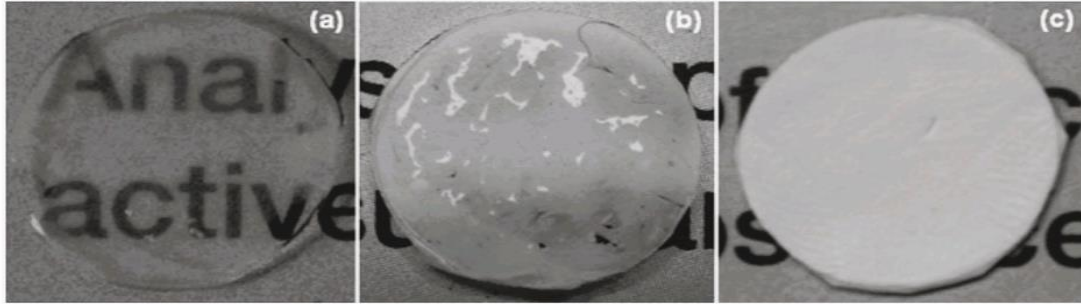
AIIMS Delhi, led by Prof. Radhika Tandon, Department of Ophthalmology, have developed a biopolymer-based scaffold, PCL, as a substitute to HAM (Human Amniotic Membrane) for patients with limbal deficiency.

Human Amniotic Membrane (HAM) transplant is widely used to stimulate epithelial healing in damaged situations. Due to certain limitations in HAM, a cheaper non-biologic substrate was needed to help overcome the constraints. For this, many synthetic substrates have been explored. Polycaprolactone (PCL) has stood out as the best among them. It has a biodegradable aliphatic ester, established drug-delivery models, and is approved by the U.S. Food and Drug Administration. It is used as a bio-engineering scaffold or bone graft substitute.

Polycaprolactone (PCL) scaffolds prepared in IIT Delhi, and modified with plasma treatment, are found efficient. The surface engineering of PCL surface via plasma treatment increased the transparency and biocompatibility. The transparency of the plasma-treated PCL is tested through a water droplet test. The scaffold conversion from hydrophobic to hydrophilic post- plasma treatment providing better cell adhesion is another interesting attribute.

Initially, the scaffolds are prepared through an indigenously designed electrospinning setup. The product, electrospun nanofiber, is in the form of thin sheets called a “mat”, ready for plasma treatment. The nano-engineered PCL holds promise to be used as an artificial substrate for ocular surface healing compared to HAM as they require cryopreservation (freezing at a very low temperature), which is not available everywhere.





Optical transparency of PCL nanofiber membrane and HAM

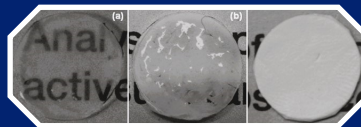
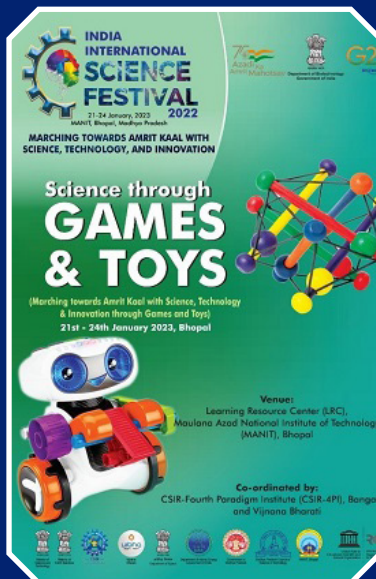
According to the researchers, the safety and efficacy tests of the plasma-treated PCL (pPCL) scaffolds have shown effective and better healing than HAM, considered the gold standard in scaffolds for tissue engineering.

Limbal epithelial cells (LEC) grown on PCL films showed similar characteristics to those cultured on the glass coverslips and HAM. Tests have confirmed that the plasma-treated poly- ϵ -caprolactone membrane is safe, biocompatible, and effective in the healing of corneal epithelial defects in rabbits. Pilot clinical trials on humans are underway at AIIMS, New Delhi.

Surface modification of electrospun PCL scaffolds by plasma discharge is an efficient method to make them optically transparent under wet conditions. These highly porous nanofibrous scaffolds with excellent architecture, biocompatibility, and transparency can mimic the natural extracellular matrix. They also assist in maintaining a normal LEC composition.

Consistent efforts and research in the field of tissue engineering will gradually pave a pathway for solving some of the critical health issues in our country and worldwide. It could also help in organ transplantation, one of the significant health challenges due to the increasing wait times. (India Science Wire)





VIGYAN PRASAR

An autonomous organization of Department of Science and Technology,
Govt. of India. 1st Floor AI Complex, Technology Bhawan,
New Mehrauli Road, New Delhi-110016